जलते दीप-ढलती रात

[सामाजिक उपन्यास]

श्री अभय कुमार "यौधेय"

दास ब्रदर्स

अम्बाला छावनी

प्रकाशक :
श्री० पी० सी० कपूर
दास ब्रदर्स
अम्बाला छावनी ।

मूल्य २.५० न० पै०

प्रिंटर्स :
श्री प्रेम सिंह सचदेव
मालक आफताब आलम प्रेस
अम्बाला शहर ।

JALTE DEEP—DHALTI RAAT

by : A. K. YAUDHEYA.

भूमिका

अंग्रेज़ चले गये राज्य छोड़ कर, किन्तु उनकी संस्कृति, भाषा, रहन-सहन खान-पान का ढंग अभी तक प्रायः भारत-वासियों के जन-जीवन में घुल-मिल रहा है।

संस्कृति कोई भी बुरी नहीं होती; सभ्यता प्रत्येक देश के अलग अलग मनोनीत सिद्धान्तों के आधार पर टिकती है। इसी के बल पर राष्ट्र और जातियाँ आगे बढ़ती हैं या पीछे हटती हैं। जिन तरीकों से अंग्रेजी सत्ता ने हमारे दिल और दिमाग़ पर साम, दाम, दण्ड या भेद नीति से अधिकार प्राप्त किया, वह निःसन्देह हमें इस योग्य बना गये, कि सहस्रों वर्षों तक हम अपने अस्तित्व को भूल कर दूसरों की बोली बोलें, दूसरों की तरह खाएँ, पहने और रहें, सहें।

आचार्य चाणक्य के इस देश को इन्हीं तरीकों से अंग्रेज़ों ने अपने बुद्धि बल से पराजित किया, लताड़ा और गुलाम बनाया। हमारे जीवन में निम्न कोटि की रसिकता घुसेड़ दी। हम प्रमादी और आराम-तलब हो गए। हमारी बहू-बेटियों को घरों से खींच कर सोसाइटी गर्ल्ज़ का रूप ग्रहण करने के लिए मजबूर कर दिया। सत्रहवीं शताब्दी में सम्राट अकबर ने संगठित आर्य शक्ति को तितर-बितर करने के लिए कुछ ऐसे ही टेढ़े-मेढ़े रास्तों को अपनाया था, किन्तु उसकी इस कूट नीति को समझने वाले महाराणा जैसे मनस्वी उस समय मौजूद थे। नवरोज़ के मेले में राणा शक्तसिंह की पुत्री और कवि पृथ्वी-राज की पत्नी रानी किरणवती ने अकबर की छाती पर पांव रख कर अपनी राजस्थानी कटार के बल पर उसकी आंखों में अंगुलियां देकर दिखाया था कि देख, आर्य-हिन्दू-जाति सभी की सभी मूर्ख नहीं, जो तेरी जूटी पत्तल चाट लें और अपने देश वा धर्म को जलांजलि दे दें!

किन्तु ऐसी जागृत आत्माएं या तो अंग्रेजों के दमन चक्र में आ कर कुचली गई या उनकी बाहरी चमक से भरमा गईं। आज भी इस समय उसका प्रभाव स्पष्ट दीख रहा है।

भारतीय आकाश पर छाया हुआ निविड़ अन्धकार एक न एक दिन हमारे अपने ही प्रयत्नों से निश्चित छंटेगा। काली रात ढल चुकी है और उससे संघर्ष करने वाले दीप हमारी आशाएँ परवान चढ़ाने के लिए अब भी जल रहे हैं जगमगा रहे हैं।

—अभय कुमार 'यौधेय'

—o—

१

नई दिल्ली सफ़दरजंग रोड़ पर मिस्टर जी० एन० कोस का सर्वांग सुन्दर बंगला है। मिस्टर कोस जाति से क्षत्रिय ठाकुर हैं। उनके पिता ठाकुर जसवन्त राय कोशल जवलपुर के रहने वाले थे। स्वभाव से भीतर-वाहर पूर्ण हिन्दू थे। या यूं कहिए कि एक पवित्र भारतीय नागरिक थे जो बीते हुए ठाकुर वंश की महानता और गौरव की याद दिलाते थे।

उनका एक मात्र पुत्र जगन्नाथ जब सात वर्ष का था तो उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया।

विधुर हो जाने पर ठाकुर जसवन्त राय घर में रह कर संन्यासी बन गए। सांसारिक मोह के सब तार तोड़ कर स्वतन्त्र हो गये। उनके दूर के एक भाई इङ्गलैण्ड रहते थे। उन्होंने जब इनके विधुर होने का समाचार पाया तो हवाई जहाज़ द्वारा मातम पुरसी के लिए आए। विलायती ठाट के आदमी थे। ठाकुर साहिब के हिन्दू संस्कार युक्त घर के वातावरण में चार दिन रह कर ही उन्हें अजीर्ण का अनुभव होने लगा। जगन्नाथ की ओर देख कर बोले, "ठाकुर भैया! तुमने जैसे तैसे पुरानी-लकीर पीटते हुए अपनी जिंदगी गुज़ार ली, अब कृपा करके जगन्नाथ को तो हिन्दुस्तानी बैल मत बनाओ। कैसा ढीला ढाला लिवास, ढीली-ढाली बोल चाल। एकदम होपलैस। नहीं-नहीं भाई साहब! इस की जिन्दगी तवाह मत करो। मेरे साथ इङ्गलैंड भेज दो।"

ठाकुर साहब ने अपने धर्म-भीरू स्वभाव के कारण भयभीत हो कर कहा "वह तो एकदम म्लेच्छ देश है। न आचार न विचार। औरतें बाजारों में अधनंगी चलती फिरती हैं। न ढंग, न संस्कार और शिक्षा-दीक्षा तो एक दम विपरीत है। न भैया, इसे यहीं रहने दो।"

बालक जगन्नाथ चाचा के साथ जाने के लिए मचल उठा; बोला, "चाचा ! मैं ज़रूर जाऊंगा। मुझे वह देश देखने का बहुत शौक है।" पिता ने बहुत समझाया किन्तु लड़के पर चाचा का रंग इस तरह चढ़ गया कि नितान्त अनिच्छा होने पर भी उसे स्वीकृति दे दी।

इङ्गलैण्ड के खुले वायु-मंडल में कुछ ही बरस रह कर बालक जगन्नाथ के पंख निकल आये। वह ज़िन्दगी की रंगीनियों में डूब गया। पहले चाचा के साथ क्लब थियेटर जाता, अब अपनी स्वतन्त्र मित्र मंडली में मौज उड़ाने लगा। पढ़ने लिखने में परिश्रमी था। थोड़े ही समय में अच्छा पढ़-लिख कर व्यापारिक हथकंडों से भी खूब परिचित हो गया। उसकी चाची एक पढ़ी-लिखी स्पेनिश लड़की थी। हर समय उसके निकट रहने के कारण अपने चाचा की अपेक्षा कहीं अधिक अभारतीय बन गया। रंग का थोड़ा सांवला था पर उसकी चाची ने मेकअप द्वारा इस कमी को दूर करने का उसे अच्छा ढंग बता दिया।

चाची को संतान निरोध में विश्वास था। चाचा की इच्छा होने पर भी उसने औषधियों का प्रयोग करके बच्चों की चिल्लपों से अपने गृहस्थ को बरी रखा। पर आखिर स्त्री ही थी, जब पला पलाया बेटा उसे मिल गया तो उसने अपनी समूची ममता उस पर उंडेल दी। जगन्नाथ की छोटी से छोटी मांग या तो वह स्वयं पूरी कर देती या ज़ोर देकर पति से पूरी करवा देती। उसने सबसे पहले भतीजे का अपने ढंग से नामकरण किया; अर्थात् जगन्नाथ कोशल, मिस्टर जी० एन० कोस बन गए। अब यदि कोई भूल चूक कर भी उसे जगन्नाथ कह देता तो वह अपनी पुश्तैनी बन्दूक उठा लाता। इस बन्दूक का भी एक इतिहास है। उसके परदादा राव राजा ठाकुर बीरसिंह ने सिक्खों के ज़माने में कम्पनी सरकार की बहुत मदद की थी। अनेकों आज़ादी-पसंद हिन्दुस्तानियों को बन्दूक से मौत के घाट उतार कर भारत की पुण्य भूमि पर विशुद्ध आर्यों यानी अंग्रेजों के पांव जमा दिए थे। उन्हीं महान सेवाओं के उपलक्ष में इंग्लैंड के सम्राट ने विशेष उनके लिए अपने अंग्रेज कारीगरों से यह बन्दूक बनवा कर उन्हें इनाम में दी थी।

अपने दादा की इस गौरवमयी याद को देश-भक्त ठाकुर जसवंत राय ने तो छूना भी पाप समझा था। किन्तु मिस्टर जी० एन० कोस को छुटपन से ही उस अद्भुत हथियार से मोह था। वह प्राय: रात को सोते समय उसे अपने साथ ही लेकर सोया करता था। पिता के डर से शिकार खेलने नहीं जा सकता था। अब चाचा चाची का सहयोग पाकर उसकी शिकारी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला। कुछ ही दिनों के अभ्यास के पश्चात वह चिड़ी-तोते और मुरग़ाबियों को निशाना लगाने में उस्ताद हो गया। रोज़ाना कोई न कोई पशु-पक्षी मार कर चाची को ला देता। एक बार तो उसने एक रेंडियर का शिकार खेला जिस पर उसकी चाची और उसकी मित्र मंडली ने उसे बड़े पुरस्कार दिए।

बन्दूक चलाने के साथ साथ वह एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट और व्यापारिक सौदेबाज़ी में भी कमाल हासिल कर गया। कभी कभी चाचा के **स्थान पर** जो खुद कभी व्यापार के लिए चला जाता तो महीने भर की कमाई एक ही बार में घसीट लाता।

मे फ़ेअर का उत्सव आरम्भ हुआ। विदेशी सुन्दरियों के साथ नृत्य आरम्भ हो गया। उसके पांव की गति देख कर बड़े बड़े अंग्रेज़ी घरानों की महिलाएं उसके साथ नाचने का चांस पाने के लिए छटपटा उठीं। नाचते हुए किसी युवती के जवानी के उभार जो उसके सीने को छू जाते तो वह उसके रंगीले होंठों को चूमता हुआ नाच के दौरान उसे अपने बाज़ुओं में कस लेता और फिर चक्कर काट कर जो रौक-इन-रोल की धुन पर तेज़ी से नाचने लगता तो सब तरफ़ से वाह वाह हो उठती। उसके बलिष्ठ शरीर और तेज़ तरार अंगों से आकर्षित होकर अनेकों युवतियों ने अपने डैडियों से उसके साथ शादी कर लेने की अनुमति देने का अनुरोध किया। चाचा चाची ऐसी कन्याओं की ओर से नित नए प्रस्ताव पाकर फूल उठते। चाची कहती, "मैं तो अपने लाडले की शादी किसी स्पेनिश लड़की से करूंगी। इंग्लिश लड़कियां भी कोई लड़कियां होती हैं। ये तो बस रेस कोर्स में दौड़ने-भागने

वाले घोड़े हैं। न शरीर में लोच, न अंगों में तेज़ी और न आंखों में खुमार ! देखते नहीं, हमारा कोस जब डांस में टर्न लेता है तो गिरती गिरती मुश्किल से बचती हैं।"

मि० कोस के चाचा पत्नी के वाक्य को ब्रह्मा का वचन मानते। इसी प्रकार होते होते ठाकुर जसवन्त राय के इकलौते पुत्र जगन्नाथ उर्फ मि० जी० एन० कोस को इंग्लैंड के उस मन-पसंद सुहाने वातावरण में रहते हुए ग्यारह वर्ष बीत गए। एक दिन दफ्तर से दोपहर को लंच के लिए घर आया तो खाने के बाद चाचा ने उसके पिता के देहान्त का समाचार सुनाया।

मृत्यु और जन्म के विषय में वह अपने पिता के सिद्धान्त का समर्थक था। मर गया, सो छोड़ गया। उसके लिए रो रो कर व्यर्थ में आंखें फोड़ना उसे न भाया। पर गम्भीर होकर बोला, "चाचा जी, डैडी का इतना बड़ा कारोबार और ज़मींदारी; देख रेख के बिना सब चौपट हो जाएगी। लाखों रुपये की वार्षिक आय मिट्टी में मिल जाएगी। मेरे विचार में आप मुझे इजाज़त दें कि मैं जा कर सब कुछ ठीक से सम्भाल लूं।"

चाचा को उसके होने का बड़ा सुख था। उनका कारोबार इसी की बदौलत आठगुना हो गया था। किन्तु हिन्दुस्तान में होने वाली हानि को सोच कर उन्होंने ज्यूं त्यूं करके पत्नी से इजाजत ले दी।

ठाकुर जगन्नाथ कोशल हवाई जहाज़ में सवार हो कर चौथे दिन नागपुर हवाई अड्डे पर मिस्टर जी० एन० कोस के रूप मे प्रकट हुए। उनके एक दूर के बूढ़े रिश्तेदार ने उसे ध्यान-पूर्वक देख कर जब पहचान लिया तो बाहें फैलाकर उसका स्वागत करने के लिए आगे बढ़े। मिस्टर कोस ने अपने कोट-पैंट की क्रीज़ खराब हो जाने के भय से जल्दी से अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। लेकिन वह बूढ़ा कहाँ मानने वाले था। आवेश में भर कर उन्होंने उसकी कौली भर ही तो ली, और तब तक प्यार करते रहे जब तक उसका सारा सूट एक दम नष्ट न हो गया। फिर रुंधे स्वर में आंखों से पानी टपकाते हुए बोले, "बहुत देर से आए बेटा जगन्नाथ !" मिस्टर कोस

बोले, "कौन जगन्नाथ ! मेरा नाम मिस्टर जी० एन० कोस है। मेरे डैडी मिस्टर जसवन्त राय लैंड लॉर्ड की मौत हो गई है। इस लिए उनका कारोबार सम्भालने के लिए आया हूँ। अरे, आप रो क्यों रहे हैं। जिन्दगी और मौत तो उस गौड के हाथ में है, जो मर गया सो छोड़ गया। चलो घर चलें।"

फिर मनोमन उस बूढ़े को घूरते हुऐ बोला, "ईडियट—फुलिश, इन बूढ़े हिन्दुस्तानी ऊंटों को देख कर ही तो दिल जलता है। ऐसा लगता है कि दूसरे हवाई जहाज से इंग्लैंड लौट जाऊँ। गधे ने इतना क़ीमती सूट मूड में आकर एकदम खराब कर दिया।' फिर प्रकट में ज़रा व्यवहारिक कोमल स्वर में भर कर बोला, "आपका नाम ?"

"रंजीत ठाकुर !"

नाम सुनते ही जैसे उसे पुरानी बातें याद आ गई। इसी रंजीत की गोद में खेल खेल कर बचपन के लगभग सात साल उसने बिताए थे। स्मृति के बल पर उसके हृदय में उस वृद्ध के लिए ममता जाग उठी। एकदम उससे लिपट कर उस के चारों ओर घूमता हुआ बोला, तुम ! बड़े काका ! नहीं-नहीं, मैं तुम्हें इस पुराने भद्दे नाम से नहीं बुलाऊँगा ! तुम तो मेरे अच्छे अंकल हो। अंकल ये हिन्दुस्तानी नाम एक-दम वाहियात है। न इसमें कोई रिदम, न लोच, न कोई खूबसूरती। ये भी कोई नाम धाम हुआ। अच्छा कहो अब क्या करना होगा।"

रणजीत ठाकुर बोले, "पचास वर्ष के ऊपर आपका नमक खाया है बेटा। इस घर के गौरव को चार चाँद लगे, ऐसा ही काम होगा। आप देखते भर चलिए।"

बङ्गले में प्रविष्ट होते हुए मिस्टर कोस ने गम्भीर स्वर में कहा, "सब से पहले काका इस घर से हिन्दुस्तानी मुलियापन विदा करना होगा। मुझे ऐसी पुरानी साज-सज्जा में एक दिन काटना मुश्किल होगा। और हां—जो बहुत ही जरूरी खर्च हो वह करना। लाश तो ठिकाने लग ही गई !"

"हां बेटा !"

"तो बस बंगले की सफाई करके इसे नए तरीके से सजवा दो।"

काका बोले, "अभी तो क्रिया-कर्म बाकी है। ब्रह्म भोज भी करना होगा।"

"यह सब कुछ नहीं; बकवास है। फोकट में दिवाला पीटने का नुस्खा है। न हो तो पहले चल कर नई दिल्ली में एक नया बंगला खरीद लो। यहां तुम रहकर पुरानी परम्पराओं की मरहम पट्टी करते रहना। मैं यहां नहीं रह सकूंगा। सवेरे के दूसरे हवाई जहाज से चला जाऊंगा। तुम्हीं बताओ न जबलपुर में तो अभी हवाई अड्डा भी नहीं। नागपुर से यहां आते आते चार पांच घण्टे यूं ही नष्ट हो गए।"

"पर बेटा, बिरादरी के लोग शोक प्रकट करने के लिए जो आएंगे।"

"वह तुम यहां हो ही। मैं दिल्ली अकेला चला जाऊंगा यहां का सब चार्ज तुम्हें सम्हाला। एक प्रकार से कुल आमदनी का ठेका ले लो। मुझे हर तीसरे महीने या छटे महीने, जैसे तुम्हें आसान रहे, रुपया भेजते रहना। एक बात और......!" "क्या ?"

" डैडी कुल कितना रुपया छोड़ गए मरते हुए ?" उसके साथ ही फ्रेंच सिगार सुलगा लिया और कश खींच कर काका के मुंह पर धूएं का गुबार छोड़ दिया। काका मुंह पर कपड़ा रखते हुए बोले, "डैडी, मतबल, तुम्हारे पिता ?"

"हां......तुम हो तो समझदार काका......तो......तो अंकल। मैं तुम्हें अंकल कहूंगा। तुम मुझे मिस्टर कोम कहा करो।"

"बहुत अच्छा......हां तो पूरा हिसाब तो मुनीम जी बताएंगे पर जो बड़े ठाकुर के मुंह से मैं ने सुना था......वह कोई पचास लाख नकद अम्पीरल बैंक में जमा हैं। और पांच छः लाख आसामियों पर कर्ज है। कुछ पास पड़ोस के लोग जो ले गए होंगे वह अलग समझो।"

"और इलाक़ा ज़मीन ?"

"नागपुर तक और दूसरी ओर काजी पेठ तक के गांव आप के हैं। पहली चौकी दक्षिण की ओर वर्धा है।"

"तो ठीक है, जाते ही मुनीम जी को हाज़िर करना। मैं आज ही यह सब काम निबटाना चाहता हूं। सालिसिटर तो पिता जी के मिस्टर सैक्सेना है न ;"

"हां......तुम्हारी जात बिरादरी के हैं।"

कोस ने चौंक कर कहा," उन की तो कास्ट यानी जाति दूसरी है। डैडी, क्षत्रिय ठाकुर सूरजवंशी थे और वह तो सुना है पहले चमार थे। यहां आ कर सैक्सेना बन बैठे। खैर कौन पूछता है।"

काका बोला, " पर वह तुम्हारी तरह के क्रिस्तान ही हैं। हर वक्त पता नहीं क्या बक झक करते रहते हैं। कोई समझ ही नहीं पाता।"

कोस बोला, "चलो अच्छा है ; तुम हम लोगों की बातें न ही समझो। इसी में खैरियत है। हां......याद आ गया। चार बोतल शैम्पियन और सोडा तो यहां मिलेगा न !"

"उस के लिए चिन्ता न करो। एक नौकर घर में ऐसा है जो यह सब काम कर लेगा।"

"कौन है ?"

"महल की बाहर से झाड़ फूक करता है। पहले भंगी था, नाम का घसीटा और अब वह भी मिस्टर घीस कहलाता है। बड़े ठाकुर के समय भी जब कोई अंग्रेज अफ़सर आ जाता था तो उस की सेवा का ज़िम्मा उस पर था। बहुत होशियार है।"

"ठीक है। यह काम तो उसे सौंप दो। और तुम जा कर मेरी तरफ से मि० सैक्सेना को बुला लाओ। एक बात और !"

"क्या ?"

"सुना है कि आसामियां अपने राजा को नज़र भेंट भी चढ़ाया करती हैं। अगर कोई ऐसी रस्म डैडी के ज़माने में न भी थी तो इस पुरानी राजसी प्रथा को मैं चालू करना चाहता हूं। वह बारी बारी अपने

परिवारों के साथ मेरे सामने पेश हों। और अंकल, एक काम तो भूला ही जा रहा था।"

"वह भी बता दे वे......नहीं, मिस्टर कोस। ताकि सब काम एक साथ ही निबटा दूं और तुम से हमेशा के लिए छुट्टी लूं। अब मुझ से और खिदमत नहीं होने की।"

मिस्टर कोस ने सिगार का धूआं उगलते हुए कहा, "ओ...समझा... तुम ओल्ड हो गए। पैन्शन लेना चाहते हो ! ठीक है......आज का तो यह काम कर दो। मुझे प्राइवेट सैक्रेटरी के रूप में एक निहायत ही स्वीट और जवान खूबसूरत लड़की चाहिये। जो अङ्गरेज़ी बहुत अच्छी जानती हो। क्लब डांस और बाल डांस में मेरा साथ दे सके। तन्खाह भले ही पांच सौ, सात सौ जो भी ले। मेरे बङ्गले में ही रहेगी और मेरे साथ ही खाए पहनेगी। यहां न मिले तो दिल्ली जाकर मैं अखबार में वाण्ट निकलवा दूंगा।"

काका बोला, "तुम्हारी इस समस्या का हल भी मि० सैक्सेना यहां कर देंगे।"

"ठीक है। आसामियों को मेरा हुक्म भेज दो।"

ठाकुर काका कुछ देर सोचते रहे फिर बोले," मां साहिब की मूर्त्ति भीतर विराजमान है, उनके दर्शन करना भी कोई ज़रूरी तो न होगा।"

मि० कोस बोले, "उस तस्वीर को फ्रेम कराने के लिए इङ्गलैंड भेजना होगा। उस पर मढ़ा सोने का वज़न उतार कर सुनारे को बेच कर रुपए मुझे ला देना।"

अब तो काका के लिए असह्य हो गया। तड़प कर बोला, "वह लक्ष्मी मां है। उन के अङ्गों को नोचते हुए तुम्हें दुःख न होगा पर मैं तो यह सोच भी नहीं सकता मिस्टर कोस।"

"आल फूलिश......सब बेवकूफ़ी है। सोना या हीरे जवाहरात को इस तरह ब्लाक करने से फ़ायदा। वही रुपया बिज़नेस में लगेगा। अब

जाओ, सब काम निपटा कर आ जाओ।"

ज़मींदार की आज्ञा को भगवान का आदेश मानने वाले लोग रात के आठ बजे ड्योढ़ी पर उपस्थित हो गए। बड़े हाल में मिस्टर कोस अपने नए मित्र मिस्टर सैक्सेना और उन की पुत्री मिस शीला के साथ बैठे मीठी मीठी बातें कर रहे थे। मिस शीला एक बीस इक्कीस बरस की रूपवती युवती थी। सैमी-पैण्ट और लाइट रेशमी बुशर्ट पहने थी। चुस्त वस्त्रों में उसके सुन्दर गठीले शरीर की मांस पेशियां बरबस समाई थीं। बुशर्ट के ऊपर के दो बटन खुले रहने से यौवन की मदमाती छटा अपनी हवा दे रही थी। सुनहरी मुलायम सिर के कटे हुए बालों की कोई लट जो मुंह पर अचानक लुढ़क आती तो वह बड़े अन्दाज़ से चुटकी के साथ उसे परे हटा कर गहरे गुलाबी लिपस्टिक से रंगे हुए होंटों को आकर्षक ढंग से सिकोड़ती हुई अपनी बिलौरी नीली आंखों को बार बार बात बात पर झपक देती। वह अपने पिता और मिस्टर कोस के बीच में बैठी बार बार मिस्टर कोस के कन्धे पर अपना हाथ रख कर फुलझड़ी छोड़ देती थी। मिस्टर कोस उस की ओर ललचाई हुई निगाह से देख कर बोले, "हां......तो मिस्टर सैक्सेना, मैं मिस शीला को अपना प्राइवेट सैक्रेटरी फिक्स करता हूं। आप ने एक हज़ार रुपया तन्खाह कही, मैं डेढ़ हज़ार दूंगा।"

मि० सैक्सेना बोले, "उस ने ऐम. ए. इंग्लिश में फस्ट डिवीज़न किया है। शार्ट हैण्ड और टाइप में मास्टर है।"

मि० कोस, मिस शीला के माथे पर लुढ़क कर तंग करने वाली रेशमी बालों की लटें क्लिप के बीच में टांकते हुए बोला, "इस की कुछ ज़रूरत नहीं मि० सैक्सेना, यह मेरी सिर्फ सलाहकार रहेगी। डैडी का कुल हिसाब किताब हमें समझा दें। अभी से मेरा और मेरी रियासत का सब कारोबार इसके चार्ज में। मैं इसे अपने साथ दिल्ली ले जाऊंगा।"

"हां......हां......ज़रूर......पर आप के रणजीत ठाकुर क्या यहां रहेंगे ?"

"नो......नो......मिस्टर सेक्सेना। उसे पचास रुपए माहवार घर बैठे पैन्शन दी जाएगी। वह बहुत ओल्ड हो चुका है। शरीर से भी और दिमाग़ से भी। उसकी जगह आप को दी जाएगी। चाहें तो यहां रहें और चाहें अपने बङ्गले पर। मुझे कुछ सरोकार नहीं। आप यहां के हाकिम आला और आप की बेटी मेरे दिल्ली के घर बार की हाकिम हो गई।"

शीला बोली, "मेरे ख्याल के मुताबिक रणजीत ठाकुर को बजाए पचास के एक सौ रुपया माहवार और साथ में बीस बीघे ज़मीन खेती के लिए देनी चाहिए। मुझे किसी के लिए बे इन्साफ़ी एक दम पसन्द नहीं।" मिस्टर कोस जोश में आ कर बोले, "अजी जितना आपने कहा, उस से भी दुगना दिया जाए, बस अब तो आप खुश हैं।"

वह अपनी लम्बी पतली अंगुलियों को लचकाती हुई बायीं आंख दबा कर बोली,

"जी शुक्रिया।"

इसके बाद डिनर से निवृत्त हो कर तीनों छोटी बैठक में जा बैठे। आसामियां एक एक करके नज़राने पेश करने लगीं। दो घण्टे तक यह क्रम जारी रहा। जब सारी आसामियां चली गईं तो मि० कोस नक़द रुपया गिन कर बोला, "कुल दो हज़ार सात सौ रुपए हुए। और यह आटा और दूसरी चीजें नौकरों में बांट दी जाएं।" शीला ने हाथ बढ़ा कर रुपए कोस के हाथ से झटक कर कहा," "आप यह रुपए क्या करेंगे। यह मेरे पास रहने दीजिए, आप गँवा देंगे।"

मिस्टर कोस तो उस की एक एक अदा पर न्योछावर थे। अपना पर्स उस की तरफ बढ़ा कर बोले, "और चाहो, तो उस में हैं। अच्छा मिस्टर सैक्सेना, आप चाहें तो जा सकते हैं या ऊपर के कमरे जा कर सो जाएं। अब में मिस शीला से कुछ कारोबारी बात चीत करना चाहता हूं। शैम्पियन की पूरी दो बोतल बची पड़ी हैं। चाहें तो नौकर को

हुक्म कर दें। वहां......देखना रणजीत ठाकुर को कोई ऐसी वैसी बात कह कर नाराज़ न करना, मैं यहां से जाने से पहले मुफ्त का कोई बखेड़ा खड़ा करना नहीं चाहता। और फिर डैडी के वक्त का पुराना ईमानदार आदमी है। मिस शीला के हुक्म के मुताबिक दो सौ रुपए मासिक पेन्शन चालीस बीघे कूंए की जमीन और कुछ इनाम आदि दे कर खुशी खुशी विदा करना। पट्टे पर सवेरे मेरे दस्तखत याद मे करवा लेना।"

सैक्सेना डिनर के समय कुछ अधिक पी गए थे। उठ कर बोले, "नही......थैंक्स मिस्टर कोस, मैं घर जा रहा हूँ। सवेरे जल्दी हाजिर हो जाऊंगा।"

ठीक है। नौ बजे तक आ जाइएगा। ब्रेक फास्ट एक साथ करेंगे। चयारियो, गुड नाईट।"

शीला ने भी अन्दाज़ से हाथ उठा कर नशीली आंखों को ज़रा भींच कर झूमते हुए कहा, "गुड नाईट पापा।"

"गुड नाईट टू यू बोथ" (दोनों को गुडनाईट)

मि० सैक्सेना के विदा होते ही मिस्टर कोस ने मिस शीला की कमर के पीछे हाथ कस दिया। वह चहुंक कर बोली, "ओ.. ...यू नॉटी चैप! सबर से काम लो। गाना सुनोगे?"

"हुं ।"

"नाचोगे ?"

"हूं ... ।"

"तो ठहरो रेकार्ड लगा दूं;"

ग्रामोफोन रेकार्ड पर अंग्रेजी धुन बजने लगी। दोनों के पांव उस की तान पर थिरकने लगे। मिस शीला ने अपनी गोरी गोरी सुडौल पिण्डलियों को तेज़ी से घुमाना पटकना चालू कर दिया। नाचते नाचते धुन में हेजान सा पैदान हो गया। ऊपर से बढ़िया विलायती शराब का नशा। दोनों की रग रग में गरम खून दौड़ रहा था। घूमते घूमते मिस्टर कोस ने उस की कमर को जोर से दबाया। उस के मुंह से हल्की सी सिस्कारी निकल गई। उसने हाथ बढ़ा कर बिजली का स्विच आफ़ कर दिया।

× × × ×

२

मिस्टर कोस को नई दिल्ली के आलीशान बङ्गले में रहते लगभग बीस बरस हो गए। जबलपुर से यहाँ पहुंचते ही शीला के साथ उस की शादी इस शर्त पर हो गई थी कि दोनों में से कोई भी एक दूसरे के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप न करेगा अर्थात, कोई भी अपनी इच्छानुसार अपन मित्रों के साथ स्वतन्त्रता पूर्वक घूम फिर सकेगा।

पांचों पाण्डवों ने द्रोपदी को पत्नी रूप में ग्रहण करते समय यह प्रतिज्ञा की थी कि जब द्रोपदी किसी एक के साथ प्रेमालाप करती हो और बाक़ी चारों भाईयों में से जो किसी की भूल से भी दृष्टि उस पर पड़ जाए तो उसे एक वर्ष के लिए अज्ञात वास का दण्ड ग्रहण करना पड़ता था। कुछ ऐसी ही समन्वय नीति इस दम्पति में भी निर्धारित हो गई थी।

इन बीस वर्षों में उपरोक्त निश्चय पर अटल रहने के कारण दोनों में कभी किसी प्रकार का मन मुटाव नहीं हो पाया था। यदि मिस्टर कोस शाम को जल्दी घर लौट आते और शीला का किसी पुरुष मित्र के साथ समय पहले से निश्चित हुआ होता तो वह स्वयं याद करा देते कि अमुक व्यक्ति के साथ उसका टाइम निश्चित है। यही व्यवहार शीला का अपने पति के प्रति था। दोनों एक दूसरे पर जान देते थे।

बड़ा लड़का विदेश गया था। छोटा लड़का चार्ली घर पर था। पिता की ऐतिहासिक बन्दूक का प्रयोग यह खुले आम करता था। क्योंकि मिस्टर कोस को आकाश विहारी छोटे मोटे पक्षियों को निशाना बनाने की

अपेक्षा और बहुत से आवश्यक कार्य थे । सरकारी ठेकेदारी का बड़ा भारी काम निरन्तर कई वर्षों से उन के हाथ में था। रिफ्यूजियों के लिए क्वार्टरज़ बनवाए, तो लाखों रुपए का लोहा-लकड़ी और सीमेण्ट आदि ब्लैक में बेच दिया।

राशन-सप्लाई का उत्तरदायित्व मिला तो आटे की जगह तीन बटा चार घास की जड़ें पीस कर लोगों को खिला डालीं। कभी कोई अन्तरंग मित्र इस बात पर अंगुली उठाता तो प्यार भरे लहजे में कहते, "जब राणा प्रताप जैसे राजा ने संकट के समय घास की जड़ों की रोटियां खा डालीं तो यह आज के हिन्दुस्तानी कहां के अंग्रेज़ हैं। इन्हें तो हलवा मिले तो क्या और गोबर मिले तो क्या, रहना तो गधे के गधे हैं। न खाने पीने की तमीज़, न बोलने चालने की सूझ; इनसे तो कहीं अच्छे अङ्गरेजों के घोड़े या कुत्ते हैं। जो भूखे मर जाएं पर बेढंगा न खाएंगे। वहां घोड़े की चाल खराब हो जाए तो गोली मार देते हैं। और यहां महात्मा बुद्ध का देश है, कोढ़ी को भी गले से चिपकाए फिरते हैं। ऊपर से कहते हैं; इस से पुण्य मिलता है।"

एक बार उनके कार्यालय के मुनीम ने दो दिन की छुट्टी मांगी। छुट्टी तो दे दी पर बोले, "क्या काम है?"

बह बोला, "सरकार निराहार उपवास है।"

"वह किस लिए?"

"इस में बड़ा पुन्न मिलता है सरकार, महीने में चार बार यह निराहार व्रत करने वाले को मरने के बाद सीधा स्वर्ग मिलता है।"

हँस कर कहने लगे, क्या मज़ाक़ है, पहले इस जिन्दगी में भूखे तड़पो फिर मरने के बाद बढ़िया पकवानों की आशा करो। इस ज़िन्दगी में नरक भोगो और अगली ज़िन्दगी के लिए स्वर्ग की आशा करो। और अगर कहीं भगवान के बही खाते में हिसाब की गड़बड़ी हो गई या स्लिप आफ पैन हो गया तो समझो कि इस जन्म में तो नरक की आग में जान बूझ कर तड़पे और

अगला जन्म भगवान की गलती से वबाल बन गया। भई, खूब सूझ है इन हिन्दुस्तानियों की। हर काम में उधार; नकद का धन्धा तो जानते ही नहीं। इस जन्म में असल बांट कर अगले जन्म में सूद समेत मिलने की कामना करते हैं।"

मुनीम बेचारा चुपचाप अपने मालिक की बातें सुनता रहा, वह सिगार का कश लगा कर आगे बढ़ गए और वह जान छुड़ा कर भागा। बेचारा धर्म-प्राण व्यक्ति था, हिन्दू-धर्म के विरुद्ध ऐसी ऐसी बातें सुनने के फलस्वरूप घर जाते ही मल मल कर नहाया। और कानों के पास ज़ोर ज़ोर से घण्टियां बजाईं ताकि विधर्मी के अशुद्ध अलाप का स्वर नष्ट हो जाए।

अधेड़ावस्था होने पर भी दोनों पति पत्नि बहुत सज धज के साथ रहते थे। बड़ा लड़का रमेश भारतीय विचारों का था, उसमें देश भक्ति का रोग घर कर गया था। इसीलिए अपनी स्पेनिश चाची के पास दीक्षित होने के लिए उसे उन्होंने विलायत भेजा। किन्तु वह उनकी चाची के पास न रह कर इण्डिया कालोनी में जाकर रहने लगा। चार्ली को देहली के एक ईसाई मिशन स्कूल में भरती कर रखा था। पर, वह भी माता पिता के अनुकूल न था। बेटी कमला मां के रंग में रंग कर हर वक्त क्लबों में घूमती फिरती थी। आए दिन नए से नए मित्र बनाती और अगले दिन उन्हें भूल जाती।

तीनों बच्चों को खुला जेब खर्च मिलता था। एक तो बाहिर ही था और दोनों से हो मिस्टर कोस यह आशा करते थे कि अधिकतर समय घर से बाहिर व्यतीत करें ताकि उनके आनन्द कार्यों में विघ्न न पड़े।

स्मिथ नाम का एक काला साहब उनका मित्र और सलाहकार था। वह बड़ा होशियार था। मिस्टर कोस के कन्धे पर बन्दूक रख कर शिकार खेलने में अभ्यस्त था। इस अभ्यास में उसके हाथ सदा लाभ में रहते। वह कोस के साथ रह कर खूब आनन्द में डूबा रहता। आए दिन कोई न कोई चिड़िया फांस कर ले आता।

कुछ दिन पहले मिस बागल नामक एक एंग्लो-इण्डियन रूपसी को नौकरी का लोभ देकर ले आया। मिस्टर कोस लड़की को देखते ही रीझ गए।

उसी समय अच्छे वेतन पर बतौर सेक्रेटरी रख लिया। दो चार दिन में ही मिस बागल की काली २ आँखों ने उन्हें बावला कर दिया। बस फिर क्या था, हाथ बढ़ा दिए कोस ने उसकी तरफ, और उसने तरक्की पाने की आशा में आगे बढ़कर हाथ थाम लिए। सेक्रेटरी के पद के लिए समाचार पत्र में पुनः वाण्ट (माँग) निकाल दी गई। रूप का यह भ्रम मिस्टर कोस की अपनी ओर आकर्षित करता ही जा रहा था।

३

रविवार की दोपहर को मिस्टर कोस अपने ड्राइंग रूम में बैठे सिगार के लम्बे लम्बे कश लगा कर धूएं के गुब्बार छोड़ रहे थे। मस्तिष्क में विचार आया कि मिस बागल के काले और घने केश धूएं के रूप में चारों ओर से उन्हें लपेटने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। और धूएं से आधी बन्द हुई आंखों को बरबस खोलने का यत्न करते हुए उस धूम्र जाल में बागल के गुलाबी गालों वाले गोरे मुख की तलाश करने में लीन थे कि टैलीफ़ोन की घण्टी खनखना उठी। उन्हों ने टांगें पसारते हुए चोंगा कान से लगा लिया। कुछ क्षण सुनने का नाट्य करते हुए बोले, हैलो . यैस, यैस.. मैं कोस बोल रहा हूं ; कौन ! मिस बागल...ओ नो नो इम्पौसिबल, नामुमकिन ह्वॉट क्या, तुम शाम की चाय पर नहीं आओगी नो नो विदाऊट यू यैस, ओह नॉटी चैप, मस्ट कम, मस्ट कम ; हम तुम्हारा इन्तज़ार करेगा ; क्या हूं हूं... कुछ नहीं हम तुम से ऐंगरी हो जायगा.. हां, हां आज चाय पर नहीं आई तो तुम से कभी नहीं बोलेगा हाँ ; ऐं . अच्छा अच्छा पर देखो, इंग्लिश टाईप आना मांगता है। हमको इन हिन्दुस्तानी लोगों की कोई बात पसंद नहीं...ओके...हैलो, हाँ...क्या बोला घर के सब लोग ; वह तो सब अपने २ प्रोग्राम पर कहीं न कहीं चले ही जाएंगे। ओ ..यैस डोण्ट वरी; क्या कहा चार्ली से डर लगता है। और वह तो अपना सन है, सन (बेटा) हाँ . हाँ वह तो इस पर क्लाऊन है। अच्छा बाई . बाई !" टैलीफोन का चोंगा रख कर बोला, "हाऊ स्वीट ...हाऊ ब्यूटीफुल बेवकूफ हैं वे लोग जो ढलती उमर में रोमान्स करने पर नुक्ताचोनी करते हैं। जवान औरत तो

बहार है। ज़िन्दगी में जब आ जाए तभी जवानी लौट आती है। सौ साल के पेड़ पर भी बहार आने पर नये पत्ते आ जाते हैं। नई नई कोंपलें फूट पड़ती हैं' यह तो क़ुदरत का जादू भरा हाथ है...हाँ जिन में मरदानगी न हो...उनकी बात अलग है...हाँ...हाँ......।"

हँसते हुए बोले, "मिस बागल......हाऊ स्वीट...डार्लिंग......हाऊ गुड......!"

तभी चार्ली बीच में टपकता हुआ बोला, 'किस की तारीफ़ हो रही है पिता जी ?" मिस्टर कोस व्यस्त हो कर बोले, "किसी की नहीं माई सन...।"

"अभी आप कह रहे थे न, हाऊ स्वीट...हाऊ गुड...।"

"ओह......वह तो तुम्हारी तारीफ़......।"

चार्ली उछल कर बोला, "मेरी तारीफ़, सच पिता जी !"

"देखो, चार्ली तुम मेरे बेटे हो न !"

"क्या आप को शक है ?"

"ओह......तो...तुम मेरे अच्छे बेटे हो, फिर अपने डैडी को कैसे भौंडे नाम से पुकारते हो। मुझे यह हिन्दुस्तानी नाम एक दम पसन्द नहीं...मेरा बस चले तो ..।" बात काट कर चार्ली बोला, "हिन्दुस्तान को पकड़ कर विलायत के समुद्र में डुबो दें। लेकिन पिता जी, मैं तो इसी धरती पर पैदा हुआ हूँ। इसी के संस्कार......।"

"ओ...संस्कार...यू नॉनसेंस फूल...जाओ भागो यहाँ से, काम करने दो मुझे।" वह मुँह बनाकर जाने लगा तो रोकते हुए बोले, "चार्ली।"

"जी पिता जी।"

"तुम्हारा पैट पिक्चर लगा है मैट्रो में...मैटिनी देखने नहीं जाओगे ?"

"जाना तो चाहता था...पर...।"

बोले, "पर क्या...बहुत अच्छा फ़िल्म है बवा वाडिस...।'"

मुँह बिगाड़ कर चार्ली बोला, "है तो सही पिता जी, पर शाम को मिस बागल आपके साथ चाय पीने आ रही हैं न ; मैं भी उन्हें मिलूंगा। मेरी

उमर की हैं......बराबर की उमर से दोस्ती होनी चाहिए ही...और फिर सुना है, बहुत अच्छा गाती हैं ।"

"आज कल उसका गला खराब है। दूसरे वह किसी काम के लिए आ रही है । आज तुम पिक्चर देख आओ, फिर किसी दिन......।"

"नहीं नहीं डैडी...फिर नहीं आज ही मैं उनसे गाना सुनूंगा । वह मुझे बहुत चाहती है न ।"

मिस्टर कोस सिगार को फिर से सुलगाते हुए बोले, "तुम्हें बहुत चाहती है । फुलिश...ईडियट...वह तो जैसे तुम पर जान देती है ।"

"यैस फादर...वह यहां आने से पहले की मेरी दोस्त है।"

"दोस्त का बच्चा...गैट आऊट......!"

"मैं तो जा रहा था पिता जी, आपने ही रोक लिया । अच्छा चला... शाम की आपके साथ चाय पीने आऊंगा । टा...टा...नहीं, नमस्ते पिता जी।"

वह गरज कर बोले, "शटप...फूल...गो !"

"यैस डैडी...हां पिता जी...चला, यह चला...।"

चार्ली के जाने पर मिस्टर कोस थकावट महसूस करते हुए अंगड़ाई लेकर बोले, "यह लड़का मेरा दुश्मन है। इसका बस चले तो मुझे घर की किसी कोठरी में कैद करके औरंगजेब की तरह ।" और वह उठकर खिड़की से बाहिर काले बादलों से ढके आकाश को देखने लगे। बादलों के टुकड़े परस्पर संघर्ष कर रहे थे। मिस्टर कोस ने अपने भीतर होने वाले संघर्ष को दबाने के लिए दोनों हथेलियों को अपनी छाती पर कस के रख लिया और गद्दे दार कौच पर लुढ़क गए ।

तभी शीला ने मछली की तरह नितम्ब मटकाते हुए कमरे में प्रविष्ट हो कर कहा," हैलो डार्लिंग ! मुंह क्यों बिसूर रहे हो ? कई बार कहा, खुश रहा करो, हर वक्त अपने में घुटने से फायदा ? जिन्दगी हंसने के लिए है रोने के लिए नहीं ।"

तेज़ी से आगे बढ़कर पति की पीठ गुदगुदाती हुई बोली, "हँसो... हँसो...हां...ऐसे...।"

मिस्टर कोस चश्मा उतार कर बोले, "ओह...हो...यह बिजली कहां गिरेगी, शीला डार्लिग।"

"तुम ही बताओ, क्या ख्याल है?"

"जँच रही हो...जरा मेरे सामने ठीक से आओ...हाय मर गया। फ्रेंच केक सी जान पड़ती हो!"

शीला तन कर खड़ी मुस्कराने लगी। उसके अनार दाने से सुन्दर दाँत खिल उठे। पलकें झपक कर बोलीं, "लो देखो; यह साड़ी तुम्हीं ने तो लास्ट क्रिस्मैस पर लाकर दी थी।"

"है तो ठीक डालिंग! पर तुम्हें फ्राक या लाल वुशर्ट ज्यादा सूट करता है। यह हिन्दुस्तानी फैशन एक दम ढीला और बेहूदा है। खैर, यह बताओ, जा कहाँ रही हो?"

बोली, "मेरे एक फ्रैन्ड की सालगिरह है।"

"कौन फ्रैण्ड, सावित्री डीसूज़ा।"

"नो डालिंग, मिस्टर डीसूज़ा की...।"

जाते जाते लौट कर बोली, "हाँ वह बिलासपुर वाले ज़मींदार जी अपनी लड़की उर्मिला को लेकर आये थे।"

"कैसी है लड़की, अपने रमेश को सूट करेगी?"

बोली, "देखने को तो खूबसूरत है। बी. ए. तक पढ़ी है। लेकिन इण्डियन कल्चर का भूत उस पर बहुत सवार है।"

"तुमने उसके बाप से कहा?"

"बस कह दिया कि मेरा रमेश विलायत में रहता है। वह किसी हिन्दुस्तानी भैंस को अपने खूंटे नहीं बाँधेगा। भले ही भैंस का रंग बर्फ से ज्यादा ही सफेद हो।! क्यों ठीक कहा है न, मैंने?"

मिस्टर कोस उठकर उसका हाथ पकड़ते हुए बोले, "तुम कभी ग़लत

नहीं कह सकतीं शीला डार्लिंग ! हमारे घर में तो सिर्फ एक ही ब्लैक-शीप है ।"

"कौन ?"

"चार्ली, तुम्हारा बेटा !"

कटाक्ष फेंक कर बोली, "क्यों, तुम्हारा नहीं ?"

"मुझे तो कुछ शक शुबहा है इसमें ।"

चुटकी काट कर बोली, "बहुत सोचने लग गए हो । देखो, ज्यादा सोचने से बुखार चढ़ जाता है ।"

शीला के दोनो हाथ अपने सीने पर रगड़ते हुए बोले, "और वह तो तुम्हें देख कर ही चढ़ जाता है । लो देखो, कितना गर्म हो रहा है !"

"छोड़ो शरारती कहीं के...अच्छा मैं शाम को चाय पर न आ पाऊंगी ।

जाने लगी तो कोस बोले, "कमला कहां है ?"

"या तो अपने कमरे में होगी या किसी फ्रैण्ड के साथ कहीं घूमने गई होगी । खुलकर खेलने दो । बचपन है । यह वक्त मनहूसियत में बिता देने का नहीं । ओके डार्लिंग ! गैटिंग टू लेट ।" रिस्ट पर निगाह दौड़ा कर मनी बैग घुमाती हुई चली गई । मिस्टर कोस कुछ क्षण द्वार पर लटके हुए लाल रंग के रेशमी परदे को हिलते हुए देख कर बोले, "कितनी अच्छी है शीला; कभी मेरे किसी प्रोग्राम में दखल नहीं देती..... और दूसरी मिस बागल... अहा...हा, चमकदार गुलाबी पत्थर का जीता जागता मुजस्सिमा । कितनी नवली, कितनी स्वीट......। ओ माई गॉड !!"

उसने खुल कर अंगड़ाई ली और पुन: खिड़की में से काले बादलों का संघर्ष देखने के लिए उठने लगा तो एक व्यक्ति ने प्रविष्ट होकर कहा, "हैलो कोस !"

"कम ऑन स्मिथ...चले आओ ।"

वह कुर्सी खींच कर बैठता हुआ बोला, "एक जरूरी काम से आया हूं मिस्टर कोस !"

कोस उस की बाँह पकड़ कर अपनी ओर घसीटता हुआ बोला, "पहले यहां बैठो मेरे पास ; हां ऐसे ...अब बोलो क्या काम है ?"

वह इधर उधर देख कर बोला, "क्या भाभी घर पर तो नहीं ?"

"क्यों कोई प्राईवेट बात है। खैर, तुम इसकी फिक्र न करो; यहाँ इस घर में कोई ऐसा बेकार नहीं जो तुम्हारी थ्यूरी को जानने के लिए दीवार में घुस बैठा रहे।"

वह आशंकित दृष्टि से बोला, "चार्ली भी ...!"

"ओह कॉवर्ड, डरपोक ! मैं कह रहा हूं कि डरने की कोई बात नहीं। चाहे ढोल बजाकर कहो।"

वह धीमे स्वर में बोला, "एक उड़ती चिड़िया ।"

बीच में एकाएक नौकर प्रविष्ट होकर बोला, "सर, चाय के साथ क्या बनाना होगा ?"

कोस चिढ़ कर बोला, 'ओ . यू नान्सेंस, इंट पत्थर जो भी हो भून लेना, गैट आऊट ; हम स्मिथ से बात करता है। देखता नहीं अन्धा ..... टोटली ब्लाइण्ड ।"

नौकर बोला, "लेकिन बॉस, टाइम थोड़ा है। कुछ तो होगा नहीं तो"

... मिस्टर कोस बौखला कर बोला, "ओह .. यू ईडियट कटलैस, टोस्ट... बटर ऐण्ड सॉस बस और ..।"

"बस बस बॉस समझ गया।"

"देन गो यू ईडियट।"

नौकर द्वार तक जाकर फिर लौट आया तो कोस बोला, "अब क्या हुक्म है ?"

वह डरता हुआ बोला, "सर, चीनी और अण्डे नहीं हैं।"

"तो मेरे पास बनठे हैं। जा बाजार से ले आ।"

"लेकिन बॉस, पैसे के बिना तो.......।"

स्मिथ बीच में हंस कर बोला, "यार कोस, तुम्हारा भी जवाब नहीं। उसे पैसे नहीं दोगे तो चीजें कहां से लाएगा !"

"ए जा शीला से ले ले ।"

"वह तो बहुत देर से कहीं चली गई है ।"

"अच्छा, कमला से ले ले ।"

"वह तो सुबह से ही घर में नहीं हैं ।"

कोस चीख कर बोला, "जा चार्ली से ले ले......।"

पिता का ऊंचा स्वर सुन कर गैलरी में जाता हुआ चार्ली चौंक कर भीतर आकर बोला, "यैस फादर . आपने मुझे याद किया कहिए क्या सेवा करूं आपकी ?"

कोस अपने ऊपर संयम प्राप्त करते हुए बोले, "माई स्वीट सन चार्ली .. जो यह कहता है ...इसे ले देना ।"

चार्ली जाता हुआ बोला, "जी पिता जी ! नो...नो...यैस फादर !!" कान छूता हुआ बाहिर भाग गया नौकर की बांह पकड़े। तो मिस्टर कोस ने लम्बी सांस छोड़ कर कहा, "जान छूटी हां स्मिथ किस चिड़िया की ..।"

उसकी बात पूरी होने से पहले बाहिर बन्दूक चलने का भयानक धमाका सुनाई दिया। स्मिथ घबरा कर बोला, "अरे, यह बन्दूक कहां चली। चार्ली ! चार्ली !!"

चार्ली गैलरी में आकर बोला, " चचा जी, एक चिड़िया हमारी छत पर मण्डरा रही थी। हमारे नौकर ने उसे गोली से मार गिराया। बहुत खूबसूरत है। पंख तो ऐसे हैं जैसे नाईलोन के रंग बिरंगे झालर ! फादर...उसे मैं खा डालूंगा ।"

कोस सिर पकड़कर बोले, "ओफ, यह घर है कि चिड़िया घर ..।"

चार्ली बोला, "वाह पिता जी...क्या सिमिली दी है ।"

कोम कड़क कर बोले, "सिमिली के बच्चे .....तू यहाँ से जाएगा कि नहीं।"

वह बोला, "जाता हूँ फादर...... बस यह और बता दो कि सिमिली भी मेरी भाभी बनने वाली है ?"

"हाँ हां और पूछो .. ?"

"तो उस चिड़िया को भून कर मैं खा जाऊं !"

मिस्टर कोम चीखते हुए बोले "उस चिड़िया को ही नहीं, मुझे भी भूनकर खा जाओ .. ! एक दम जंगली... ईडियट ; मैं कहता हूँ, तुम यहां से फौरन बाहिर चले जाओ, जाओ .....।"

चार्ली भाग कर बाहिर गया तो उसकी लपेट में आकर कई चीजें नीचे गिर गई । कोस कुछ देर बाद स्वस्थ होकर बोले, "हां......तुम बोलो स्मिथ ।"

स्मिथ एक एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला, "मैं यह कह रहा था कि उड़ती चिड़िया के पर काटने का समय आ पहुंचा है।"

कुछ सोच कर मिस्टर कोम बोले,,.तुम्हारा मतलब मिस दुलारी से है।

स्मिथ बोला, "मैं कहता हूँ कोम ; धीरे बोलो।. हां.. अगर वह हाथ आ गई तो पाँचों घी में हैं।"

"हूँ . सूझ तो बहुत अच्छी है। एक निशाने में दो शिकार ; मिस दुलारी का सुनहरा चमकता हुआ शरीर, नशे में बोझिल आँखें और घनघोर बादलों जैसे काले बाल . .. वाह, वाह ; जिन्दगी में बहार आ जाएगी स्मिथ ! और उसके साथ सेठ मोहन लाल की हरे नीले नोटों की तिजोरी ; बस मजा आ जाएगा माई डियर स्मिथ !"

स्मिथ गम्भीर होने का नाट्य करते हुए बोला, "खिला पिला कर भगा देना चाहते हो ।"

कोम उसकी पीठ पर हाथ फेरता हुआ बोला, "और जो कहो, वह दूंगा ; मुँह माँगा इनाम दूंगा ।"

"फिर सोच लो वायदा करते हो ?"

"कोस दाहिना हाथ बढ़ा कर बोले, "एकदम पक्का यर्ड, बस यह काम आज ही होना चाहिए।"

"आज क्या, अभी दो घण्टे में ही सब ठीक हो जाएगा। चुटकी मारते ही सेठ मनोहर लाल की तिजोरी के सब नोट तुम्हारी सेफ़ में और मिस दुलारी तुम्हारी बगल में; लेकिन इस के बदले में कमला को तुम से मांगता हूं। मुझे और कुछ नहीं चाहिये।"

कोस आंखें तरेर कर बोले, "लेकिन कमला से भी तो पूछना होगा।"

"वह तुम्हारा काम है, अब मैं चला। मेरी मांग में कुछ रियायत नहीं होगी, समझे।"

होंठ काट कर कोस बोले, "समझ गया। तुम काम पूरा करो। मैं अपने वायदे पर कायम हूं।"

"ओके, अब मैं चल दिया।"

स्मिथ तेजी से पर्दा उठा कर बाहिर चला गया। कोस सोचने लगे, 'सौदा बहुत मंहगा है। पहले तो कमला, चार्ली और शीला को इसके लिये मनाना होगा। सबके मान जाने पर यह सोचना होगा कि स्मिथ जैसे उचक्के बदमाश के साथ ब्याह देने से कमला का भविष्य क्या होगा; नहीं ......नहीं......मैं यह सब होने क्यों दूंगा ! स्मिथ से काम भर ले लूं फिर फिर स्मिथ को ठिकाने लगाने में क्या देर लगेगी।'

एकाएक बाहिर से गोली चलने का स्वर सुनाई दिया। मिस्टर कोस कमरे में तेजी से तीन चार चक्कर लगा कर बोले, "ओऽफ़ यह घर है या जंगी मोर्चा। शोफ़र ! शोफ़र !!" बाहिर से किसी ने जवाब नहीं दिया तो दो तीन चक्कर और लगा कर फिर से स्वस्थता प्राप्त करके मेज के दराज से एक युवती का फोटो निकाल कर मुग्ध दृष्टि से देखते हुए बोले, "मिस डागल और मिस दुलारी... ।"

अभी वाक्य भी पूरा न कर पाये कि एक सुन्दर एंग्लो-इण्डियन युवती

ने पर्स घुमाते हुए तेज़ी से कमरे में दाखिल हो कर उनके हाथ से अपना फोटो खींच लिया और उनके मुँह के पास अपना मुँह करती हुई बाईं आँख दबा कर बोली, "हलो माई रोमियो !"

कोस उसे अपनी बाहों में भींचने का यत्न करते हुए बोले,

"माई ज्यूलियट ! लवली, स्वीटहार्ट !" और वह उसे उठा कर तीन चार चक्कर काट गया। मिस बागल उसके हाथ से छिटक कर चुटकी काटती हुई बोली, "आज तो बड़े मूड में हो मिस्टर कोस ! क्या बात है, कोई खजाना मिल गया !"

"यस, माई ज्यूलियट !"

"कहां !"

मिस बागल की नागिन सी लहराती घनी केशराशि को झटका दे कर उसका मुंह अपनी ओर घुमा कर आंखें झपक कर बोले, "दिस; प्राइस लैस ज्यूअल, अनमोल हीरा। तुम से बढ़ कर और कौन सा बेशक़ीमती खजाना होगा, माई डालिंग !"

वह हाव-भाव दिखाती हुई बोली, "जाओ जी, क्यों बनाते हो !"

"तुम जानती हो मैं कभी झूठ नहीं बोलता।"

"नहीं जी, तुम तो जुपीटर हो। सच्चाई के देवता।"

इसके साथ ही वह उसके हाथ से फिसल कर फिर निकल गई। कोस ने आगे बढ़ कर उसकी हल्की नीली नाइलोन की साड़ी का छोर पकड़ लिया। अभी साड़ी के एक दो बल ही खुले थे कि नौकर चाय का सामान ले कर भीतर आ गया। साड़ी का छोर मिस बागल के मुँह पर डालते हुए बोले, 'क्यों रे चार्ली तो घर पर नहीं !"

नौकर बोला, "सरकार वह अभी अभी चिड़िया भून कर उधर बरामदे में मेज पर रख कर उसे नमक सॉस लगा रहे हैं।"

संदिग्ध स्वर में कोस बोले, "इधर तो नहीं आ रहा ?" "कह रहे थे कि यह चिड़िया आज मैं इन मेम साहिब को अपने हाथों से खिलाऊँगा।"

कोस गम्भीर हो कर ठण्डा सांस भरने लगे तो मिस बागल ने खिलखिला कर कहा, "बहुत खूब; आज सचमुच मजा आ जाएगा। मिस्टर कोस अब आप को तो रिटायर हो जाना चाहिए।"

"किस चीज़ से ?"

आंखें मटका कर बोली, "रोमांस से ... यानी मोहब्बत के बाज़ार में चार्ली के सामने आपका रंग फीका पड़ जाएगा।" वह उनकी ठोड़ी को छू कर फिर ज़ोर जोर से हंसने लगी। कोस गाल पर हल्का सा चपत रसीद करते हुए बोले, "चल शरारती कहीं की। आदमी का रंग कभी फीका नहीं पड़ता। मेरे नज़दीक आ जाओ न ज़रा, क्यों तड़पा रही हो। इतना सुहाना मौसम ... ओह माई स्वीट डार्लिंग !"

मिस बागल मुस्कराती हुई बोली, "क्यों दूरी अखर रही है। अभी तो दिन का उजाला है मेरे रोमियो, कोई देख लेगा तो ......।"

भावावेश में उसकी ओर बढ़ते हुए गिड़गिड़ा कर बोला, "ओ ... नो ' नो, आओ मैं तुम्हें अपने हाथ से चाय पिलाऊंगा। आओ यहां बैठो, मेरे एकदम नज़दीक आ कर। सर्दी महसूस हो रही है।"

उसकी बांह पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे तो हाथ में प्लेट ले कर चार्ली दाखिल हुआ। बागल हाथ छुड़ा कर अपनी जगह आ बैठी। वह हैट उतार कर बड़े प्यार से सिर झुकाता हुआ बोला, "गुड ईवनिंग, मैडम।"

"गुड ईवनिंग डीयर चार्ली ! कुछ मेरे लिए लाये हो।"

"बहुत ही लाजवाब चीज़ है। डैडी को छोड़ कर बाहिर आओ तो खिलाऊंगा।"

"क्यों यहां नहीं; तुम्हारे पापा भी ......।"

'नहीं ... नहीं मैडम, इन्हें नहीं दूंगा। एक तो इनका बूढ़ा पेट, यह हज़म नहीं कर पाएगा। फिर यह मुझे हमेशा डांटते रहते हैं। जल्दी उठो,

नहीं तो टेस्ट जाता रहेगा। औनर्ड साम लगाई है। खाएंगी तो याद करेंगी कि चार्ली के हाथ में भी कोई हुनर है।"

कोस बोले, "अच्छा-अच्छा अभी ले जाओ। यह बाद में खा लेगी। हां, तो मिस बागल यह लो टोस्ट !"

बागल अंगड़ाई लेती हुई उठ कर बोली, "नो-नो मिस्टर कोस ! आई एम वैरी सौरी। आज मैं चार्ली के हाथ का खाऊंगी। यह मेरी उमर का है न, इसलिये इसका कहना नहीं मोड़ सकती। अच्छा ·· फिर कभी — हां, टा—टा।"

चार्ली अपनी जीत की खुशी में उछल कर बोला, "अब नहीं आ पायेंगी यह पिता जी, नहीं नहीं, माई डीयर फादर, डैडी ! इन्हें मैं मैट्रो में पिक्चर दिखाने ले जाऊंगा। आप कह रहे थे न, 'क्वावाडिस' लगी है। लवली-पिक्चर—वैल फादर चेयरियो।"

दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े उछलते कूदते बाहिर चले गये। मिस्टर कोस ने झल्ला कर अपने सिर के बाल नोच डाले और लम्बे लम्बे श्वास भर कर जो क्रोध में जोर से मेज पर ठोकर मारी तो चाय का सब सामान बिखर गया। पिरच प्यालियां चकना-चूर हो गईं। इस के साथ ही वह अपना पांव पकड़ कर सिसकारी भरते हुये कोच पर धप्प से बैठ गये।

—:-०-:—

४

रात्रि के लगभग दस बजे मिस्टर कोस नशे में झूमते हुए अपने ड्राइंग रूम में पहुंचे तो मिस बागल एक कौच पर प्रसन्न मुद्रा में बैठी किसी उर्दू शायर की ग़ज़ल की पंक्तियां गुनगुना रही थी। उसे हिन्दुस्तानी वेश भूषा में देख कर कोस साहिब भौंचक्के रह गए। ऊदे रंग की महीन साड़ी में से छन छन कर उस का संगमरमर सा दूधिया मांसल शरीर उन्हें बरबस अपनी ओर खींचने का निमंत्रण दे रहा था। पुराने ज़माने की देवदासियों की तरह उसने अपने काले घने रेशमी बालों को सिर के ऊपर गुच्छे की तरह बांध रखा था। जगह जगह लाल गुलाबी, नीले और बैंगनी फूल क़रीने से जड़े हुए अपनी बहार दे रहे थे। कोस को जूड़ी के बुखार की तरह झुन-झुनी आ गई। सुन्दर सुराही दार गर्दन की मरोड़ पर निगाह जमा कर पीछे से चुपचाप हाथ बढ़ाकर उस के नेत्र मून्द लिए। मिस बागल ने एक और नशीली अङ्गड़ाई लेकर मुरली की तरह बारीक मोहक स्वर में उनके हाथों पर हाथ रख कर कहा, "हैलो......चार्ली डार्लिंग; ओह .. बड़े शरारती हो... तुम्हारे पापा की भाषा में, यू .. नॉटी ब्वाय .. ।"

मिस्टर कोस के हाथों पर जैसे नागिन ने डस दिया। चौंक कर सामने आ गए। तो वह खड़ी हो कर सिर झुका कर बोली, "आप मिस्टर कोस; माफ़ कीजिए, हम लोगों ने शादी कर ली है।"

कोस उसे घूर कर बोले, "बागल कुछ समझ में नहीं आया कि तुम पागल हो या मैं......। तुम्हारा सिर तो नहीं फिर गया।"

"जी नहीं, दोनों ही ठीक है। हम दोनों बहुत अरसे से प्रेम करते हैं।"

मिस्टर कोस चिढ़ कर बोले," प्रेम प्रेम प्रेम .. क्या जहालत है ; मालूम है वह तेरा होने वाला बेटा था।"

मिस बागल तन कर खड़ी हो गई। भौंहें सिकोड़ कर बोलीं, "कैसा बेटा, किस का बेटा ; मेरी उमर क्या उस की मां कहलाने की है। और आप को ग़ैरत भी नहीं आती ! वह आप के बेटे है ; इस लिए मैं आप की इज्जत करती हूँ।"

"और मेरे साथ जो प्रेम करती थीं, वह नाटक था ?"

"बेमेल में तो कुछ ऐसा ही समझिए, आप को कई वार इशारा किया, लेकिन आप की आँखें मेरी ब्यूटी पर टिकी थीं। आप ने आप अपने को मेरी या किसी भी जवान लड़की की निगाह से नहीं देखा। खैर, मेरे लिए अब आप का दर्जा बहुत बड़ा है। मैं इल्तिजा करती हूँ कि हम दोनों को आशीर्वाद दीजिए।" इस के साथ ही वह सिकुड़ कर उनके सामने घुटनों के बल झुक गई। वह चौंक कर पीछे हट गए। फिर कुछ देर सोचते हुए मुंह पर भलमनसाहत की स्निग्धता ला कर बोले,

"लौंग लिब यू बोय ! (तुम दोनों दीर्घायु हो) !"

उन्हों ने अपना वरद हस्त उस के सिर पर रखा तो चार्ली गुनगुनाते और कोट घुमाते वहां आ पहुंचा। सामने अपने पिता को झुकी हुई बागल के सिर पर हाथ रखे देख कर बोला, "माई डीयर डैडी, प्लीज़ फॉरगिव मी !"

मिस्टर कोस ने उस के कन्धे पर प्यार भरा हाथ फेर कर कहा,

"तुम लोगों ने मुझे क्यों नहीं कहा। मैं और तुम्हारी मम्मी दोनों मिल कर धूम धाम से तुम लोगों का विवाह रचाते। खैर, खुश रहो ;"

मिस्टर कोस भारी कदमों से बाहिर चले गये तो चार्ली और बागल ने मुक्ति का लम्बा सांस छोड़ा। बागल ने चार्ली के कन्धे पर अपना सिर टेक कर कहा, "मैं तो बहुत डर गई थी।"

"इस में डरने की क्या बात है। हम ने कोई ग़लत काम तो नहीं किया ."

बागल अपनी कटीली निगाहों को उस पर फेंक कर बोली, अपने डैडी के दिल से पूछो। तुम्हारी जगह कोई और होता तो न जाने क्या करते ।"

वह हँस कर बोला, "नो नो .. डारलिंग, मेरे डैडी ऐसे फुकने जलने वाले नहीं। वह मुझे बहुत प्यार करते हैं। बाकी हैं जिन्दा दिल, उनका और मम्मी का विश्वास है कि पुरुष हो या स्त्री, उसे ढलती उमर में अगर ओपोजि़ट सैक्स जवान और कमसिन मिल जाए तो बुढ़ापा दूर भाग जाता है। जवान जिस्म की गरमी से नया खून गर्दिश करने लग जाता है ।"

बागल उस के गले में दोनों बाहें डालती हुई बोली, "बड़े शरारती हो ।"

चार्ली बोला, "कुछ और सुना ?"

"क्या ?"

बोलो; "मिस्टर स्मिथ ने किसी मिस दुलारी को उन के लिए फांस दिया है ।"

"अरे मिस दुलारी ·· सेठ मोहन लाल की · ।"

"हां ·· हां ·· तुम सब को जानती हो शायद ."

"जानती हूं, खैर छोड़ो। चलो, तुम्हारी अम्मी से मिला जाए ।"

चार्ली ताली बजाता हुआ बोला, "अरे छोड़ो भी इन मम्मी डैडी को उन के हाल पर। वह घर पर रहती ही कितने सैकिण्ड हैं। यह घर तो अच्छा खासा क्लब है। सभी आज़ाद हैं। जो जिस के जी में आए वह करे ।"

बागल बोली, "पहले जो था, वह था; अब मेरे रहते यह सब नहीं चलेगा मैं। इसे क्लब नहीं घर देखना चाहती हूँ ।"

"तुम्हारे चाहने से क्या होता है। जब घर के बड़े बूढ़े अभी अभी जैसे फ्रांस की किसी क्लब से यहां पिकनिक करने आए हों तो तुम उन्हें कैसे रोक सकती हो।"

बोली, "उन्हें नहीं रोक सकते तो इस ज़हर को अपनी जिन्दगी में घुलने से ज़रूर रोक सकते हैं। हमें अपने देश के चलन के साथ चलना होगा।"

"कैसे ?"

"पहले वायदा करो कि जो कहूँगी उसे मज़ाक़ में नहीं उड़ाओगे।"

चार्ली बोला, "मैं तुम्हारी बात को समझता हूँ डार्लिंग; मुझ में तुम से कम भारतीयता नहीं !

"तो ठीक है आज से हम लोग एक साथ खाएंगे। और ···।'

"एक साथ ···हां।"

चार्ली की विकृत मुद्रा पर बागल ज़ोर ज़ोर से हँस पड़ी। और उस की बांह झुलाती हुई बोली, "हर बात में दो और दो ·····।"

बात काट कर चार्ली बोला, "चार रोटियां ·····।"

दोनों खिल खिला-कर हंस पड़े। तभी कमला ने प्रविष्ट हो कर पुकारा "चार्ली भैया और भाभी, अकेले अकेले तुम ने शादी कर ली, हमारी मिठाई।"

चार्ली बोला, "जब कहो।"

"भाभी के हाथ की बनी खाऊंगी।"

"मंज़ूर······एडमिटिड। और तुम कब यह मौका दोगी ?"

कमला उदास होकर बोली, "यह तो अब डैडी बैटर जानते हैं।"

"क्यों तुम्हारे सुरेन्द्र साहिब दुम दबा गए ?"

"वह तो तैयार हैं लेकिन डैडी मुझे काले साहिब से······।"

आगे वह चुप हो गई तो चार्ली ने उसके सिर पर हाथ फेर कर कहा, "किस से, स्मिथ से ?"

"हां ····काला रीछ; मुझ से शादी करने का विचार करते हुए

उसे शर्म भी नहीं आई।"

चार्ली बोला, "वह तो डैडी की उमर का है। नहीं, मैं यह अत्याचार नहीं होने दूंगा।"

"डैडी ने कल रात तय कर दिया है।"

बागल बोली, "लेकिन बेबी, उन के तय करने से क्या होता है। हम लोग यह गुनाह नहीं होने देंगे। तुम ज़रा डट जाओ। हम दोनों तुम्हारा साथ देंगे।"

कमला रुआँसे स्वर में बोली "वह नहीं मानेंगे; तुम भाभी, डैडी को नहीं जानती।"

"तुम लोगों से ज्यादा जानती हूँ। वह मेरे मित्र भी रह चुके हैं। दिन रात कई दिन तक उनके साथ रह चुकी हूँ। यदि नहीं मानेंगे तो और कोई प्रबन्ध किया जाएगा।"

चार्ली मुट्ठियां भींच कर बोला, "मेरा तो जी चाहता कि उस स्मिथ के बच्चे का सिर फोड़ दूं।"

बागल बोली, "सिर फोड़ने का वक्त आएगा तो उस का भी इन्तज़ाम हो जाएगा। अभी जो मैं कहती हूँ, वही करो।"

"क्या ?"

"कल मम्मी से डैडी पर दबाव डालने को कहो।"

चार्ली बोला, "वह इस में कुछ नहीं करेंगी। वह तो आज अपने किसी मित्र के साथ कुछ दिन के लिए बाहर जा रही हैं। और उन के आने से पहले डैडी इसे स्मिथ के हाथों सौंप देंगे।"

बागल ने पूछा, "तुम्हारे पिता जी उन के बारे में जानते हैं ?"

"अरे पगली, उन का तो इस सिलसिले में पैक्ट हो चुका है।"

"पैक्ट...... कैसा पैक्ट ?"

"यही कि कोई किसी की आज़ादी में दखल नहीं देगा। बस यूं

समझो कि नेहरू जी का पंचशील अगर कहीं फला दीखता है तो हमारे इस घर में।"

कमला बोली, "घर में तो क्या, यूं कहो कि हमारी मम्मी और डैडी में।"

चार्ली बोला, "खैर, कोई फर्क नहीं पड़ता।"

कमला से पूछा, "तो फिर मेरे लिए क्या कहते हो ?"

बागल बोली, "बेबी तुम फिकर न करो; बस मुझे समय समय पर खबर भर देती रहो। स्मिथ के बच्चे का ऐसा उल्लू बनेगा कि देखोगी; गधा कहीं का ....।" उसी समय बाहिर से मिस्टर कोस की आवाज़ सुनाई दी। वह भारी आवाज़ में बोले, "किसे गधा बना रहे हो. चार्ली .....क्या कमला भी यहीं है !"

पिता की आवाज़ सुनकर आशङ्कित स्वर में कमला बोली, "डैडी ने शायद हमारी सब बातें सुन लीं।"

कोस ने भीतर आकर बैठते हुए कहा, "हां मैं बाहिर था। डरो नहीं बेबी ! मैं तुम्हारी मर्जी के बिना कुछ नहीं होने दूंगा। इस घर में कोई किसी को किसी बात के लिए मजबूर नहीं कर सकता।" चार्ली बोला, "पर आपने तो मिस्टर स्मिथ से सब तय कर दिया है।"

कोस जोर से हँस कर कोमल और धीमे स्वर में बोले, "दिस इज़ आॅल डिप्लोमेसी; यह सब बिजनैस पालिसी है। तुम लोग फ़क्त मेरा काम भर हो लेने दो। सुरेन्द्र को समझा देना कमला, वह यहां कुछ दिन के लिये न आए। और अगर आये तो तुम्हें मिलने की कोशिश न करे। वक्त पर मैं तुम्हें इशारा कर दूंगा। समझे तुम लोग ....ओ ..के गुडनाईट !"

पिता के जाने पर कमला प्रसन्नता से उछल कर बोली, "डैडी कितने अच्छे हैं।"

"हाँ, साथ में डिप्लोमेसी में भी श्री कृष्ण मैनन से कम नहीं।"

चार्ली की इस बात पर बागल और कमला हँस पड़ीं। बागल कुछ

कहने का मूड बना रही थी कि शीला आ गई। चार्ली और बागल उसके सामने घुटनों के बल सिर झुका कर बैठ गये। बागल को उठा कर उसने उसके सुन्दर गुलाबी गालों पर प्यार की छाप लगा दी। उसके गहरे गुलाबी होंटों की बहुत सी लिपस्टिक उसके दोनों गालों पर चिपक गई। बागल सिर नीचा किये गालों पर हाथ फेरने लगी। शीला ने चार्ली के सिर पर सस्नेह हाथ फेरते हुए कहा, "चार्ली, मेरे बेटे ! तुम्हारा चुनाव सचमुच बहुत बढ़िया है। *मे गॉड ब्लैस यू विद हिज़ चौयसिस्ट गिफ्टस !" फिर कमला की ओर स्नेहमयी दृष्टि से देख कर बोली, "बस अब कमला की बारी है। सुरेन्द्र कहाँ है आजकल ? मैं ने उसे कई दिन से नहीं देखा। उसे मिलने के लिये कहना। और हां ...... तुम भी कहीं चार्ली की तरह चुपके से ब्याह न कर लेना।" चार्ली बोला, "इस बात का जिम्मा मेरे ऊपर मम्मी; मैं ही तो निमंत्रण भिजवाऊँगा।"

शीला अपनी कलाई देखती हुई बोली, "ओ के माई बुआय...... गॅटिंग टू लेट ... विश यू गुड लक !!"

शीला के चले जाने पर बागल बोली, "डार्लिंग, यह घर बड़ा अजीब है। किसी का किसी पर कोई दबाव नहीं, बन्धन नहीं; सभी दोस्तों की तरह एक दूसरे से मिलते हैं। और घड़ी भर हँस खेल कर अपने अपने प्रोग्राम में लग जाते हैं।"

कमला बोली, "यही तो हमारे घर की खूबी है।"

बागल कुछ गम्भीर होकर बोली, "खूबी तो है। लेकिन हर बात की कोई हद ज़रूर होनी चाहिए बेबी ! और नहीं तो रात के खाने पर या दिन के खाने पर तो घर के सभी मेम्बर एक टेबिल पर इकट्ठे हो जाएं।"

चार्ली बोला, "बागल डार्लिंग ! जो यह हो रहा है, उसमें दखल न दो तो ठीक है। तुम्हारा अपना सिर दुखने लगेगा।"

वह बोली, "नहीं जी नहीं ! अब तुम कुछ मत बोलो; मैं अपने

---

*भगवान तुम्हें चुने हुए तोहफे प्रदान करे।

मुताबिक जब तक सब लोगों को न कर लूंगी, चैन से नहीं बैठूंगी।

कमला हँस कर बोली, "भाभी, क़दम तो अभी घर में ठीक से रखा नहीं पर इतना बड़ा पहाड़ पहले से ही सिर पर लाद रखा है। तुम्हारा भी जवाब नहीं। क्यों मुसीबत मोल लेती हो। जा कर कहीं हिल-स्टेशन पर हनी मून मनाओ।"

चार्ली बोला, "सुनी पागल इसकी बात; क्या स्मिथ के साथ यहां रहकर तुम हनीमून मनाना चाहती हो। जो हमें बाहिर धक्का दे रही हो!"

कमला अपने पतले होंठों को सिकोड़ कर बोली, "भैया, तुम बहुत वैसे हो! ऐसे छेड़ोगे तो तुम से बात नहीं करूंगी।"

चार्ली उसके निकट आकर बुरा सा मुंह बना कर खड़ा हो गया। वह पीठ मोड़ कर खड़ी हो गई तो उसे कन्धों से पकड़ कर अपनी ओर मुँह करता हुआ बोला, "अरे, रूठ गईं मही! नहीं·····नहीं ··· मान जाओ मेरी बे.ी! मान भी जाओ······मेरी कमला बहिन! अच्छा नहीं मानेगी!"

उसकी पीठ पर ज़ोर ज़ोर से गुदगुदाने लगा। वह पहले रूठने का नाट्य करती रही। फिर आखिर में ज़ोर से हँस दी।

चार्ली बोला, "बस बस मान गई। अब कोई डर नहीं, हां...।"

कमला बोली, "लेकिन वायदा करो, उस कलमुँहे बूढ़े भैंसे के साथ मेरा नाम न जोड़ोगे।"

"पर वह तो बड़ा काम का आदमी है। और तुम्हारे नाम की माला जपता है।"

"भाड़ में जाय उसका काम और वह। मैं उस उल्लू का नाम भी सुनना नहीं चाहती। जब भी कभी रास्ते में मिल जाता है तो ऐसे घूर कर देखता है कि मुझे कच्चा खा जाएगा। एक दिन तो पार्क में मेरी बाँह पकड़ कर भद्दी भद्दी बातें करने लगा। जी में तो आया कि बतीसी निकाल दूं, लेकिन डैडी का ख्याल करके चुप रह जाना पड़ा।"

बागल बोली, " वह पहुंचा हुआ बदमाश है। उड़ती चिड़िया के पर कतरता है।"

चार्ली मूंछों पर हाथ फेर कर बोला, "लेकिन यहां भी अपने को चार्ली कहते हैं। ऐसा चक्कर दूंगा साहिब बहादुर को कि दिन में तारे दिखने लगेंगे। अभी उसने चार्ली का हँसोड़ रूप ही देखा है। इस रूप से परिचित नहीं।"

तभी नौकर ने आकर सुरेन्द्र के आने की सूचना दी। कमला बागल की ओर लजा कर देखने लगी तो वह कोहनी मार कर हंसती हुई बोली, "जाओ, खूब मिलो।"

फिर नौकर से बोली, "उन्हें भीतर बिठाओ, यह आती है। उसे सब ठीक से समझा देना बेबी, हम भी उसे मिलेंगे। घबराना नहीं। सब ठीक हो जाएगा।"

नौकर के जाने पर बागल ने कमला के कान में कुछ कहा जिसपर दोनों मुस्करा पड़ीं। कमला भाग कर चली गई। चार्ली बोला, क्यों जी हमसे भी चोरी !" वह हँसती हुई बोली, "कुछ ऐसा ही समझो। हर बात तो आपको बताई नहीं जा सकती।"

चार्ली उसे पकड़ने के लिए झपटा। वह उछल कूद मचाने लगी। चार पाँच लम्बे लम्बे चक्कर काटने के बाद बागल का हाथ उसके हाथ में आ गया। वह झटका देकर भागने लगी पर उसके सिर के बाल उसके हाथ में आगए। उसने उसके मुँह को अपनी ओर घुमाना चाहा तो दीवार पर हाथ बढ़ा कर उसने बत्ती बुझा दी। कुछ क्षण हँसी के बाद उसके मुँह से सिसकारी के साथ निकला, "हाय....मैं मर गई। तुम बड़े शैतान हो।"

अन्धेरे में दोनों की हँसी का फव्वारा फूट पड़ा।

[५]

एक रैस्टोरैण्ट के कैबिन में रात के ग्यारह बजे मिस्टर स्मिथ एक युवती के हाथ अपने हाथों में दबाते हुए बोले, "सब तुम्हारे लिए तो कर रहा हूँ डेज़ी। एक बार मिस्टर कोस को अपने चक्कर में आ तो जाने दो।"

डेज़ी ने ज़ोर से अंगड़ाई ली तो उसके ब्लाउज़ के ऊपर के दो तीन बटन खुल गए। स्मिथ की चोर निगाहों को बटनों के पीछे कुछ टटोलते हुए देखा तो मुस्करा कर बोली, "क्या देख रहे हो?"

"नहीं बताएंगे।"

वह बटन लगाती हुई बोली, "शादी से पहले निगाह मत दौड़ाओ।"

"अरे, शादी तो अपनी हो चुकी समझो। रसम कभी भी पूरी हो जाएगी।"

वह बोली, "कहीं मिस्टर कोस की लड़की कमला के चक्कर में पड़कर मुझे धोका न दे देना, तबाह हो जाऊंगी। मुझे डर है कि कहीं तुम्हारी हरकतों से मुझ में कोई गड़बड़ न हो जाय।"

"अरे गड़बड़ कैसी; तुम फ़िकर छोड़ो। अगले सण्डे को गिरजे में अपनी शादी पक्की। फिर तो किसी गड़बड़ का डर नहीं।"

वह सन्दिग्ध स्वर में बोली, "मुझे तो पता चला है कि कमला को तुमने उसके बाप से खुद मांगा है।"

"किस खुशी में! मिस दुलारी को फँसा देने की खुशी में। आजकल वह कोस के साथ पींगें झूल रही है।"

वह लापरवाही दिखाता हुआ बोला, "मरने दो न, हमें उससे क्या मतलब ; रुपया तो कुछ अपने हाथ भी लगा है।"

"कितना हाथ मारा ?"

"कुल दस हज़ार हाथ लगे।"

वह चमक कर बोली, "तो मेरा इनाम ? दुलारी को पढ़ाया तो मैंने ही था।"

"बोलो, क्या दूँ तुझे ?"

उठ कर खड़ी होती हुई फिर एक बार अंगड़ाई ले कर और हाथ की अंगुलियां चटका कर बोली, "यह सब रुपया कल मुझे दे दो।" स्मिथ ने गहरी अनुभवी आंखों से उस की ओर देखा फिर मुस्करा कर बोला, "यह भी कोई बड़ी बात कही। यह तो यहां से सीधे मेरे घर चलना, अभी चैक दे दूंगा।"

वह बोली, "अब जेब में कुल कितने हैं।"

"कोई ज्यादा नहीं······तुम वहीं······।"

उसने झपट कर उस के कोट की जेब में हाथ डाल दिया। परस निकाल कर खोलती हुई बोली, "अरे, यह तो सौ सौ के नोटों से भरा है।" जल्दी जल्दी गिन कर बोली, "दो हज़ार हैं। चलो बाक़ी आठ हज़ार घर चल कर दे देना।" उस ने नोट तह करके अपनी चोली में डाल लिए और बोली, "चलो······।"

"कहां······अभी तो आए ही हैं जरा मौज मेला तो हो जाए। आ जाओ······न······क्यों तड़पा रही हो। अब तो फ़ीस पेशगी वसूल कर ली।"

वह तुनक कर बोली, "कैसी फीस ! क्या मैं किराए पर चढ़ती हूँ। तुम ने मुझे से कितना कमाया है। पहले क्या था तुम्हारे पास, क्या मैं भूली हूँ। यह सब तुम्हारे ठाठ मेरी बदौलत नहीं हैं तो क्या ?"

"यह मैं कब इन्कार करता हूं डार्लिंग।"

"तो फिर यह बात क्यों बोली ?"

"भूल हो गई······अब तो मेरा सब कुछ तुम्हारा ही है न।"

"तुम बहुत चालबाज़ मालूम पड़ते हो। कब रंग बदल लो, क्या ठिकाना।"

वह लपक कर उसे पकड़ता हुआ बोला, "तुम तो ऐसे ही बिगड़ जाती हो। अच्छा बैठो कुछ खा पी तो लो। फिर यहां से सीधे चल कर तुम्हें बाकी आठ हज़ार का चैक दे कर फिर बात करूंगा। बोलो, अब तो मंज़ूर है न।"

वह मुस्कराती हुई बोली, "तुम मर्द लोग बहुत होशियार हो, अपना काम निकल जाने पर फिर किस से बात करते हो। कल कोई और दूसरी डेज़ी ढूंढ लाओगे।" घण्टी सुन कर बैरा आया और मीनू पर आर्डर ले कर चला गया। थोड़ी देर में खाना मेज़ पर आ पहुंचा। स्मिथ ने दो कांच के गिलासों में स्कॉच डाली और मिस डेज़ी की आंखों में देखते हुए दो सफ़ेद गोलियां एक गिलास में इस सफ़ाई से टपका दीं कि वह देख न सकी। खाना खाते खाते मिस डेज़ी उस पर अचेत हो कर लुढ़क गई। मिस्टर स्मिथ ने उसे लम्बे कौच पर लिटा कर मुस्कराते हुए अपना कोट उतार कर बिजली के जलते हुए लैम्प पर गिरा दिया।

× × × ×

रात के चार बजे के लगभग मिस डेज़ी को जब होश आया तो कैबिन में अन्धेरा था। उस ने टटोल कर देखा तो उस का ब्लाऊज़ खुला थे। चोली के भीतर दबे हुए दो हज़ार के नोट गायब थे। वह उचक कर उठ खड़ी हुई। बत्ती जला कर देखा तो स्मिथ का वहां नामो निशान न था। उसने अपने अस्त व्यस्त खुले हुए वस्त्रों को ठीक किया और तेज़ी से अपने घर की ओर चल दी।

प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ही उस ने मिस्टर कोस के टैलीफोन का नम्बर मिलाया और क्रोध में भुनभुनाते हुए स्मिथ का सारा शैतानी चरखा उन पर प्रकट कर के अपने आप में ही बल खाती हुई होंठों पर जीभ फेर कर बोली, "बेटा, कहां जाएगा। दुनियां भर को फंसाता फिरता है। अब पता चलेगा साहिब बहादुर को। कमबख्त काला भैंसा; बद्धौप कहीं का। मुझे तो इस ने बरबाद किया पर मैं भी अब इसे चैन से जीने न दूंगी।" उसके साथ ही उस ने सिगरेट केस में से सिगरेट निकाल कर सुलगाया।

× × × ×

६

सूरज डूब चुका था। बादलों पर छाई हुई लालिमा वातावरण को सुहाना और समय को रेशमी पुट दे रही थी। उस की लाल लाल आभा मिस्टर कोम के ड्राइंग रूम में झांक रही थी। एक बड़े सोफ़े पर घरेलू खुले रेशमी कपड़े पहने हुए कमला, बागल और शीला परस्पर वार्तालाप कर रही थीं। बागल ने एकाएक बात का रुख पलटते हुए कोमल स्वर में कहा, "मम्मी, कमला के विवाह का भार आप को अपने ऊपर ले लेना चाहिए। सच बात तो यह है कि पुराने हिन्दुस्तानी रस्मोरिवाज ही इस काम के लिए सही बैठते हैं। ब्याह शादी करना बच्चों का काम नहीं। जो जहां जब चाहे कर लें।"

शीला उस की बात से व्यस्त हो कर बोली, "तो मैं इस में क्या करूं। तुम लोग जो मुनासिब समझो, सुरेन्द्र तो तैयार ही है। अगर तुम अपने डैडी की सलाह लेना चाहो तो मैं.........।"

बात काट कर बागल बोली, "उन्हों ने अपनी सलाह दे दी है।"

शीला ने आश्चर्यान्वित हो कर फटी फटी आंखों से देख कर कहा "क्या सच ? मैं ने तो सुना था कि वह मिस्टर स्मिथ से इस की शादी तय कर चुके हैं ?"

बागल बोली, "यह सब तो भरमाने की बातें थीं। यूं कहिए कि

यह उन की बिज़नेस डिप्लामेसी (व्यापारिक दाव-पेच) थी। वह असल में कमला की शादी सुरेन्द्र से ही करना चाहते हैं।"

उस ने शीला के कान में कुछ कहा तो वह हँस कर बोली :

"तो ठीक है। रास्ता निकालो कि तुम लोगों का काम भी निकल जाय और उनके बिज़नेस में अड़चन भी न आए। बाक़ी एक बात से सावधान रहना।"

बागल ने पूछा, "क्या ?"

बोली, "स्मिथ बहुत ही खतरनाक आदमी है। पहले कमबख्त मुझ पर निगाह जमाए था। कोई शक्ल सूरत होती तो एक बात भी थी चलो कुछ दिन हँसी-खुशी, उछल कूद में ही बीत जाते। अब उस काले भैंसे से तो बात करने में भी घिन होती है। हँसता है तो गहरे नीले होंठ ऊँचे चढ़ जाते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि कोई अफ्रीका के जंगलों का रहने वाला गुरिल्ला किसी पशु का खून पी कर आया हो; मैं ने तो उस कुत्ते के आगे और एक टुकड़ा फेंक कर अपनी टांग बचाई।"

बागल बोली, "मेरे ख्याल में तो कल ही किसी दूसरी जगह जा कर इस की और सुरेन्द्र की शादी कर देनी चाहिए। डैडी का काम निकल जाने पर जब वह गधा इस बात पर आएगा तो अदालत का मैरिज सार्टिफ़िकेट उस के सामने रख दिया जाएगा। इस से डैडी तो साफ़ बरी हो जाएँगे और वह………।"

शीला हँस कर बोली, "बिलकुल ठीक; अच्छा अब मुझे तो जाने दो। मेरा डिनर मिस्टर डिसूजा के साथ है।"

कमला एकाएक चौंक कर बोली, "नहीं मम्मी, आज तुम कहीं मत जाओ। मुझे आज डर लग रहा है।"

शीला ने उस की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "मैं मिस्टर डिसूजा से डिनर के लिए वायदा कर आई हूँ और फिर बेबी, यह तुम्हारी भाभी

जी साथ है, फिर क्यों डरती हो ? यह तो मुझ से कहीं ज्यादा बोल्ड (दिलेर) है। अच्छा मैं चली ।"

बागल ने उस का हाथ पकड़ कर बिठाते हुए कहा, "नहीं, मम्मी डीयर। आज हम सब यहीं घर पर ही डिनर के लिए बैठेंगे।"

शीला चौंक कर बोली, "ओ, नो नो, माई बेबीज, थैंक यू ! आज तो मेरे दिए हुए वर्ड की इज्जत रखो, कल तुम्हारे साथ.......।"

कमला बोली, "अभी डिनर में बहुत वक्त है। अभी टेलीफोन पर उन्हें मना कर दो। मैं आज नहीं जाने दूंगी। फिर शीला के गले में अपनी दोनों बाहें डाली हुई बोली, "मेरी अच्छी मम्मी, तो आंज क्या मेरा इतना थोड़ा सा भी कहना न मानोगी ?"

उसके हाव-भाव को देख कर बागल मुंह में ही हंस कर रह गई। शीला ने आपत्ति प्रकट की, 'लेकिन बेबी सोशल लाइफ़ में वायदे की कोई कीमत होती है न !"

कमला जिद्द करती हुई बोली, "नहीं नहीं मम्मी, तुम जाओगी तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगी। मैं यहां नहीं — —।"

कठिनाई में फंस कर शीला बोली, "ओफ़ क्या बचपन है। मैं कह रही हूं कमला, मेरी बेबी ! क्यों मेरी इस सुहानी शाम का प्रोग्राम बिगाड़ रही हो। वैसे मैं जल्द लौट आऊंगी। तुम——।"

कमला ने पुनः हठ किया, "नहीं मम्मी नहीं, तुम आज मत जाओ।"

शीला परेशानी में इधर उधर देखने लगी। बागल बड़े ही मीठे स्वर में बोली, "मान भी जाइए मम्मी। बच्ची ही तो है, कभी कह ही बैठी तो आप ही जिद छोड़ दें।"

शीला झुंझला कर बोली, "यह ज़िद्द का सवाल नहीं बागल, यह मेरी ऑनर (इज्जत) का सवाल है। मेरी वजह से और भी कई लोग आ रहे हैं' यदि वक्त पर न पहुंच पाई तो मिस्टर डिसूजा को मेरी वजह से सबके सामने शर्मिन्दा होना पड़ेगा।"

कमला बोली, "तो मैं भी साथ चलूंगी।"

शीला अनुनय-पूर्ण स्वर में बोली, "बागल, तुम इसे समझाओ न बेटी !"

इस पर बागल हंसती हुई बोली, "मम्मी आज तो हम लोग आपको अपने साथ खाना खिलाएंगे और खूब जी भर कर बातें करेंगे। यह फ़ैसला हो चुका है। आप के बेटे भी यही कह रहे थे।"

शीला व्यस्त हो कर बोली, 'अच्छा, यह आप लोगों ने प्री-प्लान (पूर्वनिश्चित कार्य क्रम) किया है।

"अच्छा मम्मी, यह बताओ आप डैमोक्रेसी में विश्वास करती हैं न !"

"ऑफ कोर्स (बेशक); देखा नहीं तुमने, हमारे घर में सब आज़ाद है।"

बागल गम्भीर हो कर बोली, 'वह तो ठीक है मम्मी। मगर डैमोक्रेसी में वोट भी तो गिने जाते हैं।

अब के शीला की हँसी निकल गई। बोली, "अच्छा, तो यूं कहो, कि आज तुम लोगों ने मुझे किसी भी तरह न बख्शने का फ़ैसला कर लिया है।"

कमला हँसी दबाती हुई बोली, "वोट जो ले लो मम्मी !"

"चल शरारती कहीं की। चोर का गवाह गिरहकट।" बागल ज़ोर से ताली बजा कर हँसती हुई बोली, "जो भी समझ लो मम्मी !"

वह आगे बढ़ कर शीला से लिपट कर बोली, "मेरी अच्छी अच्छी मम्मी ! मेरी प्यारी प्यारी मम्मी, अब तो मान गई।"

कमला भी लिपट कर चिल्लाते हुए बोलीं, "हिप हिप हुर्रे, मम्मी डीयर ज़िन्दाबाद।"

एकाएक मिस्टर कोस आ पहुंचे। तीनों को आपस में लिपटी हुई देख कर बोले, "वाह, आज तो खूब प्यार हो रहा है। शीला डार्लिंग ! आज क्या बाहिर का प्रोग्राम तो नहीं तुम्हारा।"

वह करुण नेत्रों से पति की ओर देख कर बोली, "है तो सही डीयर, लेकिन यह शरीर लड़कियाँ किसी भी तरह आज मुझे छोड़ नहीं रही। कहती हैं मेरे साथ डिनर खाए बिना इनका हाज़मा खराब हो जाएगा।"

मिस्टर कोस हँस कर बोले, "यह बात है; चलो, तो मैं भी तुम लोगों के साथ शामिल हूँ। ऐसे मौके कब रोज़ रोज़ हाथ आते हैं।"

कमला उछल कर बोली, "सच डैडी ! तुम बहुत अच्छे हो।"

शीला घड़ी देख कर चिन्ताग्रस्त होती हुई बोली, "ऑल गॉन अवे। सब प्रोग्राम गड़बड़ हो गया।"

बागल ने मुस्कराते हुए कहा, "क्या करें मम्मी, डेमोक्रेसी है न!"

"अच्छा, अच्छा ज्यादा नहीं बनो, शैतान कहीं की। यह सब तुम्हारी ही सूझ जान पड़ती है।"

और फिर धीरे धीरे मुस्करा दी। मिस्टर कोस बोले, "बात यह है शीला डार्लिंग ! अब इन लोगों का ज़माना है। तुम लोग रिटायर्ड। अब जैसा यह लोग कहें, वैसा ही करने में खैरियत है। इनका एक नया आर्डर और भी है। जानती हो ?"

"क्या ?"

"खाने पीने के वक्त पर घर के सभी मेम्बर एक टेबिल पर इकट्ठे हो जायें।"

चार्ली ने लम्बे लम्बे डग भर कर अन्दर आते हुये बात को बढ़ावा दिया, "यानि कि आज से अपना यह घर क्लब नहीं घर बनेगा। क्यों बागल? अरे भाई कमला कुछ बोलो न तुम भी !"

कमला बोली, "हां भैया, यह सब भाभी का ही प्रोग्राम है।"

कोस बोले, "ठीक है ! ठीक है; मुझे कोई एतराज़ नहीं, क्यों शीला डार्लिंग। तुम्हें भी शायद……।"

अभी बात पूरी भी नहीं कर पाये कि नौकर ने आकर कहा, "बॉस, स्मिथ साहिब।" मिस्टर कोस चलते हुये बोले, "अच्छा भाई, हमारी तो पेशी

का वक्त आ गया।"

वह दरवाज़े तक पहुंचे तो कमला बोली, "हां, डैडी; खाने के वक्त······।"

"मुझे याद है मेरी बेटी।" उसके निकट आकर धीमे स्वर में बोले, एक बात का ध्यान रखना।"

"क्या डैडी ?"

"स्मिथ के रहते उधर से मत गुज़रना, तुम भी बागल; यह बहुत पाजी है। इसकी सब करतूत मुझे किसी डेज़ी नाम की लड़की ने फोन पर बता दी है।"

बागल बोली, "मैं क्या उससे डरती हूं मिस्ट······नो, नो डैडी ? आप बेफ़िक्र रहें। उसका ऐसा इन्तज़ाम किए देती हूं कि अपनी नौकड़ी भूल जाएगा।" मिस्टर कोस सिर हिलाते हुए और यस, यस बोलते हुए बाहिर चले गये। कमला मूड में आ कर बोली, "भाभी एक बढ़िया सा गाना सुनाओ।"

शीला बाहिर की तरफ़ संकेत करती हुई बोली, "अभी नहीं।"

तभी नौकर ने अन्दर आकर खबर दी, "मालकिन, स्मिथ साहिब बहू जी को कुछ भेंट देने आ रहे हैं।"

शीला बोली, "क्या ?"

कमला का मुंह एकाएक मुरझा गया। चार्ली उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोला, "डरने की कोई बात नहीं। तुम उस खिड़की से कूद कर बाहिर चली जाओ।

शीला ने योग दिया, "हां, ठीक है। उसके जाने पर चली आना।"

कमला तुरन्त खिड़की के बाहिर हो गई। बागल और शीला एक कोच पर गम्भीर हो कर बैठ गईं। बाहिर से स्मिथ की आवाज़ सुनाई दी। वह चार्ली को पुकारते आ रहा था। मिस्टर कोस के साथ जब कमरे में दाखिल हुआ तो अनजान बनते हुए कोस बोले, "ओ हो, शीला डार्लिंग !

आज तो तुम भी यहीं हो। बहुत ठीक, बहुत ठीक।"

स्मिथ हँसते हुए बोला, "अरे भई, अगर तुम जैसे लोग सब लापरवाह हो जाएं तो घर कैसे चले। बेटे की बहू घर में हो तो सास कहां जा सकती है।"

"गुड नाइट मैडम!"

शीला शिष्टाचार वश सिर झुका कर मीठे स्वर में बोली, "गुड नाइट मिस्टर स्मिथ!"

मिस्टर कोस व्यंग्य बाण छोड़ते हुए बोले, "अरे स्मिथ, तुम तो बहुत समझदार होते जा रहे हो यार।"

"जी हां, सब हज़ूर की मेहरबानी है।"

फिर बागल के निकट आकर बोला, "मिसेज चार्ली कोस! मैं मुबारिकबाद पेश करता हूं।

एक खूबसूरत डिबिया खोल कर सोने का जड़ाऊ नैकलिस और असली हीरों के टाप्स भेंट करता हुआ बोला, "यह इस मुबारक मौका पर तुम्हारे लिये।"

और फिर जेब से एक रिस्टवाच निकाल कर बोला, "यह तुम्हारे लिए चार्ली।"

नव दम्पति ने विशेष प्रकार से झुकते हुये उपहार ले लिये और थैंक्स कह कर पुनः कौच पर बैठ गए। स्मिथ बोला, तो मिस्टर कोस, व्हट-अबाऊट ए काकटेल पार्टी?"

"यह सब अपनी भाभी से पूछो।"

शीला मनीबेग से छोटा आइना निकाल कर होंठों पर लिपस्टिक रगड़ती हुई बोली, "घर के मालिक तो आप हैं न, कॉकटेल के लिये मैं भी सिफ़ारिश करती हूं, मिस्टर स्मिथ।"

हँसते हुये स्मिथ बोला, "थैन्क्स-ए-लाट (अनेकानेक धन्यवाद)"

मिस्टर कोस बोले, "अरे, इन एडवांस।"

"जी……।"

सभी हँस पड़े। स्मिथ की गिद्ध दृष्टि इधर-उधर शायद कमला को ढूंढ रही थी। वह कुछ बोलने को ही था तो कोस बोले, "चलो स्मिथ नहीं तो देर हो जायेगी।"

स्मिथ एक दृष्टि और चारों तरफ़ दौड़ा कर बोले, "चलो; बेबी कहीं गई है क्या?"

"शीला ने उसकी बात को उड़ाते हुये कहा, "होगी कहीं, हमारे पास उसकी डायरी रहती है क्या। शायद किसी लड़की के साथ पिक्चर देखने चली गई होगी"

स्मिथ झुक कर सब को 'बाई! बाई!' करता हुआ मिस्टर कोस का हाथ पकड़ कर बाहर चला गया।

पोस्टमैन ने एक टेलीग्राम शीला को दिया। चार्ली ने हाथ बढ़ा कर और अपनी मम्मी से लेकर लिफ़ाफा खोल कर पढ़ा और प्रसन्न मुद्रा में ज़ोर से बोला, "रमेश भैया का तार है मम्मी! इंग्लैंड से लौट आये हैं। यह तार उन्होंने बम्बई हवाई अड्डे से भेजा है आज ही रात को दस बजे यहां पहुंच जायेगें।"

बागल एक कोने में बैठी प्यानो टुनटुना रही थी। अपने बालों का गुच्छा बनाती हुई बोली, "तब तो सब लोग एक साथ उन्हें रिसीव कर लें। बहुत खुशी की बात है। आज के डिनर में घर का एक मेम्बर और बढ़ जायेगा।"

शीला भाग कर बागल से लिपटती हुई उसका मुँह चूम कर बोली, "ओ माई गॉड, आज मैं कितनी खुश हूँ।"

फिर चिल्ला चिल्ला कर कमला को पुकारने लगी। उसके कमरे में दाखिल होते ही बागल को छोड़ कर उसे लिपटती हुई बोली, "कमला आज बहुत बड़ा दिन है। तुम्हारे रमेश भाई साहिब आ रहे हैं। अभी दस बजे। वह खुशी से उछलती हुई बोली, "सच मम्मी।"

"हां बेबी हां, यह देखो तार।"

"तब तो बहुत मजा आयेगा। भैया चार्ली चलो न उन्हें स्टेशन पर रिसीव करें।"

चार्ली बोला, "बम्बई से लगभग साढ़े नौ बजे हवाई जहाज़ पालम पहुंच जायेगा, और अब बजे हैं साढ़े आठ। सब लोग नौ बजे तक बिल्कुल तैयार हो जाओ।'"

शीला बोली, "बागल तुम लोग सब पालम चले जाओ, मोटर ले कर। मैं अपने सब दोस्तों को यह खुशखबरी टेलीफ़ोन पर देना चाहती हूँ। कोई बेढब बात न होनी चाहिये, जिससे उसके दिल को ठेस पहुंचे।"

मिस्टर कोस ने तेज़ी से अन्दर आते हुए कहा, "शीला डार्लिंग, मैं स्मिथ के साथ एक जगह जा रहा हूँ। तुम······।"

कमला बोली, "दस बजे से पहले लौट आना डैडी! रमेश भाई साहिब आज ही दस बजे यहाँ पहुंच रहे हैं।"

मिस्टर कोस उसके हाथ से तार ले कर पढ़ते हुए प्रसन्नचित्त हो बोला, "ओ माई गुडनैस; ओ के बेबी! मैं जल्द आ जाऊंगा। बहुत जरूरी काम से जा रहा हूं।"

उनके जाने के बाद शीला बोली, "चार्ली तुम लोग जल्दी से तैयार हो कर चले जाओ। मैं फ़ोन पर सब को खबर दे कर किचन में जाती हूं। मेरा रमेश आ रहा है। माई लवली सन! स्वीट······ब्वाय।"

वह सिर को ज़ोर से झटका दे कर अपने सुनहरी लच्छेदार बालों को मुंह पर से हटाती हुई चुटकी बजा कर कोई अंग्रेज़ी कविता गुनगुनाती हुई बाहिर चली गई।

[७]

पालम हवाई अड्डे पर विचित्र प्रकार की चहल-पहल थी। विशेष प्रकार के सजे हुए स्त्री-पुरुषों का अच्छा-खासा मेला लगा था। बम्बई से आने वाले हवाई जहाज़ में अभी बीस मिनट की देरी थी कि चार्ली बागल के हाथ में हाथ डाले जा पहुँचा। वह रिस्ट देखती हुई बोली, अभी बहुत समय है, चलो कैण्टीन में एक प्याला कॉफ़ी हो जाय। चार्ली उसकी बाँह हिलाता और सिर घुमाता हुआ उसे लेकर कैण्टीन में जा घुसा। खाली कैबिन में बैठ कर दोनों ने परदा खींच लिया। बैरा आर्डर लेकर चला गया।

बागल उसका हाथ अपने हाथ में दबाती हुई बोली, "यह तुम्हारे भाई साहिब हैं किस मिज़ाज के! अब तो करेले पर नीम चढ़ गई होगी।"

वह उसकी अंगुलियों के पपोटों को चूमता हुआ बोला, "नहीं डार्लिंग, जहां तक मेरा ख्याल है, उन में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। वह एकदम भारतीय हैं। इसी बात पर डैडी और मम्मी उन्हें बात बात पर गंवार और ईडियट कह कर पुकारते हैं। देखना सामने पड़ते ही दोनों हाथ जोड़ कर वन्दे मातरम कहेंगे या नमस्ते।"

बागल पलकें झपक कर बोली, "अचम्भे की बात है। बाप जैसे इंग्लैंड में ही पचास वर्ष रह कर आए हों और मां अपने आपको हॉलीवुड

की फिल्म स्टार समझती हैं। उनका बेटा हिन्दुस्तानी रह जाए और वह भी विलायत में चार साल रह चुकने पर, कमाल है।"

वह बोला, "उस में कौन सी नई बात है। कल तक को तो तुम भी बात बात पर अंग्रेज़ी की टांग मरोड़ती थीं। अंग्रेज़ी ढंग से खाती, पहनती और चलती थीं।"

"वह मेरी मजबूरी थी डार्लिंग, शौक़ नहीं। मुझे अपने पेट के लिए तुम्हारे डैडी की मर्ज़ी से रहना पड़ता था। कभी शौक़ से साढ़ी पहन लेती तो बुरा सा मुँह बना कर कहते, क्या भोंडा लिबास पहन रक्खा है। सच बात तो यह है कि उनके साथ निभाने का खास नुस्खा है अंग्रेज़ बनने की कोशिश जारी रखना। उन्हें हिन्दुस्तान से तो मुहब्बत है लेकिन यहाँ की तहज़ीब से नफ़रत करते हैं, चिढ़ते हैं।"

चार्ली बोला, "भैया को देखोगी तो दंग रह जाओगी।"

बागल अपनी रेशमी साड़ी का छोर घुमाती हुई उसके मुँह पर मार कर बोली, "तुम्हें तो देख लिया। अब उन्हें भी थोड़ी देर में देख लेते हैं। अब चलो ज़रा पूछताछ करें कि प्लेन ठीक वक्त पर पहुंच रहा है या अगर कुछ देर हो तो बाज़ार में जा कर कुछ फूल और ले आएं। वह बोला, "नहीं मेम साहिबा, फूलों के यह हार ही काफ़ी हैं। वह देखो लाइन क्लीयर का सिगनल हो गया। चलो तैयार हो जाओ।" उसके साथ ही उसने उसके बालों की लट पकड़ कर चूम ली।"

वह कोहनी मार कर अपने भारी पर चञ्चल नितम्बों को हिलाती हुई बोली, "शरीर कहीं के। बड़े बेसबर हो। हर वक्त कस कर लिपटे रहना चाहते हो।"

वह पुनः उसकी ओर झपटा तो हवाई जहाज़ के आकाश में मण्डराने की आवाज़ सुनाई दी। दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े जर्मन टैंक सी भारी औरत से टकरा गए। शायद उसका पति या कोई मित्र ही उसी जहाज से आने वाला था। वह उसके स्वागत के लिए वहीं रास्ते में खड़ी होठों की लिपस्टिक ठीक कर रही थी।

वह अचानक धक्का खा कर जो लुढ़की तो उसका खुला हुआ हैंड बैग दूर जा गिरा। सौन्दर्य बढ़ाने के अनेकों प्रसाधन उसमें से निकल कर बिखर गए। वह गर्भवती सूकरी की तरह औंधी पड़ी कराह रही थी। उसकी भारी भर कम देह खुली सड़क पर छटपटा रही थी। तेजी से भागते हुए और भी अनेकों लोग उस पर गिरते गिरते बचे। वह झल्ला कर उठ बैठी। सारा मेकप बिगड़ गया था। लोगों को बेतहाशा अंग्रेज़ी में गालियाँ बक रही थी। तभी एक अंग्रेज़ मेम का कुत्ता जंगली भैंसी समझकर ज़ंजीर तुड़वा कर उस पर झपटा। उसने स्नो की बड़ी शीशी उस पर दे मारी। कुत्ता चालाक था, किनारा काट कर भाग गया तो वह क्रोध में हिन्दुस्तानी में गालियों की बौछाड़ करने लगी।

चार्ली और बागल हँसी दबाकर तुरन्त वहाँ से आगे सरक गए तो बागल बोली, "उसे थोड़ा सहारा दे देते तो उठ कर खड़ी हो जाती।"

"और अगर लुढ़क कर मुझ पर आ गिरती तो भैया को भी सब से पहले जहाज़ से उतर कर मेरी मरहम पट्टी करनी पड़ती।" बोली, "आखिर इन्सान हैं, और हम से टकरा कर तो गिरी ही थी। भीड़ ज्यादा होने से पहचान न पाई।"

चार्ली हँसता हुआ बोला, "अगर पहचान लेती तो मेरा सुरमा बना देती। ज़रा देखो तो कैसे दाँत पीस रही है। अब यहाँ से चल देने में ही खैरियत है। देखो, प्लेन भी लैण्ड कर चुका।"

जहाज़ की खिड़की तक सीढ़ी लग जाने पर तरह तरह के रंग बिरंगे लोग खट खट करते नीचे उतरे। तभी सफ़ेद शेरवानी और चुस्त पाजामा पहने हुए एक सुन्दर और सौम्य युवक हवाई जहाज़ के द्वार पर दिखाई दिया। चार्ली ने बागल का हाथ पकड़ कर उस ओर इशारा किया तो वह बोली, "बहुत खूब मान गए।"

चार्ली ने आगे बढ़ कर अपने भाई के गले में हार पहना दिया और कौली भर कर बोला, "बड़े भैया, मैं ने इस से शादी की है।"

बागल ने हिन्दुस्तानी ढंग से दोनों हाथ जोड़ कर उन्हें नमस्कार किया तो उसके झुके हुए सिर पर हाथ रख कर बोले, "आज अपनी जन्मभूमि की गोद में पहुंच कर चार्ली बहुत अच्छा लग रहा है। विलायत खूबसूरत है वहाँ के लोग बहुत उन्नति कर गए तो भी भारत की इस पुण्य भूमि को देखने के लिए जाने कब से तड़प रहा था। पिता जी और माता जी कैसे हैं ?"

चार्ली बोला, "समय पर आपका तार मिल गया था। मम्मी आपके स्वागत की तैयारी में लगी थी और पिता जी किसी काम से गए हैं। डिनर तक लौट आएँगे।"

दोनो भाई एक दूसरे का हाथ पकड़े बाहिर आकर मोटर में आ बैठे। बागल अगली सीट पर बैठ गई। संकेत पाकर ड्रायवर ने मोटर स्टार्ट कर दी।

अगले दिन सुबह नौ बजे चार्ली और रमेश जलपान कर रहे थे। शीला रसोई घर में तिकोने तल रही थी। बागल एक प्लेट में गरम गरम तिकोने लेकर आई तो रमेश बोला, "चार्ली, तुम ने पहले जन्म में मोती दान किए होंगे। कितनी बढ़िया पत्नी मिल गई। वाह······मज़ा आ गया। यह तो मां बना रही है न; ऐसा जान पड़ता है कि बरसों से भूखा था। रात घर पर भोजन मिला और अब बढ़िया नाश्ता; कितने कुरकुरे तिकोने बने हैं।"

चार्ली बोला, "वहां तो भैया, यह हिन्दुस्तानी पदार्थ नहीं मिलते होंगे।"

बागल निकट खड़ी दोनों को मुग्ध दृष्टि से खाते देख रही थी। रमेश बोला, "बैठो न छोटी भाभी, क्या नाम है तुम्हारा।"

"बागल, पर भैया अब इसका नाम कोई हिन्दुस्तानी रख दो।"

वह बोली, "नाम धाम से कुछ अन्तर नहीं पड़ता। संस्कार और सभ्यता के लक्षण हिन्दुस्तानी होने चाहिएँ।"

चार्ली बोला, "भैया यह हिन्दुस्तानी भोजन बनाने में मास्टर है।"

रमेश ने तिकोना कुतरते हुए कहा—"मुझे यह भारतीय पक-

आन ही अच्छे लगते हैं। वहां पर अपने हाथ से दाल-चावल और रोटी पका कर खाता रहा; कभी किसी अंग्रेज के यहां निमन्त्रण पर जाता तो उसके बिस्कुट केक से पेट नहीं भरता था। वैसे ही मैं शुद्ध शाकाहारी हूँ। तंग आ कर सब के साथ भूखा ही उठना पड़ता। कभी कभी तो ऐसे समय पर मित्रों के साथ रहने पर देर हो जाती तो लाई मुरमुरा दूध में भिगो कर खा लेना पड़ता।"

चार्ली बोला, "तुम्हारी यहां बहुत कमी थी भैया। लो बागल, तुम्हारा एक वोट और बढ़ा। अब डैडी-मम्मी की एक नहीं चलने की।"

बागल शान्त और कोमल स्वर में बोली, "आप उनके बेटे जरूर हैं मगर उनको मैं आपसे ज्यादा जानती हूं। आपके पिता एक नियम के आदमी हैं। जरूरत और वक्त के मुताबिक अपने दिल और दिमाग तक को बदल लेते हैं।"

बाहिर में किसी ने रमेश को पुकारा। बराण्डे में कुछ पदचाप सुनाई दी तो चार्ली बोला, "शायद आपके कोई मित्र हैं!"

रमेश ने उठ कर द्वार तक जा कर कहा, "हां, मेरे ही नहीं, तुम्हारे भी। छोटी भाभी तुम उठ कर जरा भीतर चली जाओ। चार्ली! उन लोगों का स्वागत किया जाए।"

बागल ने कमरे से बाहर पांव रखा ही था कि एक युवक ने तेजी से भीतर आते हुए रमेश को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और फिर दोनों एक दूसरे से लिपट गए। तब तक चार पांच व्यक्ति और भीतर आ गए। चार्ली ने आगे बढ़ कर सब का स्वागत किया। वह रमेश से बारी बारी हाथ मिला कर बैठ गए। पहले युवक ने रमेश के साथ कोच पर बैठते हुए कहा, "तुम्हारे यहां आने की सूचना पाकर हमारी उम्मीदें बर आई हैं।"

"कहो गिरधर, क्या कहना चाहते हो? आज्ञा करो। मैं हाजिर हूँ।"

दूसरा आगन्तुक बोला, "रमेश भाई हम तुम्हारे पास एक आशा ले कर आए हैं।"

"तुम निराश नहीं लौटोगे भाई। मैं तुम्हारा वही पुराना रमेश हूं। तुम लोगों की सभी आज्ञाएं मेरे सिर माथे पर। पहले कुछ जलपान हो जाए, फिर ……।"

गिरधर बोला, हम सब लोग अभी एक होटल में नाश्ता करके आ रहे हैं।"

वह स्नेहिल स्वर में बोला, "फिर भी यह एक आत्मीय का घर है। भई, जो भी पत्रं-फलं-तोयं; जाओ चार्ली, कुछ भिजवा दो।"

एक अधेड़ व्यक्ति जो बड़ा ही सौम्य और कर्मठ जान पड़ता था, अपने मनस्वी मुख पर आभार प्रकट कर के बोला, "फिर कभी कमी पूरी कर देना। अब तो क्षमा ही कर दीजिए। काम की बात यह है कि विदेश जाने से पूर्व जिस भ्रष्टाचार-निरोध समिति का तुमने संचालन किया था उसी के विषय में एक प्रस्ताव लेकर आये हैं।"

"आज्ञा कीजिए सोमदेव जी!"

सोमदेव बोले, "सरकार वेश्या-उन्मूलन के लिए बहुत यत्नशील है किन्तु अभी तक कोई ऐसा मार्ग नहीं सूझ रहा भैया, कि उन पद-दलित देवियों को दलदल व कीचड़ से बाहिर खींचा जा सके। क्यों महाशय वह तो कई महाशयों ने चकले बन्द करने की विज्ञप्ति तो दी है।"

गिरधर बोले, "केवल विज्ञप्ति कर देने से क्या यह चकले बन्द हो सकते हैं।"

चार्ली बोला, "जो विरोध करें उसे कड़ी से कड़ी सजा भी दी जा सकती है। आखिर राजाज्ञा भी तो………।"

बात काट कर सोमदेव जी बोले, "राजाज्ञा? भाई राजाज्ञा सुधार के लिए होती है न कि किसी नागरिक को भूखों मार देने के लिए। आखिर उन पतित और हीन कहलाने वाली वेश्याओं में भी तो प्राण हैं। उन्हें भी तो भूख लगती है। तन ढकने के लिए वस्त्र और सिर छुपाने के लिए घर चाहिए। इस विज्ञप्ति मात्र से तो इस कठिन समस्या का हल नहीं हो सकता।"

फिर रमेश को सम्बोधित करके बोले, "सन बयालीस की क्रान्ति में तुम तो हमारे साथ थे न रमेश भैया। कितने बलिदान और कितनी विभूतियाँ दे कर हम ने क्रूर विदेशी के पञ्जे मे अपने इस अभागे देश को मुक्त कराया। क्या इसी लिए कि कोरे सिद्धान्त के आधार पर लकीर पीटते हुए बिना किसी योजना के किसी को बेसहारा कर के एक दम कुचल दिया जाये ?"

तीसरे व्यक्ति ने स्वर को ज़रा और भाव-पूर्ण बना कर कहा, "जो पेट की रोटी और तन के कपड़े के लिए अपने तन की बोटी बोटी नुचवाती हैं, एक एक दो-दो रुपये में घण्टों दूसरे के हाथों में अनिच्छा होते हुए भी बिकी रहती हैं, उन्हें तुम भी क्रूर हो कर कुचल देना चाहते हो। आखिर वह भी तो इसी देश की मिट्टी से उपजी है। उन्हें भी इस धरती के अन्न और वस्त्र पर उतना ही अधिकार है जितना कि तुम्हें और हमें।"

गिरधर ने बात को बल देने के लिए कहा, "यह कुकर्म क्या वह खुशी से करती हैं। याद है रमेश भाई, एक बार हम काश्मीर गए थे तो झील के पास बजरे में एक पहाड़ी युवती ने कुछ सिक्कों के लिए अपना शरीर हमारे पास बेचने के लिए प्रस्ताव पेश किया था।"

रमेश को जैसे अतीत का एक भयानक स्वप्न याद आ गया। विगलित हो कर बोला, "कितना बड़ा सत्य उस दिन हमारी इन आँखों ने देखा और कानों ने सुना। उस युवती का दुधमुँहाँ बच्चा आखिरी सांसें ले रहा था। वह बेचारी उस के लिए दवा और दूध जुटाने के उपकरण में अपने जीवन की अमूल्य निधि को लुटाने के लिए आतुर थी। तुम्हीं बताओ रमेश भैया, मातृत्व के उस करुण बलिदान को कितनी आंखें देखती हैं ? क्या उनका मूक अभिशाप इस देश की बुनियादों में पहुंच कर ज्वाला मुखी की तरह न फूट निकलेगा।"

रमेश ने गम्भीर हो कर कहा, "वह तो फूट ही पड़ा दिखता है भाई ! किसी मनस्वी दार्शनिक ने एक बार कहा था कि जिस देश का

कवि और स्त्री मजबूर होते हैं, अभावग्रस्त होते हैं, तिलतिल करके घुलते और मिटते हैं, वह देश एक न एक दिन रसातल को पहुंच जाता है। शताब्दियों तक उस की दुर्दशा की कहानी सुनी और पढ़ी जाती है।"

सोमदेव ने कहा, "हम उन्हीं के बारे में कोई निश्चित पग उठाने की फ़िक्र में हैं।"

चार्ली ने कहा, "उन के लिए वनिताश्रमों की जो व्यवस्था की गई थी, उस से··· ।"

सोमदेव बोले, "वह आश्रम भी मात्र-व्यभिचार और ढोंग के अड्डे ही दिखाई दिए। वह जैसी पहले दूसरों के हाथ का खिलोना थीं, वैसी ही अब हैं। बल्कि यूं कहना चाहिये कि वह पहले से भी अधिक मजबूर और परतन्त्र हो गईं। और इतनी कमज़ोर दिमाग़ बन चुकी हैं कि जो चाहे उन्हें रोटी का टुकड़ा और कपड़े का चीथड़ा दिखा कर उन्हें कहीं भी दो चार घण्टे के लिए ले जा सकता है। उन की तो जैसे आत्मा मर चुकी है।"

वातावरण बहुत गम्भीर हो चुका था, एक अज्ञात सा अवसाद छा गया था। रमेश ने गम्भीर हो कर कहा, "आत्मा अमर है सोमदेव जी कोशिश करने से अब भी उन का उद्धार हो सकता है।"

"कैसे ?'

रमेश ने योजना दी, "जिन के पास धन है उन्हें सहयोग दे कर अच्छे उद्योग-धन्धे में लगा देना चाहिए, और जो निर्धन हैं उन्हें उन उद्योग-शालाओं में भर्ती हो जाना चाहिए।"

सोमदेव बोले, "उस से किसी प्रकार हम सरकार की सहायता से यह व्यभिचार के अड्डे बन्द कर सकते हैं। किन्तु दो प्रश्न और रह जाते हैं।"

" क्या ?"

"एक तो यह कि जो युवतियां हैं उन्हें आखिर किसी पुरुष के सहारे की अपेक्षा भी अवश्य रहे गी.; खुले शब्दों में मनुष्यों की स्वभावगत वासना का समाधान भी तो जरूरी है। उस के बिना वह लुकछिप कर······।"

बीच में ही तेजी से बात काट कर रमेश बोला,

"हां—हां ; और दूसरा प्रश्न मैं समझता हूं, उन के सामाजिक स्तर का उठता है। तो इन दोनों प्रश्नों का समाधान एक ही हो सकता है।"

"क्या ?

"यही कि हमारे देश के लोग यदि वास्तव में हृदय से इस पाप का उन्मूलन चाहते हैं तो उन्हें दिलेरी से काम ले कर इन वेश्या-वृत्ति अपनाने वाली स्त्रियों को अपनी गृहस्थी में सम्मिलित करना होगा।"

रमेश के इस प्रस्ताव पर गिरधर एकाएक चौंक कर बोला, "अपनी गृहस्थी में शामिल करने का प्रस्ताव तो सुन्दर है लेकिन यह एक बहुत बड़े विद्रूप का कारण बन जाएगा। डर है......... ।"

रमेश ने उस के कन्धे पर थपकी देते हुए मधुर वाणी में कहा, "क्यों चौंक गए गिरधर ! व्यक्ति रूप ही यदि मान लो तो हम व्यक्तिगत रूप में इस की एक इकाई हो कर इस कटु सत्य को अस्वीकार तो नहीं कर सकते।"

सोमदेव ने योग दिया, "अस्वीकार की क्या बात है रमेश, देश तो सदा ही एक बड़ी गृहस्थी होता है।"

रमेश आवेशपूर्ण स्वर में बोला, "और इस देश की बड़ी गृहस्थी में न जाने कब से यह भयंकर पाप पनप रहा है। वेश्याएं किस प्रकार बनती हैं, यह भी कोई छिपी बात नहीं। आखिर वे भी हमारे ही घरों में जन्म ले कर समय के हाथों मजबूर हो कर इस घृणित कार्य को अपनी जीविका का साधन बनाती हैं। दुःख भोगती हैं। आरम्भ में उन्हें आत्म-ग्लानि भी होती होगी। फिर बाद में इस की अभ्यस्त हो जाती हैं, और हम इसे शान्तिपूर्वक सहन कर रहें हैं, क्यों ?"

सोमदेव बोले, "इस लिए कि बात पुरानी हो जाने पर जैसे उनकी आत्मग्लानि दूर हो जाती है, ऐसे ही हमें भी यह एक दुर्घटना मात्र जान पड़ती है।"

चार्ली बोला, "पर है तो हम सब के लिए लज्जास्पद !"

सोमदेव और उसके साथियों ने सिर हिला हिला कर बात का समर्थन किया। सोमदेव तो हाथ मलते हुए बोले, "अगर हम ग़ैरतमंद हैं, मनुष्यता का कुछ भी अंश हमारे भीतर है तो ये दुर्घटनाएं, जो देश के चप्पे-चप्पे पर प्रतिपल होती हैं, हमें चुल्लू भर पानी में डूब मरने को चुनौती देतीं हैं।"

रमेश गर्जदार आवाज़ में बोले, "जब इस बात को स्वीकार करते हो तो भाई आँख बंद करके मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करो, और उस पर आगे बढ़ने का रास्ता ढूंढो।

गिरधर बोला, "तुम्हारी युक्ति अकाट्य है और प्रस्ताव अद्वितीय, किन्तु इसका संचालन कैसे होगा ?"

कुछ देर वातावरण निस्तब्ध रहा। सभी गर्दन झुका कर गम्भीर चिन्तन में लीन थे। बीच में बागल ने नौकर के हाथ कुछ मिठाई कॉफ़ी तैयार करके भेज दी थी। किन्तु ऐसे प्रसंग में सभी को खाने-पीने में अरुचि हो रही थी। रमेश ने मिठाई का एक टुकड़ा उठा कर सोमदेव की ओर बढ़ाया और पूरी प्लेट दूसरे साथियों की ओर बढ़ाई। सोमदेव ने शिष्टाचार-वश हाथ जोड़ कर कहा, "यह तो आप के यहां कोई नई बात नहीं, अब तो आ ही गए हो। आए दिन ऐसे अवसर आएँगे, आज बिल्कुल रुचि नहीं।"

गिरधर ने कॉफ़ी बना कर प्याला सोमदेव की ओर बढ़ाते हुए कहा, "जब यह सामान आ ही गया सोमदेव जी, तो इसे बिगाड़ना भी तो ठीक नहीं। और नहीं तो यह लीजिए एक प्याला कॉफ़ी ही सही।"

कुछ देर चुपचाप कॉफ़ी का दौर चलता रहा। सब से पहले रमेश ने खाली प्याला मेज पर रखते हुए कहा, "गिरधर तुमने मेरे प्रस्ताव के संचालन के बारे में पूछा था न !"

"हां, यह एक समस्या है।"

रमेश बोला, "इसके लिए सब से पहले सरकार के साथ विचार-विनिमय होगा। सरकारी सहायता से पुलिस के साथ मिल कर वेश्यालयों पर छापे मारने होंगे। जो भी पुरुष जिस वेश्या के यहां पाया जाए, यदि वह कुआंरा हो तो तुरन्त उसी वेश्या के साथ उसका क़ानूनी तौर पर विवाह करवा दिया जाए और संसद में ऐसा नियम बन जाए कि समाज में जो लोग ऐसे दम्पतियों की उपेक्षा करें उन्हें कठोर से कठोर दण्ड दिया जाए।"

"और.........।"

बात काट कर रमेश बोला, "जो बूढ़ी और गृहस्थी के बिलकुल अयोग्य हों उन्हें सरकारी पोषण-शालाओं में रख दिया जाए।"

सोमदेव बोले, "तुम्हारा प्रस्ताव सीधा और स्पष्ट है किन्तु पहले स्वयं गुड़ खा कर, गुड़ खाने का प्रचार हो सकता है।"

रमेश बोला, "मैं हर तरह तैयार हूं। मैंने अभी शादी नहीं की और अवसर पड़ने पर पहला व्यक्ति मैं हूंगा जो किसी भी ऐसी एक स्त्री को अपने घर में स्थान दूंगा।"

बीच में चार्ली बोला, "जो वेश्या कहलाती हैं भैया, उनका तो तुम प्रबन्ध कर लोगे, किन्तु जो अच्छे घरानों की फैशनेबल तितलियां हैं उन्हें कैसे रोकोगे ?"

रमेश बोला, "उसके लिए हमें एक भयंकर सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात करना होगा। और वह चालू होगा हमारे देश के नेताओं, अधिकारियों और विदेशी सभ्यता में रंगे अध-कचरे फिरङ्गियों के घर से। देश की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूर्ण भारतीतय बनें।"

चार्ली ने बात को बढ़ावा देने के विचार से कहा, "हमें रानी लक्ष्मी-बाई और पद्मिनी सी महान् शक्तिशाली स्त्रियों की जरूरत है।"

सोमदेव बोले, "पुरुषों को भी राणा प्रताप और शिवा का रूप धारण करना होगा।"

रमेश बोला, "निःसंदेह दुनिया हमारी ओर ताक लगाए बैठी है। यह जानने के लिए कि हम कब और कैसे गौरव से अपने देश के झण्डे को ऊँचा उठा कर निर्भीक हो कर कह सकें, 'भारतवर्ष, सुसंस्कृत और आत्मनिर्भर है। हमें जीवित रहने के लिए किसी देश से उधार माँगने की आवश्यकता नहीं।"

सोमदेव ने रमेश का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "ऐसा ही होगा रमेश भाई, ऐसा ही होगा। हमें केवल आप का ही इन्तजार था। सेनानी के विना सेना भेड़ों के झुण्ड के समान होती है। तुम झंडा थाम कर आगे बढ़ोगे तो विश्वास रखो कोई विघ्न-बाधा हमारे मार्ग में नहीं आयेगी। अच्छा अब हमें आज्ञा दीजिए। चलो गिरधर भाई !"

गिरधर के उठते ही सभी उठ खड़े हुए। सोमदेव ने द्वार की ओर जाते हुए हाथ जोड़ दिये।

८

शाम के झुटपुटे में बढ़िया फ़र का क़ीमती ओवरकोट पहन कर मिस डेज़ी इण्डिया गेट के निकट किसी की प्रतीक्षा में इधर से उधर व्यग्रता से चक्कर काट रही थी। बार बार उसकी दृष्टि अपनी रिस्ट वाच पर चली जाती और वह बड़बड़ा उठती, "कितने गैर जिम्मेदार लोग हैं ये। ऐसे अवसर पर जब कि······।" अभी मुंह में पूरी बात भी न आई थी कि सामने मिस्टर स्मिथ खड़ा दिखाई दिया। उसके मुख पर कुटिल मुस्कराहट थी; बोला, "हैलो मिस डेज़ी, बड़े दिनों में दीख पड़ीं।"

"तुम यहां कैसे मिस्टर स्मिथ !"

"तुम्हें ही ढूण्ढ रहा था, बहु······।"

वह बात काट कर बोली, "मुझे। मैं तुम्हारे किसी भी काम में हाथ नहीं डालूंगी। अपराध करने को मैं और पूरा फ़ायदा उठाने को तुम। मुझे तो माफ़ी ही दो।"

"तुम उस दिन से नाराज़ हो ···बात यह थी डीयर······।"

"मैं कुछ सुनना नहीं चाहती। तुम धोखेबाज़ हो। चले जाओ, अब मेरे पीछे कभी मत आना, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।"

स्मिथ चारों तरफ फैली हुई भीड़ को देख कर अत्यन्त शांत और गम्भीर स्वर में बोला, "तुम जानती हो डेज़ी, मैं अपने भरोसे पर चलता हूं। अपनी हिम्मत पर क़दम बढ़ाता हूं। अपने विरोधी को ठिकाने लगाने

की सूझ में वृद्धि है। सिरफ़ तुम से मुहब्बत होने की वजह से, तुम्हारा लिहाज़ करता हूँ। नहीं तो……।"

बात काट कर तेजी से वह बोली, "तो तुम मेरा क्या कर लेते। तुमने मुझे एक मामूली बेवकूफ़ लड़की समझ रखा है। लाखों रुपए मेरी वजह से तुम्हारी जेब में आ टपके और मुझे दो हज़ार रुपए देने भी भारी पड़े। ऊपर से मुझे पता नहीं उस दिन कितनी देर रौंद कर सफा गये। कान खोल कर सुन लो स्मिथ! मेरे साथ ज्यादा खेलने की कोशिश न करो। जिस रास्ते पर तुम ने मुझे ज़बरदस्ती ढकेल दिया है, उस पर बढ़कर मैं भी अब बहुत लापरवाह हो गई हूँ। इस से अधिक मेरा और कुछ नुक़्सान नहीं हो सकता।"

वह क्रूर दृष्टि उस पर डाल कर बोला, "मरने से भी नहीं डरती क्या?"

"इतनी हिम्मत तुम लाओगे कहां से। तुम्हारे सब भेद मेरे पास हैं। अभी शोर डाल दूं तो पुलिस के हवाले हो जाओगे। तुमने क्या क्या नहीं किया। मेरी मौत की चिन्ता तुम न करो। अपनी जान बचाओ। अपनी जान बचाओ; नहीं तो…… ।" उसके साथ ही उसने छोटा सा तमंचा निकाल कर उसकी ओर तान दिया।

स्मिथ सचमुच बहुत होशियार और मौक़ा ताड़ने वाला व्यक्ति था। डेज़ी का चढ़ा हुआ पारा और उसके हाथ में भरा हुआ तमंचा देखकर बोला, "क्यों बेकार झगड़ा करती हो। चलो, सुलह कर लो। देखो, हम लोगों का पेशा खतरनाक है। कभी भी पकड़े जाकर फाँसी के तख्ते पर सब के सब झूल सकते हैं। तुमने जोश में आकर कोस को टेलीफोन पर मेरे बारे में बहुत कुछ कहा, लेकिन याद रहे, अगर मैं फँसा तो न कोस बचेगा और न तुम यूं ऐश करती फिरोगी।"

वह तंग आ कर बोली, "खाक ऐश है। पेट भरने के लिये रोज़ अपने आप को बेचो, खतरे में डालो। आसामी को फँसा कर तुम्हारे हवाले करो और फिर खुद अगले दिन की फिक्र में मारे मारे फिरो। इस ज़िन्दगी

से तो मौत भली। अच्छा हो, अपने आप जाकर पुलिस के सामने अपने सब पाप की कहानी कह डालूं।"

वह कोमल और मीठे स्वर में उसका हाथ पकड़ कर बोला, "तभी तो कहते हैं कि औरत कमज़ोर होती है।"

वह झटके से हाथ छुड़ा कर बोली, "कमज़ोर होती तो तुम मेरे सहारे फुटपाथ से भीख मांगते हुए उठकर लखपति सेठ न होते। हाँ......यह ग़लती की जो तिजोरी की चाबी तुम्हारे पास रहने दी। तुम्हारे सब साथी तुम से नाराज़ हैं। वह भी मेरी वजह से अब तक तुम्हारा साथ दे रहे हैं। लेकिन अब ...।"

"अब भी कुछ नहीं डेज़ी डारलिंग, मेरा तो सब कुछ तुम्हारे कदमों पर निसार है। यह लो पर्स......इस में आठ हजार से ऊपर की रक़म है।"

वह हँस कर बोली, "पर नोट तो तुम्हारे तहखाने वाली टकसाल के होंगे।"

"नहीं ...नम्बर मिलाकर देख लो, सब असली हैं। यह सम्हालो और बजाए झगड़ा करने के दिलोजान से मेरे साथ फिर जुट जाओ। विदेश से पनडुब्बी में कुछ कीमती सामान आया है। अभी उसके लोकल एजेंण्ट से जाकर मिलो। लगभग पाँच लाख रुपया बचेगा। बिक्री का प्रबन्ध मैंने कर छोड़ा है। कल माल वसूल करके अपनी देख रेख में गोडाऊन तक पहुंचाना होगा। फिर उसी पनडुब्बी में गांजा और अफ़ीम भर कर भेजनी होगी।"

पैसे के लोभ ने डेज़ी को भरमा लिया। वह पर्स खोल कर नोटों पर सरसरी निगाह दौड़ाती हुई बोली, "तो यह सब मुझे दे रहे हो। हिसाब ठीक से कर के दो तो बात भी बने।"

"अरे भई, यह तो ऊपर का लुभाव समझो, पिछले मुनाफ़े में दस परसेन्ट तुम्हारा है और अगले धन्धों में पन्द्रह परसेण्ट।"

"नहीं स्मिथ, पिछला जो देना चाहो दे दो। आगे काम लेना हो तो मुनाफा आधा आफा। पूरा खतरा मेरे ऊपर है ······।"

वह मुँह बना कर बोला, "देखो, पूँजी मिस्टर कोस की लगेगी, वह भरपूर लेगा। साथ में काम करने वाले अलग से लेंगे। मुझे तो आखिर में दे बाँट कर सिरफ पाँच परसेण्ट मुश्किल से मिलेगा।"

वह पर्स अपनी जेब के हवाले करके बोली, "ऐसा क्यों नहीं करते। यह सब लेन देन भी मेरे सामने तय करो। जो बचे वह आधा आधा बाँट लो।

"लेकिन इस में ······।"

वह बात काट कर बोली, "इस में उसमें कुछ नहीं; या तो फ्लैट रेट आधा आधा या जिस तरह मैं ने कहा; और कोई ढंग तुम्हारा हमारा मेल नहीं करा सकता।"

स्मिथ कुछ देर सोच कर बोला, "मंजूर ····ऐग्रीड।"

"लेकिन हिसाब किताब और कुल लेन देन मैं करूँगी।"

"यह भी ऐग्रीड ···।"

"अच्छा, पहले पिछला हिस्सा दिलाओ तो आगे काम शुरू करूं।"

बोला, "रुपया तो आने दो। अब इतना भी सबर नहीं ·· ।"

वह बिफर कर बोली, "सबर मैं ने दस साल तक किया है। अब एक पल नहीं; चलो पहले और रुपया दिलवाओ।"

"उसके लिए घर जाना होगा।"

"मैं तुम्हारे घर अभी न जा सकूंगी।"

"यहां तो जो मेरी जेब में था, वह तुम्हें दे दिया।"

"तो जाकर ले आओ, मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगी।"

स्मिथ पुनः चिन्ता-ग्रस्त हो गया। अन्त में हार कर बोला, "तो यहीं फव्वारे के पास मिलोगी न।"

"हाँ······।"

"तुम्हारे पास रुपया है। यहां किसी ने अगर……।"

वह तेज़ होकर बोली, "इसके लिए मेरे पास इन्तज़ाम है। फिर पुलिस……।"

बात काट कर बोला, "पुलिस हम गिरहकट लोगों की सहायता क्यों करने लगी ?"

वह जैसे झिड़क कर बोली, "तुम वक्त मत खराब करो। मुझे भूख महसूस हो रही है। नहीं तो तुम इण्डिया काफ़ी हौस चले आना। मैं वहीं तुम्हें मिलूंगी।"

"यह ठीक रहा। यहां खुले में वैसे भी ठीक नहीं।" वह तेज़ी से टैक्सी स्टैण्ड की ओर चला गया। डेज़ी कुछ देर वहीं चुप चाप खड़ी रही। पूरे आठ बज गए थे। उस ने चारों ओर दूर दूर तक निगाह दौड़ाई। पार्क में लम्बे लम्बे चक्कर लगाने लगी। कोई पचास गज़ वहां से हट कर जो एक झाड़ी के पास पहुंची तो अन्धेरे में एक युवक और युवती लिपटे पड़े थे। अचानक उस की ठोकर लगने से काँपते हुए उठ खड़े हुए। लड़की के लगभग सब कपड़े उतरे हुए थे। लड़का तेज़ी से उठ कर मुंह फेर कर खड़ा हो गया। डेज़ी ने हंस कर आगे बढ़ते हुए कहा, "विश यू गुड लक मौज करो !" उस की शह पा कर लड़का फिर लड़की से लिपट कर लेट गया। और भी ऐसे ही अनेकों घिनौने चित्र देखते हुए वह सैक्रेटेरियट वाली सड़क पर जा पहुंची। मोड़ मुड़ने लगी तो सामने से तेज़ आ रही मोटर कार की बत्तियों को देख कर रुक गई। थोड़ा निकट पहुंचने पर वह ज़ोर से चिल्लाई, 'रमेश भाई, रुको," ब्रेक लगते ही गाड़ी वहीं की वहीं रुक गई। मोटर में रमेश के अतिरिक्त चार्ली और गिरधर भी थे। रमेश ने मोटर का दरवाज़ा खोल कर अपने साथ वाली सीट पर उसे बिठा लिया।

मोटर चाँदनी चौक की तरफ़ तेज़ी से दौड़ रही थी। रमेश बोला, "हमें विशेष कारण से देर हो गई। चलो सोमदेव जी के वहां सीधे चलते हैं। और भी सदस्य वहीं बैठे होंगे। आज एक विदेशी ऐक्सपोर्ट कम्पनी

के दफ़्तर पर पुलिस की सहायता से छापा मारा था। वह विदेश से चोरी क़ीमती माल मंगवा कर यहाँ बेचते हैं। लाखों रुपए सरकारी ड्यूटी की चोरी हर हफ़्ते हो रही थी। पुलिस उन के हिन्दुस्तानी साथियों की तलाश में है।"

वह बोली, "यहां उन का मेन डीलर स्मिथ है। उसे पकड़वाना हो तो पुलिस को फ़ोन पर इण्डिया काफ़ी हौस भिजवा दो। मैं पकड़वा सकती हूँ।"

"तुम्हें कैसे पता है इन बातों का ?"

"स्मिथ अभी कुछ देर पहले इण्डिया गेट पर मेरे साथ था। मुझे सब कुछ बता गया है।"

"तो क्या तुम से उस की दोस्ती है ?"

"थी ......बहुत दिन रही। वह धोखेबाज़ आदमी है। मुझे उस ने बरबाद कर दिया, मैं उस से बदला लेना चाहती हूं। वह समझता है कि मुझे रुपया दिखा कर भरमा लेगा। और मैं फिर उसके अपराधी जीवन में हिस्सेदार बनी रहूँगी लेकिन, नहीं भैया। पाप की गठड़ी को और भारी न होने दूँगी। वह मुझे देने के लिए कई लाख की रक़म अपने साथ लाएगा। चाहो, तो तुमहारी योजना में वह पूँजी भी काम आ सकती है।"

रमेश बोला, "वह तो दूसरों का धन है। सरकार को सौंपना होगा। हम उसे न छूएँगे। हमारे पास अपनी योजना की पूर्ति के लिए बहुत पूँजी है।

बोली, 'तो चलो, उसे गिरफ़्तार ही करवा दें।"

चार्ली बोला, 'पहले सोमदेव जी के वहां चलो। अगर सब की सलाह हुई तो आज उस स्मिथ के बच्चे को घर लिया जाएगा।"

गिरधर बोला, "एक बात है, अगर स्मिथ हाथ आ जाए तो मैं समझता हूँ हमारा काम बहुत आसान हो जाएगा।"

डेज़ी ज़ोर दे कर बोली, "यही तो मैं कहती हूँ। पहले उसे वश में करना ज़रूरी है।"

रमेश बोला, "तो फ़ोन कर के सोमदेव जी को भी बुला लो। फिर पुलिस को साथ ले कर छापा मारना होगा।"

डेज़ी बोली, "बहुत होशियारी से काम करना होगा। टैलीफ़ोन ऐक्सचेंज पर भी स्मिथ के आदमी तैनात हैं। उस का जाल दिल्ली के चप्पे चप्पे पर बिछा हुआ है। वह सूचना पाते ही भाग लेगा।"

"फिर ।"

"इस के लिए मोटर दौड़ाओ।"

चार्ली बोला, "सोमदेव जी को कैपिटल सिनेमा पर शो देखने के बहाने बुलाओ और खुद मोटर में जा कर पुलिस चौकी में खबर करो।"

रमेश बोला, "सोमदेव जी को फोन करके, गिरधर भाई तुम तो चलो कैपिटल और हम जाते हैं पुलिस कमिश्नर के बङ्गले पर।"

नज़दीक के पब्लिक कॉल आफ़िस में जा कर सोम देव को फोन पर कैपिटल पहुंचने का निमन्त्रण दे कर सभी कैपिटल होते हुए बाईं तरफ़ को मुड़ गए। एक बिल्डिंग के पीछे चुपके से गिरधर को उतार कर उन की बड़ी ऊँच गाड़ी पुलिस कमिश्नर के बङ्गले की तरफ़ दौड़ने लगी।

इण्डिया काफ़ी हाऊस पर शाम के वक्त बहुत रौनक होती है। हर तरह के स्त्री पुरुष अपने मित्रों के साथ वहाँ पहुंच कर घण्टों बिताते हैं। कोई प्यार के गीत गाता है, कोई व्यापारी वर्ग के सदस्य व्यापारिक दाँव पेच की गम्भीर बातें करते हैं और स्मिथ जैसे दुष्ट प्रकृति के लोग दुनिया को पूरी ताक़त से सताने और लूटने का कार्य-क्रम बनाते हैं; विदेशी शत्रुओं के हाथ चोरी चोरी अपने देश की कॉफ़ी के एक गर्मा गर्म कसैले प्याले में देश की मान-मर्यादा को डुबो देते हैं। और दिनों की अपेक्षा उस दिन भीड़ कुछ अधिक थी। हथियार-बंद पुलिस सफ़ेद कपड़ों में भीतर घुस आई थी और कुछ बाहिर घूम रही थी।

रमेश, गिरधर, चार्ली और डेज़ी कॉफ़ी हाऊस से कुछ दूरी पर मोटर रोक कर उतर गए। डेज़ी तेजी से कॉफ़ी हाऊस में जा कर घुस गई। उस

के थोड़े फ़ासले पर गिरधर भीतर जा कर एक खाली कुर्सी पर बैठ गया। रमेश और चार्ली पुलिस आफ़िसर के साथ एक कोने में खड़े चुप चाप बात चीत कर रहे थे कि तभी हंगामा हो गया। पुलिस होशियारी से घेरा डाले खड़ी थी। अन्दर हाल में गड़बड़ सी मच गई। स्मिथ ने समय से लाभ उठा कर दौड़ कर बिजली की लाइन काट दी और उसी गड़बड़ में लोगों के बीच में से होता हुआ पता नहीं कब किस प्रकार रफ़ूचक्कर हो गया। थोड़ी देर बाद जो बत्ती जली तो चार्ली ने ताली बजाते हुए हँस कर कहा, "यह सचमुच हमारा उस्ताद निकला।"

गिरधर ने उसे कोहनी मारते हुए कहा, "उस्ताद ही नहीं, चार्ली! तुम्हारा तो वह चाचा भी है।" डेज़ी निकट आ कर बोली, "तो चचा जान सफ़ा निकल गए। खैर कोई बात नहीं।"

फिर पुलिस के अधिकारी को सम्बोधित करके बोली, "मैं इस बदमाश को गिरफ़्तार करवाने में आप का पूरा पूरा साथ दूँगी। लेकिन इस तरह भीड़-भाड़ में शायद आप उसे न पकड़ सकें।"

अफ़सर बोला, "रात को उस के घर पर जो छापा मारा जाए।"

चार्ली जैसे पुलिस की अक्ल पर तरस खाता हुआ बोला, "उन हज़रत को इतना बेवकूफ़ न समझिए। खैर अब तो गया ही। चलो, ठण्डे ठण्डे घर चलें। फिर देखा जाएगा।"

पुलीस अपने अधिकारियों के साथ लज्जित हो कर चुपचाप खिसक गई। काफ़ी-हाउस का हॉल पुनः पूर्ववत् जगमगा रहा था। रमेश ने गिरधर और चार्ली का हाथ पकड़ कर कुर्सियों पर बैठते हुए कहा, "सोमदेव जी, जब यहां आ ही पहुंचे हैं तो क्यों न एक एक प्याला कॉफ़ी ही पी ली जाए।"

सोमदेव जी बोले, "भई, मुझे तो क्षमा ही करो।"

चार्ली चुटकी लेता हुआ बोला, "बिना अपराध के क्षमा कैसी, भाई साहब?"

थोड़ी देर में बैरा कॉफ़ी का फुल सैट रख कर चला गया तो डेज़ी

ने काफ़ी प्यालों में डालते हुए गम्भीर स्वर में कहा, "अब वह मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा। बहुत भयानक खूनी क़िस्म का आदमी है। उस के लिए आदमी को मार देना, बच्चों के खेल के बराबर है।"

रमेश ने सांत्वना देने के विचार से कहा, "इस बार तो बच गया; अब जो सामने पड़ा तो उस की सब बदमाशी एक ही बार में निकल जाएगी।"

गिरधर बोला, "भविष्य की बात तो फिर देखी जाएगी। अब तो भाई उस के नाम की माला जपते हुए रात भर तारे गिनो।"

चार्ली बोला, "जवाब नहीं चचा जान का। क्या बिल्ली की सी फुर्ती से भाग गया।" सोमदेव जी चार्ली की इस बात पर मंद-मंद मुस्करा दिए।

स्मिथ जो वहां से भागा तो हौज काज़ी वाले अपने गुप्त अड्डे पर पहुंचा। दुर्भाग्य से वहां पर उसे कोई साथी न मिला। उसकी जेब में कुल बीस रुपये के नोट थे और उसका दिल्ली में कुछ देर भी टिके रहना खतरे से खाली नहीं था। वह तो डेज़ी को भरमा कर कॉफ़ी हाउस से अपने तहखाने में पहुंचने वाला था। क्योंकि लगभग आठ हज़ार की रक़म जो इण्डिया गेट पर डेज़ी को सौंप आया था वह भी आखिर वसूल करनी थी। बेहोशी की गोलियां भी उसने जेब में डाल रखी थीं, जिससे बेहोश करके वह डेज़ी को टैक्सी में डाल कर हमेशा के लिए खतरे पर काबू पा लेता। पर परिस्थिति एकदम विपरीत हो गई। सारा कैश उसके कनाट सर्कस वाले बंगले पर था जहां पर पुलिस के तैनात होने की पूरी सम्भावना थी। अब वह जाए तो कहां जाए; करे तो क्या करे; बिना काफ़ी रुपया जेब में हुए एक पग भी उठाना मुश्किल था।

उसने अड्डे का चप्पा-चप्पा छान मारा, सभी तहखाने देखे। आखिर एक गहरे तहखाने में जा पहुंचा, जहां पर एक युवती कैद थी। उसके शरीर पर कुछ जेवर थे। उसने वह छीन लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो वह उछल कूद मचाने लगी। लड़की जवान थी, स्मिथ से बुरी तरह उलझ गई।

बीस मिनट तक भयंकर संघर्ष जारी रहा। उसने स्मिथ को अनेक जगह से काट खाया। छीना-झपटी में उसके कपड़े तार तार हो गये। उस काले भैंसे नुमा आदमी ने झटक कर उसकी साड़ी खींच कर परे फेंक दी। कमीज़ के बटन तोड़ दिए। उस समय उसकी आँखों में खून उतर आया था। जंगली सूअर की तरह हाँफते हुये वह ज़ोर ज़ोर से उस युवती के बाल खींचने लगा। लड़की में न जाने इतनी ताक़त कहाँ से आ गई थी कि उसने सिर को झटका दे कर जोर की एक टक्कर स्मिथ की नाक पर मारी। खून का परनाला बह निकला। उससे बाल छुड़ा कर उसने निकट पड़ा एक भारी पत्थर उठा लिया। स्मिथ ने बचाव का और कोई उपाय न देख कर पिस्तौल निकाल कर तीन फ़ायर उस पर एक साथ किये। वह कच्ची टहनी की तरह भूमि पर गिर कर तड़पने लगी।

उसे उसी हालत में मरने के लिये छोड़ कर स्मिथ कपड़े बदल कर एक सर्राफ़ की दुकान पर पहुंच गया। सर्राफ़ उसका पुराना मिलने-जुलने वाला था। पर व्यापार तो व्यापार ठहरा। ज़ेवर हाथ में ले कर बोला, "यह सब पीतल के हैं स्मिथ साहब।"

स्मिथ घबराहट में बोला, "तो मुझे दो हज़ार रुपये उधार दे दो। बहुत ज़रूरत है। कल सवेरे अपने नौकर के हाथ भिजवा दूंगा।"

सर्राफ़ उसके कॉफी हाऊस वाले काण्ड की उड़ती उड़ती बात सुन चुका था। उसकी तरफ़ से आँखें फेर कर बोला "यह उधार का धन्धा मैं नहीं करता साहब। आप की चीज़ हज़ार की होती, हज़ार देता। बात यह है भाई, उधार दे कर दुश्मनी मोल लेना होता है। इसके लिये मेरे बाप ने मुझे मरने से पहले मना कर दिया था।"

स्मिथ के माथे पर पसीना उमड़ आया। क्रोध से उसकी आँखें जलने लगीं। उसने अपना भारी पंजा उसके गले पर ज़ोर से रखते हुये गुर्रा कर कहा, "बाप के बच्चे, मुझ से लाखों कमा चुका है और आज वक्त पड़ने पर आँखें फेरता है। गला घोंट दूंगा पाजी! नहीं तो निकाल जल्दी

मे रुपया ।"

सर्राफ़ गिड़गिड़ाते हुये हाथ जोड़ कर बोला, "मैं तो दिल्लगी कर रहा था साहब ! रुपया तो क्या आपके लिए मेरी जान हाजिर है। ओह, ज़रा अपना हाथ तो परे हटाओ।"

स्मिथ ने गरजते हुये कहा, "बोलो क्या कहते हो। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। मुझे इसी समय रुपया चाहिए। भले ही दस खून कर के क्यों न मिले।"

वह बोला, "उस की आसान तरकीब तो बता दूं। ऐसा ठिकाना बताऊँगा जो एक ही हाथ में लाखों हाथ लगेंगे।"

स्मिथ उसे छोड़ कर कुर्सी पर बैठ गया। तो वह धीमी आवाज़ में बोला, "सेठ मोहन लाल ने अभी अभी बारह लाख का विदेशी सोना बेचा है। कुल रुपया उसके सेफ़ में मौजूद है। अभी पहुंच जाओ तो एक ही झटके में इतनी बड़ी रकम हाथ लगेगी। उसकी लड़की भी शायद कोस साहिब के साथ कहीं चली गई है। देर मत करो, नहीं तो बाज़ी हाथ से जाती रहेगी।"

स्मिथ बिजली की तेजी से वहाँ से चला गया।

दूसरी ओर कनाट सर्कस के बंगले पर स्मिथ का सैक्रेटरी जो वास्तव में एक बहुत बड़ा गुण्डा था एक कमरे में हण्टर हाथ में लेकर एक नई लड़की को अपने रास्ते पर लाने के लिये ट्रेनिंग दे रहा था। लड़की ने फिर न की तो उसने अन्धा-धुन्ध उसकी नंगी पीठ पर आठ दस हण्टर जमा कर कहा, "बोल, अब भी न करती है।"

लड़की दोनो हाथों से अपनी छातियों को ढाँपती हुई बोली, "मर जाऊँगी पर ऐसा काम न करूँगी।"

वह चीख कर बोला, "तो बॉस का भी हुक्म है, अगर नहीं मानोगी तो हण्टर मार मार कर तुम्हारी खाल खींच ली जाएगी।"

"भले ही मार डालो।"

"मरने की बहुत इच्छा है तो कुत्तों से नुचवा कर मारा जाएगा। देख ठहर...... ।"

उसने ताली बजाई तो फ़र्श पर से तख़ता सरका कर चार आदमी बाहिर निकल आए। वह बोला, "यह यूँ नहीं मानेगी। इसे स्टैण्ड पर लगाओ। इसके शरीर का अंग अंग खींचो। दोनो टाँगें फैलाते जाओ। हाँ कर दे तो गरारी रोक दो नहीं तो हैण्डल घुमाते जाओ और तब तक घुमाओ जब तक इस के दो टुकड़े न हो जाए।"

चारों बलिष्ठ गुण्डों ने बेरहमी से लड़की को घसीटना शुरू किया। इतने में नीचे से एक बूढ़ा आदमी चीखता चिल्लाता हुआ ऊपर आकर उस लड़की को लिपटता हुआ बोला, "छोड़ दो इसे पापियो, मेरी बच्ची को क्यों इतना दुःख दे रहे हो। भगवान तुम्हें ... ।"

एक गुण्डे ने उस बूढ़े की पीठ पर ज़ोरदार धौल जमाते हुए चिल्ला कर कहा, "भगवान के बच्चे, वक्त मत बरबाद कर। अगर अपनी बेटी की जिन्दगी चाहता है तो इसे समझा कि हमारा कहना मान ले। हम इसे कोई तकलीफ़ नहीं देंगे। बॉस इसे बहुत प्यार से रखेंगे।"

वह पुकार करता हुआ बोला, "भाड़ में जाए तुम्हारा बॉस और तुम। मेरी बेटी से कुकर्म करवाते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती! क्या तुम्हारे घर में माँ बहनें नहीं हैं? अगर उन्हें कोई ऐसे सताये तो?"

स्मिथ के सैक्रेटरी ने एक भरपूर तमाचा उसके मुँह पर जोर से जड़ते हुये कहा, "बकवास मत कर बुड्ढे! अच्छा ठहर, ऐ इस लड़की को सामने खम्बे से बाँध दो। और पहले इस बुड्ढे को स्टैंड पर चढ़ाओ।"

गुण्डों ने तुरन्त अपने छोटे मालिक की आज्ञा का पालन किया तो वह लड़की को बालों से पकड़ कर झंझोड़ते हुए बोला, "बोल, अब भी हमारा कहना मानेगी या अपने बाप को कुत्ते की मौत मरता हुआ देखेगी?"

बेटी, इन पापियों की कोई बात न मानना। मेरे मर जाने से कुछ नहीं होगा। देखती चल,. अभी इनको इनके किये का फल भोगना पड़ेगा।

हमारी मदद के लिए भगवान ज़रूर किसी न किसी को भेजेंगे।"

सैक्रेटरी ने उसके एक हण्टर जमाया। सिर से ले कर छाती तक की खाल उधड़ गई। फिर एक हण्टर और जमाते हुये कड़क कर बोला, "बुला ले अपने भगवान को। पता भी है बॉस के हुक्म के बिना इस जगह मक्खी भी पर नहीं मार सकती। ए, हैण्डल घुमाओ।"

हैंडल घूमने से स्टैण्ड चारों तरफ़ फैलने लगा। चिर चिर करती हुई गरारियों की आवाज़ सुनाई देने लगी। आखिर में जब कड़कड़ा कर उसके हाथों की हड्डियाँ टूटने लगीं तो उसका कराहना सुन कर लड़की करुणा-क्रन्दन करती हुई चिल्लाई, "छोड़ दो मेरे बापू को, छोड़ दो;"

सैक्रेटरी ने निकट आ कर कहा, "तो कहना मानती हो!"

लड़की ने घृणा से मुँह सिकोड़ कर उस के मुँह पर थूक दिया। हैंण्डल फिर घुमाया जाने लगा। बूढ़े को सचेत रखने के लिए उस के मुँह पर पानी के छींटे मारे जा रहे थे। उस की दोनो टाँगें काफ़ी फैल चुकी थीं। वह ज़ोर से चिल्लाया, तभी ऊपर से एक सनसनाती हुई गोली हैण्डल चलाने वाले गुण्डे के लगी। पुलिस तहखाने की छत उधेड़ कर गोली चला रही थी। छः सात सिपाही बन्दूकें ले कर उन गुण्डों पर कूद पड़े। स्मिथ के पाँचों साथी घर लिए गए। पुलिस ने लड़की और उस के बाप को खोल कर अस्पताल भिजवा दिया, और समूचे बंगले की पूरी खोज होने लगी। तरह तरह का सामान, लाखों रुपये का सोना और सेफ़ में रखा हुआ बहुत सा नक़द रुपया पुलिस के अधिकार में आ गया।

उधर दूसरी ओर स्मिथ जो सर्राफ़ लाला के घर से वेश बदल कर निकला तो सीधा सेठ मोहन लाल की कोठी पर जा पहुंचा। गेट पर चार बलिष्ठ पठान पहरा दे रहे थे। इस लिए बहुत देर सोचने के बाद कोठी के पिछली तरफ़ चला गया। सरकारी पहरेदार आवाज़ लगाता हुआ एक तरफ़ को निकला तो उस ने झाड़ियों की ओट में से हो कर काला कपड़ा ओढ़े, गंदा पानी गुज़ारने वाली नाल को पकड़ कर ऊपर चढ़ना शुरु किया। चींटे

की तरह रेंगते-रेंगते वह खिड़की तक पहुंचा तो उस का पाँव फिसल गया। नीचे की ओर लुढ़कते हुए उस के हाथ में निकट खड़े एक पेड़ की डाल आ गई। वह सहारा ले कर फिर ऊपर चढ़ने लगा। नाली के ऊपरी हिस्से पर पाँव जमा कर जो खिड़की की छड़ थामने के लिए उचका तो हाथ में छड़ तो आ गई लेकिन नाली का ऊपरी चौड़ा हिस्सा जो शायद किसी मसाले का बना था, उस का वज़न न सह कर टूट के गिर गया।

स्मिथ बाएं हाथ में खिड़की की छड़ पकड़ कर उधर लटक गया। उस का पाँव कहीं भी नहीं लग रहा था। अपने ही भारी वज़न से उस का बाज़ू टूटता जा रहा था। उस ने पूरी ताक़त से जान की बाज़ी लगा कर ऊपर को एक छलांग लगाई। जवानी के दिनों में वह बहुत अच्छा जैम्नास्ट था। उस का वह अभ्यास आज आड़े वक्त काम दे गया। खिड़की पर पहुंच कर उस ने देखा कि छड़ें बहुत पास पास लगी थीं और बड़ी मजबूत थीं। उस के मन में प्रश्न उठा कि यहाँ तक पहुंच कर भी भीतर कैसे जाया जाय। तभी उसे कमरे के भीतर किसी के आने की आहट सुनाई दी। वह एक ओर दुबक कर चोर निगह से देखने लगा। कमरे के अन्दर आने वाला सेठ मोहन लाल के सिवाय और कोई न था। उस ने कमरे के अन्दर की चिटखनी लगा कर अपना सेफ़ खोला। करेंसी नोटों से ठसाठस भरा हुआ था। सेठ मोहन लाल ने मन ही मन खुश होते सेफ़ फिर बन्द कर दिया और एक भरा हुआ थैला अपने नरम गुदगुदे पलङ्ग पर बिछी सफेद चादर पर उलटा दिया। यह सोने की सिल्लियाँ थीं। कई लाख की चीज़ होगी। स्मिथ इतनी दौलत थोड़े फ़ासले पर पड़ी हुई देख कर चकरा सा गया। वह किसी भी तरह भीतर पहुंचने के लिए छटपटाने लगा। सेठ साहब बत्ती बुझा कर दरवाज़े के बाहर चले गए या पलंग पर लेट गए। अन्धेरा होने की वजह से स्मिथ यह न जान सका। उस की आंखों के सामने अब भी वह बेशुमार दौलत नाच रही थी।

वह उस दौलत को जान दे कर भी हथियाने के लिए तैयार हो गया। उस के दिमाग़ ने कहा, "झख मारी जिन्दगी भर स्मिथ! इतनी दौड़-धूप की

लेकिन यह बनिया एक ही सौदे में कितनी आसानी से बिना कोई तूफ़ान बखेड़ा किए इतनी दौलत पा गया। अगर इस से यह दौलत न छीन सका तो लानत है मेरी जिन्दगी पर!"

खिड़की के बाईं तरफ़ हट कर एक उसे रोशनदान दिखाई दिया। उसने अनुमान लगाया कि खिड़की पर पांव जमा कर कहां पहुंचा जा सकता है। वह जान पर खेल कर रोशनदान की तरफ़ लपका। और रोशनदान का फ्रेम तोड़ कर कमरे के भीतर कूद गया। कमरे का फ़र्श मोटे काश्मीरी कालीन से ढका था इस लिए कोई विशेष आवाज़ न हुई। उसने छोटी, पर तेज़ टार्च जला कर सेफ़ को अच्छी तरह जांचा परखा। काफ़ी मज़बूत लोहे का बना था। स्मिथ ने कमर पेटी के साथ बंधे हुए कुछ औज़ार निकाल कर सेफ़ को बड़ी सफ़ाई से खोल डाला। कपाट खुल जाने पर कुछ देर तक अन्दर रखे हुए नोटों को ललचाई हुई निगाहों से देखता रहा, फिर ज्यूंही एक खाली थैले में नोटों की गड्डियां भरने लगा तो उसे अन्धेरे में कुछ सरकता हुआ दिखाई दिया। उस के हाथ दो क्षण रुके, दिल धड़कने लगा; पर कुछ भी न दिखने पर मुस्कराता हुआ जल्दी जल्दी सेफ़ से गड्डियां निकाल कर थैले में भरने लगा। तभी किसी ने बिजली का स्विच ऑन कर दिया। कमरा रोशनी से भर गया। उस ने आंखें झपकते हुए थैले को सम्भालते हुए जो सामने देखा तो सेठ मोहन लाल रिवाल्वर ताने खड़ा था। उस ने घबरा कर भागना चाहा पर, सब तरफ़ के रास्ते बन्द थे। उस का दिमाग़ तेज़ी से काम कर रहा था। वह एक दम क़ालीन खींचने के लिए जो झुका तो धड़ाम—धड़ाम······धड़ाम······के तीन भयानक स्वर गूंज उठे और स्मिथ भूमि पर छटपटाता हुआ नज़र आया। रीवाल्वर की तीनों गोलियां उस की खोपड़ी को चीरती फाड़ती हुई पार हो गई थीं।

सेठ मोहन लाल ने बड़े ही धैर्य के साथ उस के हाथ से थैला छीन कर नोटों की गड्डियां सेफ़ में भर दीं और दरवाज़ा खोल कर बाहर शोर मचा दिया।

६

मिस्टर स्मिथ की मौत की खबर सुबह दिल्ली में हवा के साथ फैल गई। बच्चे बच्चे के मुंह पर यही संवाद था। रमेश और डेज़ी सोम देव जी के मकान पर नौ बजे पहुंचे तो वहां भी पहले से ही यह संवाद चल रहा था। डेज़ी ने जैसे शान्ति का निःश्वास छोड़ कर कहा, "रमेश बाबू! अब मैं कहीं चली जाऊंगी।"

"क्यों ?"

"मेरी ज़िन्दगी का मक़सद पूरा हो गया। जिस दुष्ट ने आज से दस ग्यारह वर्ष पहले गन्दगी में ला पटका था, वह अपनी मौत मर गया। मैं भी कहीं मुंह छिपा लेना चाहती हूं।"

सोम देव बोले, "जब तुम्हारे मुंह उघाड़ कर चलने का अवसर आया, तो मुंह छिपाने की सोच रही हो। तुम्हारी भाग दौड़ से तो वह दुष्ट मारा ही गया। तुम्हारी इस सेवा के उपलक्ष में तो समाज जो भी पुरस्कार दे, वह थोड़ा है।"

वह बोली, "यह सब कुछ भी नहीं महाशय; जितना पाप मेरी इस देह पर चिपका है। उस का अनुमान कर लें तो घृणा से मुंह फेर लें।"

वह बोले, "दाग़ तुम्हारी देह पर होंगे, आत्मा पर नहीं। और देह के दाग़ कुछ दिन विशुद्ध वातावरण में रहने से मिट जाएंगे।"

"इस से क्या होगा, कोई मुझे समाज में खड़ी रहने तो न देगा।"

रमेश बोला, "कैसे नहीं देगा। हम समाज के उन अगुओं की आंखों में

अंगुलियाँ देकर सत्य के दर्शन कराएँगे। राष्ट्र की अक्षय निधि को बहिष्कृत होने से बचाएँगे। तुम जैसी स्त्रियों को अपने बीच में समेट लेंगे। अपनी गृहस्थियों की वाग डोर तुम लोगों को सौंपने में ही अब इस भयङ्कर अभिशाप से हमारी निष्कृति है।"

वह बोली, "यह बातें कहने सुनने में सुन्दर हैं किन्तु व्यवहार में असम्भव हैं।"

रमेश बोला, "असम्भव कुछ नहीं डेज़ी, मैं तुम से शादी करूँगा। तुम मेरी गृह-लक्ष्मी बन कर मेरे मस्तक को ऊँचा करोगी।"

व्यस्त हो कर डेज़ी बोली, "आप, मुझ से शादी करेंगे। चन्द सिक्कों में रोज़ाना बिकने वाली डेज़ी को आप अपनी पत्नी बनाएंगे। आप समाज से न डरें, ठीक है, किन्तु आप को कुछ दिन बाद कहीं अपने आप से घृणा न हो जाए। मैं खुले रूप मे एक वेश्या हूँ। मेरा शरीर कुँवारी कन्या सा पवित्र ,तीर्थ नहीं; रौरव नरक है।"

रमेश बोला, "मैं इस रौरव नरक में निवास कर के निर्मल आत्मा को सुख का श्वास लेने का अवसर दूंगा। तुम हां भर कर दो। बाक़ी सब यह सोमदेव जी प्रबन्ध कर लेंगे। गिरजे में चाहो तो वहीं हमारी शादी का प्रबन्ध हो सकेगा।"

सोम देव जी बोले, "तुम तो रमेश भाई सूर्यवंशी क्षत्रिय ठाकुर हो, अगर डेज़ी क़ो एतराज़ न हो तो किसी मन्दिर में जा कर ब्राह्मण के हाथ से हिन्दू रीति द्वारा विवाह किया जाए।"

बोली, "मुझे कुछ एतराज़ न होगा। मेरे माता पिता काशी के सरयूहारीण ब्राह्मण थे।"

सोम देव जी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। हड़बड़ा कर बोले, "तो तुम्हारा नाम······।"

बात काट कर डेज़ी बोली, "मेरा पहला नाम जानकी है। मैं आठ वर्ष की थी कि स्मिथ के आदमी मुझे कुम्भ के मेले में से उठा लाए। उस के

वाद की कहानी न सुनें तो ठीक है ; उन राक्षसों ने किस क्रूरता से दिन रात मार पीट कर मुझे जानकी से डेज़ी बनाया इस की गवाही देने के लिए या अन्तर्यामी भगवान हैं या मेरी पीठ पर जमे हुए बेंतों के निशान हैं। लगातार दस दस दिन तक पीठ के बल सीधी नहीं सो पाई। आत्म-हत्या नहीं कर सकी। जाज का लोभ बना रहा।"

सोमदेव बोले, "पशु बल के आगे एक अबला की क्या बिसात ; खैर उसे एक दुःस्वप्न समझ कर भूलने की कोशिश करो और भविष्य के लिए जागरूक हो जाओ। बहुत जल्द तुम ठाकुर वंश की गृह लक्ष्मी बनने वाली हो। लो रमेश, जिस योजना को तुम ने बनाया था उस का प्रथम सूत्रपात भी तुम्हारे हाथों ही हुआ चाहता है। आज से तीसरे दिन गुरुवार को प्रातःकाल यहाँ मेरे मकान पर इस महान यज्ञ के प्रथम यजमान के रूप में तुम्हारा पदार्पण होगा।"

रमेश बोला, "चलो डेज़ी नहीं जानकी, हां अब मैं तुम्हें जानकी कह कर ही पुकारुंगा। विवाह के बाद तुम्हारे माता पिता की भी खोज खबर ली जाएगी। अब चलो .... थोड़ा घूम आएं।"

सोमदेव ने दोनों को स्नेह पूर्वक विदा किया।

वहां से दोनो स्कूटर में बैठ कर कॉफ़ी हाऊस होते हुए पुराने किले के निकट जा पहुंचे। रमेश ने जानकी का हाथ अपने हाथ में ले कर कहा, "यह वही जगह है जहां महाराज पृथ्वीराज चौहान ने अपनी रानी संयुक्ता से प्यार मनुहार किया था।"

जानकी बोली, "लेकिन वह प्यार मनुहार तो इस देश के महानाश का बीज कारण था। कहीं और चलिए, मैं इस समय कोई भी दुःखद घटना स्मरण नहीं करना चाहती।

"जहां चाहो........."

"इण्डिया गेट ही चलें। मुझे वहां पर जाने में एक प्रकार का सुख मिलता है। नहीं तो मुझे मेरे होटल के कमरे में पहुंचा दीजिए।"

रमेश बोला, "होटल छोड़ कर तुम्हें विवाह तक सोमदेव जी के घर पर रहना है। वहां पर तुम्हारे रहने की व्यवस्था कर दी गई है। उन के परिवार में रह कर तुम्हें कोई कष्ट न होगा। हमें इन दिनों बहुत काम रहेगा' गुरुवार को महायज्ञ में मेरे तुम्हारे अतिरिक्त और भी अनेकों जोड़े होंगे। वह दिन हमारे अभागे समाज के उद्धार की पहली सीढ़ी होगी। चलो, इण्डिया गेट हो कर वहीं चलेंगे।"

"मेरा कुछ सामान होटल पर है।"

"चाबी दे देना; मैं मंगवा दूँगा।"

दोनो इण्डिया गेट के पास फ़व्वारे के निकट जा बैठे। दिन के दो बजे थे। माघ महीने की हल्की गरम धूप घास के मैदान पर फैली थी। रमेश ने एक फूल तोड़ कर उस की वेणी में लगा दिया। और वह जैसे थक कर उस के चौड़े सीने पर सिर टेक कर आँखें मूंद बैठी रही। वह उस के बालों पर हाथ फेरते हुए बोला, "यह अनमोल रत्न समय की दलदल में कैसे मसला जाता रहा। यह जूही की कली सा सुन्दर कोमल शरीर क्या क्रूर हाथों में कुचला जाने के लिए था। जानकी, मैं ने सचमुच कोई बहुत बड़ा पुण्य किया था।"

वह अधमूँदी आंखें ऊपर उठा कर बोली, "और मैं ने नहीं।" उसके साथ ही उसने रमेश के हाथों को चूम लिया। प्रत्युत्तर में उसने उसे चूमने के लिए मूँह झुकाया तो वह तेज़ी से छिटक कर भाग गई। रमेश ने उस का पीछा किया। वह चक्कर काटने लगी। कोई आध घण्टा तक दोनों भागते रहे। अन्त में जानकी हाँफने लगी तो रमेश ने झपट कर उसे पकड़ लिया। दोनों ज़ोर ज़ोर से हँसते हुए एक झाड़ी की ओट में हो गए। जानकी ने आँखें झपकते हुए कहा, "अभी नहीं।"

रमेश स्वस्थ होकर मुस्कराता हुआ बैठ गया।

१०

दोपहर के बाद मिस्टर कोम के बङ्गले पर शीला के ग्राम पास कमला, बागल और चार्ली बैठे बात चीत कर रहे थे। कमला नए और भड़कीले कपड़े पहने दुल्हन बनी बैठी थी। शीला ने कमला के सिर पर हाथ फेर कर कहा, "आज मेरी बच्ची गुलाब के फूल की तरह खिल गई। अच्छा चार्ली, यह विवाह अभी तक छिपी हुई घटना ही रहा। तुम्हारे डैडी को भी इस का पता नहीं चला शायद।"

'नहीं……वैसे रमेश भैया के होते अब कोई डर नहीं।"

बागल बोली, "उन्हों ने तो विलायत से लौटते ही जैसे समूचे देश में एक उमंग सी उठा दी है।"

चार्ली बोला, "वह वहाँ से अंग्रेजों की गहरी चाल को अच्छी तरह समझ कर आए हैं। वहां रहे, पर कीचड़ में कमल की तरह।"

कमला बोली, "यही तो भैया के चरित्र की विशेषता है। उन्हों ने पिता जी की तरह अपना रंग नहीं बदला, जैसे गए थे, वैसे ही लौटे।"

चार्ली बोला, "उन की आत्मा महान है। इस लिए लोग उन की शक्ति का लोहा मानते हैं। कितनी बड़ी सामाजिक-क्रान्ति को जन्म देने जा रहे हैं। इस के लिए सचमुच शेर का कलेजा चाहिए। वह निडर हो कर कर्म-भूमि में सब से पहले कूदने को हैं।"

शीला की आँखों में स्नेह जल भर आया, गद्-गद स्वर में बोली, "तुम लोग मुझे मम्मी नहीं, मां कहा करो। रमेश ने कभी आज तक मुझे मम्मी नहीं कहा।"

चार्ली बोला, "वह शादी करने वाले हैं बहुत जल्द।"

बागल ने आश्चर्य प्रकट कर के कहा, "शादी······अभी नहीं।"

वह ताली बजा कर बोला, "यकीनन, उन की शादी से एक बार सारे देश में खलबली मच जाएगी।"

कमला ने पूछा, "खल्बली क्यों मचेगी?"

चार्ली बोला, "डर गई बेबी, डर की कुछ भी बात नहीं। वह आदर्श-विवाह करेंगे। उन के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर पाँच सौ युवक उसी समय पाँच सौ दलित पतित वेश्याओं का उद्धार करेंगे।"

शीला चौंक कर बोली, "तो क्या, मेरा रमेश किसी वेश्या को बहू बना कर लाएगा। नहीं······नहीं······वह······।"

बात काट कर बागल बोली, "इस में घबराने की क्या बात है मां! जो संसार के कल्याण के लिए आगे कदम बढ़ाएँगे उन्हें ही तो पहले शिव की तरह सृष्टि के विष को पीना होगा। इसी में तो उन का गौरव है।"

"पर मेरी बच्ची, यह गौरव बहुत महँगा पड़ेगा। ठाकुर के वंश में वेश्या बहू बन कर आएगी। कुछ समझ में नहीं आता, इस घर का ढाँचा क्या बनने वाला है?"

चार्ली बोला, "इस घर का ही नहीं माँ·········सारे देश का ढाँचा बदलने वाला है। जो कार्य बड़े बड़े भारत-सम्राट न कर सके वह भैया करेंगे। झाड़ दे कर कूड़ा करकट साफ़ कर देंगे। उन्हों ने और उनके साथियों ने देश में पनप रहे अन्याय, अविचार और व्यभिचार के विरुद्ध बिगुल बजा दिया है। वे विदेशियों द्वारा फैलाए गए मीठे ज़हर के प्रभाव का हरण करेंगे। अलसाए हुए देश वासियों को प्रमाद से जगा कर उन्हें कर्तव्य-पथ पर बढ़ने के लिए मजबूर कर देंगे। उन का आन्दोलन जंगल की आग की तरह दूर-दूर फैल जाएगा।"

बागल बोली, "मां······हमें इकट्ठे होकर उन का साथ देना होगा। एक दिन आएगा, जब सारी दुनिया के लोग कहेंगे कि एक भारतीय ने अपने

यश अपयश को ताक पर रख कर देश के पाप को समूल नष्ट कर दिया। कितना बड़ा दिन होगा वह।"

शीला कुछ उदास हो कर बोली, "हां··· महान दिन होगा, लेकिन कभी कभी ऐसे कामों में जान से हाथ भी धोने पड़ जाते हैं।"

फिर व्याकुल हो कर बोली, "नहीं······नहीं, नहीं; मैं अपने रमेश को यह घातक विष नहीं पीने दूंगी, कभी नहीं पीने दूंगी। तुम लोग सब चुप चाप षड्यंत्र रच रहे हो; मेरे रमेश··· ।"

चार्ली बोला, "मां······मोह में पड़कर······।"

वह उबल कर बोली, "मोह······हां, मोह ही सही, तुम्हारा किसी का क्या जाता है। मेरी इच्छा के बिना, मेरे बच्चे का बलिदान देने का तुम सब को क्या अधिकार है।"

चार्ली बोला, "मां! भावना में अपने गौरव को मत भूलो; तुम मां हो, और अपने बच्चों के कल्याण के लिए सर्वस्व होम कर देने का सामर्थ्य रखती हो।"

"तो, तुम लोग मेरे प्राण ले लो।"

बागल बोली, "मां, तुम इतनी एडवांसड विचारों की हो कर भी एक मामूली औरत की तरह आंसू बहाने लग गईं।"

"मामूली औरत, हां ····मैं केवल औरत हूं·· औरत; मेरे सीने में भी मां का दिल धड़कता है। जब तुम मां बनोगी तो तुम्हें······।"

बागल बोली, "विश्वास करो मां! लाखों करोड़ों देश वासियों के कल्याण के लिए, अपने लालों को हँसते हँसते होम कर दूंगी। इस देश की ठकुरानियों की यही रीत रही है और मैं इस रीत को तोड़ूंगी नहीं।"

"तुम तो ईसाई हो।"

"पर बहू तो ठाकुर वंश की हूँ। मुझे इसी वंश के लिए जीना है और अवसर मिला तो इसी वंश के लिये प्राण भी दूंगी।"

शीला चार्ली की ओर करुण दृष्टि से देखने लगी तो वह बोला, "घबराओ नहीं मां ! मैं भैया के साथ साथ रहूँगा। कहीं प्राणों की बलि देनी होगी तो पहले मैं आगे बढ़ूंगा। मैं भी सूरजवंशी हूं। लक्ष्मण की मर्यादा मुझ में भी तो है। मेरे रहते भैया का अहित नहीं हो सकता। यह समझो मां तुम्हारे राम-लक्ष्मण एक बार फिर पाप और अत्याचार के विरुद्ध मोर्चा लगाने चले हैं।"

"तो तुम भी उस दल में हो !"

बागल बोली, 'यह तो उस कमेटी के मंत्री हैं।

शीला जैसे हार कर लम्बा श्वास छोड़ कर बोली, "जैसी तुम लोगों की इच्छा; ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।"

तभी मिस्टर कोस भागते हुए वहां आ पहुंचे। शीला ने उनकी ओर जिज्ञासा पूर्ण दृष्टि से देखा तो बोले, "शीला डार्लिंग, हम बाल बाल बच गए। स्मिथ बयान देने से पहले ही मर चुका था।"

चार्ली बोला, "चलो अपनी मौत आप मर गया। सब की जान छूटी।"

मि० कोस बोले, "अरे पर तुम पीली क्यों पड़ रही हो। क्या बात है चार्ली !"

हँसने की कोशिश करती हुई वह बोली, "स्मिथ बयान नहीं दे सका। यह तो सचमुच भगवान की बड़ी कृपा हुई।"

"बिल्कुल; नहीं तो मेरा छुटकारा किसी प्रकार न था।"

बागल बोली, "डैडी, हमारी सब की प्रार्थना है कि आप भी अब ऐसे धन्धे छोड़ दीजिए। किस बात की कमी है घर में। रुपया पानी की तरह अपने आप चला आ रहा है। आप के ऐसे धन्धों से बड़े भैया को बहुत दुःख होगा।"

मि० कोस कान को हाथ लगा कर बोले, "मैं ने तो तौबा कर ली; कभी बुरे का साथ न दूंगा। एक पनडुब्बी का सारा माल खरीदने के लिए

रुपया माँग रहा था। मैंने देने का वायदा भी कर लिया था। भाग्य से शनीचर की शाम थी। अगले दिन भी बैंक बन्द था, सो बच गया। सोमवार बैंक खुलने से पहले वह वैसे दुनिया से छुट्टी पा गया। आज से मैं रमेश का साथ दूँगा, तन, मन और धन से।"

चार्ली भाग कर उससे लिपट कर बोला, "सच डैडी !"

"डैडी नहीं, पिता जी कहो; घर से इस अंग्रेजी सभ्यता के भूत को मार भगाओ। ठाकुर जसवन्तराय कोशल का यह वंश आज से पूर्ण भारतीय हो गया। शीला, सारे घर को धुलवा कर गंगा जल छिड़को। कुछ भी अभारतीयता इस घर में मुझे असह्य है। आज से मेरा नाम ठाकुर जगन्नाथ कोशल हो गया और चार्ली तुम्हारा नाम क्या हो ?"

"लक्ष्मण है पिता जी !"

"ठीक है, और बागल का नाम वन्दना, तुम्हें पसन्द है यह नाम बहू !"

बागल खुश होकर बोली, "आप का तो स्मिथ के मरते ही कायाकल्प हो गया।"

बोले, "वह मेरे तन मन में प्रेत की तरह घर कर गया था। तुम लोगों ने मुझे नींद से जगा दिया। मैं अपनी वंश परम्परागत चाल छोड़ कर दूसरे की चाल चलने लगा था ...अन्त में बुरी ठोकर खाई। मैं भारतीय हूं......और अपनी इस भारत भूमि के योग क्षेम के लिए तुम्हारा और रमेश का साथ दूंगा। जो कहोगे वही करूँगा। रमेश कहां है ?"

शीला ने जैसे घुटते हुए स्वर में जोर लगाकर कहा, "उसने देश भर के पाप का विष पीकर भगवान शंकर बनने की प्रतिज्ञा की है। एक वेश्या को बहू बनाकर इस घर में ला रहा है।

मिस्टर कोस प्रसन्न होकर बोले, "सच, वह निश्चय ही इंग्लैंड से कुछ सीख कर आ रहा है। कल मैं ने अखबार में भी उसके बारे में पढ़ा तो था। बड़ा बोल्ड स्टैप ले रहा है। पांच सौ एक युवकों का इतनी ही युवती

वेश्याओं के साथ ब्याह हो रहा है। और अपना रमेश उनकी रहनुमाई कर रहा है और उस महोत्सव का उद्घाटन हमारे केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री करेंगे। बहुत खूब ! ब्रेवो, ब्रेवो माई सन ·····मेरे रमेश बेटे !! मैं सब से पहले आगे बढ़कर उसे बधाई दूंगा। तुम भी तैयार हो जाओ शीला !"

नौकर ने आकर सुरेन्द्र बाबू की सूचना दी। चार्ली भाग कर उसे भीतर ले आया। मिस्टर कोस को प्रसन्न मुद्रा में देख कर पांव छू कर बोला, "नमस्ते डैडी !"

वह उसके कन्धे पर हाथ रख कर बोले, "आज से मैं ने अपना नाम बदल लिया है।"

"क्या ?"

"हां ·····आज से मैं ठाकुर जसवन्त राय का बेटा ठाकुर जगन्नाथ कोशल हूं। और डैडी की बजाय अब तुम भी मुझे पिता जी कहा करो।"

चार्ली सुरेन्द्र के कन्धे पर हाथ रख कर बोला, "यह क्या आप का नया आर्डर है पिता जी !"

"आर्डर नहीं, आज्ञा समझो ?" और वह खुद 'हो हो' हो करके हँस दिए।

चार्ली बोला, "तो क्यों न आज से घर भर के अंग्रेज़ी फ़ैशन की होली दहका दी जाए।"

"जरूर·······पर नए कपड़े सिलवाकर। अपने पुराने खानदानी दर्जी को बुला लाओ। मैं तो वही चूड़ीदार पायजामा और रेशमी अंगरखा पहनूंगा।"

शीला बोली, "तो क्या फिर से राजा बनने की सूझ रही है। प्रजा-तंत्र युग है स्वामी ?"

शीला बोली, "एक आवश्यक बात तुम्हें अकेले में कहनी है। ज़रा दूसरे कमरे में चलो।"

बागल बोली, "माँ······हम से चोरी हो तो हम लोग ही··· ।"

"नहीं तुम बैठो, मैं अभी आई।"

वह पति का हाथ पकड़ कर दूसरे कमरे में गई। कोस बोले, "क्या बात है।"

"एक बार प्यार से बोलो, शीला डार्लिंग!"

वह बोले, "शीला डार्लिंग!

वह भाग कर उनके गले मे लिपट गई।

—:०:—

११

गुरुवार के दिन शाम के लगभग चार बजे सफ़दरगंज रोड पर एक बहुत बड़ा जलूस निकला। सब से आगे रमेश और डेज़ी (जानकी) थे। हज़ारों स्त्री पुरुष रमेश का जय जयकार कह रहे थे। मिस्टर कोस ने शीला को कन्धे से झकझोरते हुए कहा, "शीला ! शीला !! देखो तुम्हारे बेटे का जलूस। हज़ारों लोग उसका जय जयकार कर रहे हैं। पाँच सौ के पाँच सौ नए ब्याहे जोड़े उसके साथ हैं। उठो, उनका स्वागत करो, उन्हें आशीर्वाद दो।"

शीला ने छज्जे में खड़े हो कर जो देखा, तो नेत्रों में स्नेह जल भर कर गद्‌गद् स्वर में बोली,

"आप का बेटा बहुत बड़े संग्राम का सेनानी हो कर आ रहा है। मैं उसकी कमर में तलवार बाँधूंगी और उसके माथे पर विजय का टीका लगाऊँगी।"

वह अभी कुछ और कहने जा रही थी कि जय-जयकार का उच्च घोष सामूहिक रूप में बङ्गले के मुख्य द्वार पर गूँज उठा। सब से पहले सोमदेव का हाथ पकड़े रमेश ने भीतर पाँव रखा। डेज़ी उसके पीछे पीछे भारतीय वेश-भूषा में सुसज्जित हो कर मंद-मंद गति से चल रही थी। और उनके पीछे शेष पाँच सौ नव दम्पतियों ने आगे क़दम बढ़ाया। शीला, कमला और बागल ने दौड़ते हुए आकर रमेश और उसकी पत्नी का स्वागत किया। चार्ली और गिरधर भाग कर ठाकुर साहब (मिस्टर कोस) के पास छज्जे पर जा पहुंचे।

ठाकुर साहब ने फूलों से भरी हुई टोकरी थाली के हाथ से लेकर नव दम्पतियों पर पुष्प वर्षा करना आरम्भ कर दी। बंगले का प्राङ्गण फूलों से भर गया। मिस्टर कोस भाग कर नीचे शीला के पास आ खड़े हुए। रमेश और डेज़ी ने झुक कर उनके पाँव छुए। वे प्रसन्नचित्त हो कर बोले, "लौंग लिव माई चिल्डरन !"

फिर दोनो कान छूते हुए बोले, 'नहीं, नहीं चिरंजीवी रहो मेरे बच्चो ! खूब बढ़ो–फूलो। तुम्हारा पिता ठाकुर जगन्नाथ कोशल आज से पूरी तरह तुम्हारे साथ है। तुम भी आशीर्वाद दो रमेश की माँ !"

शीला गम्भीर हो कर खड़ी कुछ सोच रही थी रमेश ने डेज़ी की तरफ़ संकेत कर के कहा, "माँ, तुम्हारे बेटे की बहू तुम्हें प्रणाम करती है, इसे आशीर्वाद दो।"

उसने जैसे स्वप्न से जाग कर रमेश को अपने सीने से लगा लिया और रुँधे हुए स्वर में बोली, "जुग जुग जियो मेरे लाल ! यह तुम्हारी बहू है ?"

"हाँ माँ !"

वह डेज़ी को ऊपर उठाती हुई बोली, "उठो बेटी !"

तदनन्तर पति का हाथ पकड़ कर सामने खड़े दूसरे जोड़ों की ओर देख कर बोली, "रमेश की माँ हो कर मैं तुम लोगों को एक साथ आशीर्वाद देती हूँ। तुम्हारा यह आगे बढ़ा हुआ पग इसी प्रकार आगे ही बढ़ता रहे। और दुनिया को दिखा दो मेरे बच्चो कि जो बात बड़े बड़े लोगों के सोचने तक सीमित रही उसे तुम लोगों ने कर के दिखा दिया। जाओ अपनी गृहस्थी क़ायम करो। मैं फिर आशीर्वाद देती हूँ।

मिस्टर कोस ने एक अंजलि लाल लाल फूलों की भर कर सामने खड़े जोड़ों पर बिखेर दी। रमेश और उसकी पत्नी को वहीं छोड़ कर सोमदेव सब दल-बल के साथ शहर की तरफ़ चल दिए। बागल और कमला परिणीता बहू को ले कर अन्दर ड्राइंग रूम में चली गईं। शीला ने अपनी धोती के छोर से खोल कर घर भर की चाबियों का गुच्छा नई बहू के हाथ पर रखते हुए कहा, "यह लो घर का सब चार्ज बड़ी बहू ! अब हम लोग आराम से बैठेंगे। सम्भालो

अपना घर द्वार ।"

उसके साथ ही उसने पुनः आनन्द विभोर हो कर जानकी को गले लगा लिया । जानकी गम्भीर स्वर में बोली, "मुझे ठुकरा तो न दोगी माँ, मैं पतिता हूँ ।"

शीला फिर उसे एक बार प्यार करके बोली, "पतित पावन ने तुम्हारा हाथ थाम कर तुम्हें पवित्र कर दिया बहू, क्या नाम है तुम्हारा ?"

रमेश बोला, "जानकी ।"

मिस्टर कोस ताली बजा कर बोले, "बहुत खूब, बहू का नाम जानकी, देवर का नाम लक्ष्मण । रमेश हो गए राम और रमेश की माँ, तुम हो गई कौशल्या ।"

शीला ने जानकी की ठोड़ी थोड़ी ऊँची करके कहा, "सचमुच चाँद का टुकड़ा है !"

जानकी ने एक बार फिर झुक कर सास के चरण छू लिए । रमेश बोला, "माँ, आशीर्वाद दो कि जिस आग में हम कूद पड़े हैं वह हमें जलाने की बजाय तपा कर कुन्दन की तरह चमका दे ।"

बागल बोली, "यह इनकी अग्नि परीक्षा है माँ ! देश के सहस्रों युवकों ने इस अग्नि कुण्ड में से गुज़रने का संकल्प किया है ।"

शीला बोली, "सच्चा संकल्प कभी विफल नहीं होता मेरे बच्चो । जगदम्बे सीता के अग्नि प्रवेश से आग को मनुष्य की सत्यता का आभास मिल चुका है । वह तुम्हारे सत्य के तेज के सम्मुख फीकी और शीतल पड़ जाएगी ।"

ठाकुर साहब पत्नी की ओर आश्चर्य से देख कर बोले, "अरे तुम इतना कुछ जानती हो ! मुझे तो कभी नहीं बताया, उल्टे मेरे ही रंग में रंग गई ।"

शीला पति के पाँव छूते हुए बोली, "वह केवल आपकी सन्तुष्टि के लिये था नाथ ! मैं क्लबों में नहीं, समाज-सुधार कार्यालयों में जाया करती थी । रमेश, चार्ली और उसकी पत्नी ने जब इस घर का ढाँचा बदला तो मैं

भी अवसर ताक कर इन के संग हो ली।"

ठाकुर साहब बोले "बहुत खूब, तब तो तुम एक अच्छी खासी अभिनेत्री भी हो !"

शीला बोली, "कुछ भी समझ लीजिए, आप की इच्छा के विरुद्ध जाकर आपको किसी भी तरह असन्तुष्ट नहीं करना चाहती थी।"

बागल ने सास की चरण-रज सिर पर लेते हुए कहा "तब, यह सब तुम्हारे ही मन का संकल्प है माँ ! मुझे क्षमा कर दो, मैं ने तुम्हें गलत समझा था।"

एकाएक चार्ली ने रमेश के पीछे आकर गर्जदार स्वर में कहा, "अटेंन्शन !"

सभी चौंक पड़े। वह लैफ्ट राईट, लैफ्ट राईट करता हुआ मुंह बिगाड़ कर बोला, "स्टैण्ड-एट-ईज़ !"

उसकी मुद्रा देख कर सभी खिलखिला कर हँस पड़े। रमेश ने पूछा, "यह फौज़ किधर किधर कूच करेगी, लक्ष्मण भैया ?"

चार्ली अपने कुर्त्ते की बाहें ऊपर चढ़ाता हुआ बोला, "तुम्हारे साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर चलेगी भैया !"

वह चक्कर काटता हुआ और लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट बोलता हुआ पिता के साने एकदम सीधा खड़ा हो गया। ठाकुर साहब उसकी ओर देख कर पुनः ज़ोर का ठहाका मार कर हँस पड़े। तो वह भला सा मुँह बना कर बोला, "इसमें हँसने की क्या बात है डैडी……नहीं, नहीं, अब तो आप डैडी से पिता जी हो गए।"

उसकी इस बात पर शीला और जानकी भी हंस पड़ीं।

—०—

१२

रमेश और सोमदेव जी ने जिस सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया उसकी पृष्ठभूमि में बहुत ही बलिष्ठ हाथ और सूक्ष्म दृष्टि थी। उसका पता तब चला जब पाँच सौ सम्भ्रान्त युवकों ने पतिताओं का पाणिग्रहण किया और एक सप्ताह होते न होते देश भर में हंगामा मच गया।

राजकीय नेताओं ने प्रशंसा की, लोगों को ज़बानी प्रोत्साहन भी दिया पर इस तथ्य को ठीक ढंग से राजकीय सम्बल प्राप्त न हो सका। परिणाम-स्वरूप समाज के अन्य लोग इन लोगों से भीतर ही भीतर खिंच गए।

इस खिंचाव को बढ़ावा देने वाले वे लोग थे जिनका हलुवा माण्डा इन पतिता कहलाने वाली स्त्रियों पर ही आधारित था।

अजमेरी गेट के पास एक गुप्त स्थान में कुछ लोग रात को एकत्र हुए। प्रश्न था कि किस प्रकार इन समाज सुधारकों को हतोत्साह किया जाए। एक अधेड़ आयु की स्त्री ने मुँह में पान की गिलोरी दबाते हुये कहा, "गोबिन्द चाचा, अगर सब की सब वेश्याएं इसी प्रकार घर की बहू रानियाँ बन गईं तो हम लोगों का या तो विष खाना होगा या संन्यास लेना होगा।"

गोविन्द एक घुटा बना खुर्राण्ट था। उसने ज़िन्दगी की पचपन बहारें इसी तरह मौज उड़ाते बिताई थीं। बिना कुछ किये धरे आठ दस भड़ौती लौण्डियों के सिर पर उड़ा फिरता था। रास्ते में चलती लड़की को ऐसी सफ़ाई से उड़ाता था कि दोनों कान खबर न हो। स्मिथ के लम्बे चौड़े काले

कारोबार का भी इसने बहुत सा भार अपने कन्धों पर ले रखा था। उसके बदले हर महीने कई हज़ार की बँधी रकम स्मिथ से पा लेता था। विदेशी माल की चुंगी का हेर फेर वह लड़कियों द्वारा ही करवाता था। बड़े बड़े होटलों में खुबसूरत लड़कियों की बहुधा सप्लाई भी इसी के पास थी। बला का तेज़ दिमाग़ आदमी था। उसका प्रबन्ध नादिर शाह दुर्रानी से कम न था। इधर से एक योजना उसके दिमाग़ में फूटी। उधर सभी कार्यकर्ताओं के हाथ उसके मूक संकेत पर सक्रिय हो उठते थे।

आयु के साथ साथ उसका अनुभव भी बढ़ गया था। उसकी गिद्ध दृष्टि में विशेष प्रकार की चमक आ गई थी। दुनिया को धोखा देने के लिये दुर्गा का भक्त बना हुआ था। मन्दिर में बैठ कर सब से ऊँचे स्वर में कीर्त्तन करता था। और कभी कभी अवसर पाते ही वहीं से कोई न कोई रूपसी कन्या उड़वा देता। यह क्रम उसका जीवन भर चला और किसी को उस पर संदेह तक न हुआ। वेश्यालय खुले थे। रूप के रसिकों का बाज़ार लगा था। जहाँ हाट में एक हज़ार क़िस्म के सौदे हों वहां दो चार नए सौदों की छान बीन कौन करता है। पर, अब मामला दूसरा हो गया। पहले सरकार ने वेश्यालय बन्द किए तो उसका कारोबार बड़े बड़े होटलों में चला। गुप्त अड्डे बन गये। वेश्याओं को भी अपना पेट भरना था। वे संकेत पर नाच रही थीं, किन्तु इन सुधारकों के आक्रमण का कोई जवाब न था। वेश्याओं को गृहस्थियों में स्थान मिलने लगा। उपेक्षित और मजबूर औरतें, घरों में पनाह पाकर सुख शान्ति का अनुभव करने लगीं। यूं कहिए, गोविन्द की हाट का सौदा तेज़ी से निबटने लगा। अब दुकान ठप्प होने में क्या कसर बाक़ी रह गई। वह गहन चिन्तन में लीन था। अधेड़ स्त्री ने पुनः अपना प्रश्न दोहराया।

गोविन्द अभी तक मौन था। उस स्त्री ने व्याकुल स्वर में तीसरी बार कहा "हम सब को तुम्हारी बुद्धि का आश्रय है, गोविन्द चाचा! और तुम मुँह में दही जमाये बैठे हो। कहो तो सब के सब यमुना में कूद पड़ें या·····!"

गोविन्द ने गम्भीर होकर कहा, "घबराने से कुछ नहीं होगा जमीला, स्थिति की गम्भीरता पर विचार करना आवश्यक है। हमारे विपक्ष में मामूली आदमी होते तो मैं कभी का उन्हें मसल डालता। सब से बड़ी चिन्ता यह है कि अब तक कई हज़ार वेश्याएँ देश भर में विपक्षियों से जा मिली हैं। घर के हज़ारों भेदी विपक्ष में चले गये। ऊपर से ठाकुर और करोड़ों पति सेठ उन लोगों के साथ हैं।"

यह भी सब कुछ नहीं था। हमें पछाड़ा है तो बड़े ठाकुर के लड़के रमेश ने। स्मिथ के मरने के बाद रमेश की पीठ पर खड़ा हो गया। क्या मिस्टर कोस बना फिरता था। साला गिरगट की तरह वक्त पर रंग बदल गया। काश, इसका भेद स्मिथ साहिब हमें बता जाते तो ····।"

क्रोध के मारे उसके मुँह से शब्द न निकल रहे थे। दाँत पीसता हुआ बोला, "जी चाहता है कमबख्तों का खून कर दूं।"

एक लम्बा चौड़ा आदमी मूँछों पर ताव देता हुआ बोला, "तो हुक्म करो चाचा, तुम्हारा यह गुलाम उसे कल का सूरज न देखने देगा।"

गोविन्द ने उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "यह वक्त शेर की तरह गुर्रा कर मैदान में कूदने का नहीं, लोमड़ी की तरह दबे पाँव चलने का है। और वह भी बहुत होशियारी से।"

"तो जैसा कहो चाचा!"

"अभी एकाएक तो कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा काली।"

फिर उसने काली के नेत्रों में ध्यान-पूर्वक देखकर कहा, "तुम ही बताओ, क्या करना चाहिए?

काली बोला, "मेरे विचार में तो रमेश और सोमदेव को ठिकाने लगा देने से मामला ठण्डा पड़ जाएगा।"

गोविन्द बोला, "तुम्हारा वहम है काली! इस का सूत्रधार तो कोई दूसरा ही है।"

जमीला ने जिज्ञासा की, "दूसरा कौन, क्या रमेश का बाप ठाकुर

जगन्नाथ !"

"नहीं।"

"गिरधर ?"

"नहीं।"

"डेज़ी .....?"

"अरी, यह तो शतरंज के मोहरे हैं। इन्हें चलाने वाला इस तरह छिपा बैठा है कि कोई कोशिश करके भी उसे ढूंढ न सके।"

काली बोला, "तुम तो जानते हो न उसे चाचा !"

"पूरी तरह नहीं। बस इतना सुना था एक बार स्मिथ के मुंह से कि रमेश के दादा ठाकुर जसवन्त राय का कोई सलाहकार है। जगन्नाथ ठाकुर के साहिबी ठाठ से तंग आ कर बहुत दिन हुए इन की ड्योढ़ी से विदा हो गया था। पहले जबलपुर था। रमेश उसे अपने साथ यहां ले आया। उसी की यह सब कारगुज़ारी है। बहुत ही चालाक और ज़बरदस्त है। अस्सी साल के ऊपर उमर है लेकिन, अगर तुम्हारा हाथ पकड़ ले काली, तो गुट्टा उतार दे।"

काली बोला, "उसका पता लगाओ, फिर उसे देख लूंगा। यूसफ़ भाई और मैं दोनों उसके लिये बहुत रहेंगे।"

"अरे कहा न भाई, यह वक्त इस तरह हाय तोबा मचाने का नहीं।"

जमीला खीझ कर बोली, "कुछ बताओ भी चाचा, कुछ करना ही होगा। और जो मरना ही है तो दो चार को साथ लेकर क्यों न मरा जाए।"

गोविन्द के माथे पर बल पड़ गए। भँवें सिकोड़कर कुछ देर धरती की ओर देखता रहा। सभी सदस्य परस्पर विचार विनिमय कर रहे थे। अचानक जमीला बोली, "चाचा का कहना कुछ ठीक भी है। वे लोग बुद्धि बल से हमें पछाड़ रहे हैं। उनको यदि हराया जा सकता हैं तो केवल कूट नीति से। बल खाकर चलने से शायद वे लोग किसी बल में उलझ जाएं।"

गोविन्द एकाएक उछल कर बोला, "वह मारा; वाह क्या दूर की कौड़ी फेंकी जमीला तुमने ! सचमुच अक़्लमन्द हो। लो सुनो, अब मैं बताता हूं बल खा कर चलने का तरीक़ा !"

सभी उसकी ओर कान लगाकर बैठ गये तो बोला, "कल से हम सब कीर्त्तन मण्डली बनाकर जगह जगह पहुंचेंगे। रोज़ाना कहीं न कहीं कार्य-क्रम जमाना होगा। जमीला अपने साथ आठ दस अच्छी गाने वालियों को ले लेगी। यह औरतों में जाकर सुरीले भजन गाएँगी। और हम लोग रात को किसी भी मन्दिर में रोज़ दुर्गा का कीर्त्तन करेंगे। किसी को ज़ाहिर न हो कि हम लोगों का आपस में गठ जोड़ है। भीड़ बढ़ाने के लिए खूब प्रसाद बाँटो।"

काली बोला, " इस से क्या होगा ?"

"अरे सुन·········अगर यह योजना ठीक से चल निकली तो हम वेश्याओं को ज़बरदस्ती अपने बीच में खींच लाएंगे। सरकार ने बाज़ार बन्द कर दिए, पर सौदा पास में होगा तो कहीं भी छिप कर बेचेंगे। इसके इलावा अनेकों दूसरे काम भी हैं जो उन्हीं औरतों से करा लेंगे।"

जमीला ने प्यार में आकर गोविन्द के गले में बांहें डाल दी। और झूम कर बोली, "आखिर चाचा, हो न उस्ताद !"

गोविन्द बोला, "तो, बस तय रहा। कल से यह नाटक चालू।

जहां देखो कि कोई वैसी औरत कीर्त्तन भजन में बैठी है। फौरन उठ जाओ। और साफ़ कह दो कि हम वेश्याओं के साथ नहीं बैठेंगी।"

काली बोला, "जो किसी ने पहचान लिया तो ।"

"नहीं पहचानेगा कोई भी।" जमीला ने आगे बढ़कर कहा।

गोविन्द बोला, "फिर भी बचकर चलना। शत्रु बहुत होशियार और बलवान है।"

इन लोगों की गोष्ठी चल रही थी। सभी अपनी अपनी सलाह पेश कर रहे थे किन्तु एक बूढ़ा चुप चाप आंखें बन्द किए एक कोने में सो रहा

था। सभी उठ कर चले तो गोबिन्द ने उसे हिला कर कहा, "अरे मियां, घर जा कर सो जाओ। जब यहां आना था तो भांग थोड़ी कम पी लेते।"

वह बोला, "मेरे सिर में दर्द है भाई। कुछ सोचा?"

गोबिन्द ने उस की ओर उपेक्षा से देखते हुए कहा, "तुम अपनी छाने जाओ बाबा, तुम्हें क्या! चलो, चलते हो!"

"हां……।"

वह फिर लम्बी तान कर सोने लगा तो गोबिन्द ने उसे सहारा दे कर खड़ा करते हुए कहा, "अब यहाँ से चलो बाबा, ओउफ़, किस क़दर नशे में है।"

वह उसे वहीं छोड़ कर सब के साथ चल दिया। कालो बोला, "बहुत तमाशबीन रहा होगा यह। अब बुढ़ापे में कहाँ जाए। रण्डियों के बाज़ार बन्द हो गए तो बेचारा खूबसूरती देखने को तरस गया। भाँग पी कर ग़म ग़लत कर लेता है। और आँखें मूंद कर कहीं भी लुढ़क जाता है।"

गोबिन्द जमीला के कन्धे पर हाथ फेर कर बोला, 'तुम ही आज की रात इस के पास रहो न; बेचारा कुछ देर खुश हो लेगा। आसीस देगा।" और वह हँस पड़ा।

जमीला ने कटीली नज़र उस पर डाल कर कहा, "चाचा, क्या अपने दिल की बात तो नहीं कह रहे।"

वह बोला, "हुश पगलो! आज तक नहीं कहा तो अब क्या……।"

काली बोला, "कोई जुर्म तो नहीं चाचा, अभी तो जवान हो। चाहो तो आज ही किसी सोलह साल की लौण्डिया से शादी कर डालो।"

गोबिन्द बोला, "पहले यह आफ़त तो टले काली, फिर चारों तरफ़ बहार ही बहार है। जेब में नोटों की गड्डियां और बग़ल में …।"

काली बोला, "छोटी सी कमसिन चाची।"

गोबिन्द बोला, "चाची तुम्हारी, मेरी तो……।"

जमीला ज़ोर से क़हक़हा लगा कर हँस पड़ी।

* १३ *

गोविन्द चाचा के सभापतित्व में चल रही गोष्ठी समाप्त हो गई। सभी चले गए तो वह बूढ़ा भंगड़ चुस्ती से उठ बैठा। कमरे में उसके सिवा और कोई न था। उसने एक क्षण के लिए आँखें बन्द करके कुछ सोचा और अगले क्षण तेज़ी से भाग गया।

रात के बारह बजे वह बूढ़ा सोमदेव के मकान के द्वार पर आ पहुंचा। भीतर घण्टी की आवाज़ सुनकर सोमदेव ने द्वार खोला जो बूढ़े को देख कर चौंक गया, बोला, "इतनी रात गए रणजीत काका !"

बूढ़े ने उसके मुँह पर हाथ रख कर भीतर आते हुए कहा, "घर के बाहर मेरा नाम न लो सोमदेव, चलो भीतर।"

फिर एक बार बाहर आकर ध्यान-पूर्वक गली के सिरे तक देखता रहा। तब अन्दर से कुण्डी लगा कर सोमदेव का हाथ पकड़ बड़े कमरे की तरफ़ खींचता हुआ बोला, "बहुत बड़ा बवण्डर उठने को है। शहर भर के गुण्डों की बैठक से आ रहा हूँ।"

"वहां क्या करने गए थे काका ?

"वही बताने तो आया हूँ, पहले ठीक से जम कर मेरी बात सुनो।"

'कहो······।"

रणजीत काका ने पलंग पर बैठ कर गोविन्द और जमीला के बीच में हुई सब बातें एक एक कर के बताईं तो सोमदेव बोले, "तुम्हें कहीं वे दुष्ट पहचान लेते तो······।"

"तो क्या था, मेरे साथ मेरी भवानी थी सोमदेव, और तुम जानते हो कि इसके हाथ में रहते एक सौ जवान भी एक साथ टूट पड़ें तो सब कुछ ही देर में तुम्हारे इस ठाकुर काका के क़दमों में तड़पते हुए दीखेंगे।"

"वह तो ठीक है काका फिर भी ।"

"फिर भी कुछ नहीं, काम की बात करो, अभी भगवान को रणजीत ठाकुर की अपने वहाँ कोई आवश्यकता नहीं। अब यह सोचो कि किस तरह इस उठने वाले बवण्डर को दबाया जाय। शत्रु का जाल भी कोई कम मजबूत न होगा। उनका सूत्रधार गोविन्द नाम का पुराना घुटा छिपा अपराधी है। बहुत होशियार और सूंघ सूंघ कर चलने वाला है।"

सोमदेव बोला, "तो इधर भी उसका सिर कुचलने के लिए हमारे ठाकुर काका हैं।"

"वह तो हुआ, पर यह बताओ, अब क्या करना होगा ?"

"जैसे कहो काका ! तुम आदेश दो, हम लोग तैयार हैं !"

वह बोले, "कल सूर्योदय होते ही सभी सदस्यों को बुला कर योजना तैयार करो। हमारे कार्य-क्रम के अन्तर्गत बने हुए नव-दम्पतियों को सूचित करो कि वे लोग ऐसे भजन-कीर्तन समारोहों में भाग न लें ताकि जनता में कोई व्यर्थ का ही हल्ला खड़ा न हो, और हम गोविन्द और जमीला के दल को घेरने का यत्न करेंगे। रमेश ठाकुर की वह जानकी (डेज़ी) इन गुण्डों में अधिकतर लोगों को पहचानती होगी।"

"तब तो स्मिथ के अड्डों से मिली हुई बहुत सी लड़कियाँ भी बहुत से गुण्डों को जानती पहचानती होंगी।"

बात पर ज़ोर देकर ठाकुर काका बोले, "निश्चय ही उन सबको हमारी सहायता करनी होगी। इसी में उन की भलाई है, और हमारी जीत है।"

गिरधर किसी कार्यवश वहीं था। ठाकुर काका की आवाज़ सुनकर कमरे में चला आया। ठाकुर बोला, "क्या रमेश ठाकुर भी यहीं हैं ?"

"नहीं दादा जी वह और चार्ली शाम को आगरा गए हैं।"

"कब लौटेंगे ?"

"सवेरे।"

सोमदेव कुछ कहने को थे कि देव जैसा हृष्ट पुष्ट पहलवान आदमी खिड़की में से अन्दर कूद गया। उसके हाथ में लम्बा चमकता हुआ छुरा था। उसने गरज कर कहा "तुम्हारा सवेरा हो गया समझो।"

रणजीत ठाकुर अपनी तलवार अलमारी में बन्द कर चुके थे। इस से सोमदेव को एकाएक चिन्ता होनी अनिवार्य थी। गिरधर जवान था। कन्धे से कम्बल परे फेंक कर आगे कूदने लगा तो ठाकुर काका ने उसे परे हटाते हुए कहा "यह मेरा शिकार है गिरधर,। लो कालो, रणजीत ठाकुर को अच्छी तरह देख लो। बहुत इच्छा थी न तुम्हारी मुझ से मिलने की।"

काली मूँछों पर ताव देता हुआ बोला, "जिन्दा तो देख लिया, अब तुम्हारी लाश देखूँगा ठाकुर, बहुत हो चुका बहुरूपियापन। अब मरने को तैयार हो जा।"

ठाकुर खाली हाथ खड़े मुस्करा रहे थे, बोले, "तुम वार करो काली। तुम्हारी वीरता की परीक्षा का समय है।"

"लेकिन इस परीक्षा का परिणाम देखने लिए तो तुम लोगों में से कोई भी न बचेगा।"

"यह अभी कैसे कहा जा सकता है।" इसके साथ ही ठाकुर काका ने बाघ की तरह हवा में उछल कर काली का छुरे वाला हाथ थाम लिया। और दाएँ हाथ का एक जोरदार मुक्का उसकी नाक पर जड़ दिया। यह सब कुछ इतनी तेज़ी से हो गया कि काली को सम्हलने का अवसर न मिल पाया। रणजीत ठाकुर ने उसके हाथ को मरोड़ना शुरू किया।

कालो भी कम बलवान न था। छुरा अभी तक उसने हाथ में मजबूती से पकड़ रक्खा था। ठाकुर ने उसके हाथ को और मरोड़ा तो वह तड़प कर भीतर ही भीतर बल खा गया।

दोनों प्रतिद्वन्दियों के मुख एक दूसरे के सामने हो गए। काली बोला "अपने दोनों साथियों को भी बुला ले ठाकुर, वे भी दिल के अरमान निकाल लें।"

ठाकुर ने एक घूँसा और उसकी कनपटियों पर रसीद कर के कहा, "बकवास मत करो काली। आज तुम मेरे हाथ से ज़रूर मारे जाओगे।"

तदनन्तर दोनों कुछ देर भूझते रहे। ठाकुर ने अपनी जाँघ की ढीक देकर काली को नीचे गिरा दिया। उसके सीने पर पांव रखने को ही था कि वह तेजी से सांप की तरह बल खा कर उलट गया।

अब की ठाकुर नीचे थे। काली के छुरे वाला हाथ अब भी उनके हाथ में था। काली ने बहुत जोर लगाया पर उसका वह हाथ एक इंच भी न हिल सका। दोनो लम्बे लम्बे साँस भर रहे थे। काली ने एक घूंसा तान कर जो मुंह पर मारा तो ठाकुर ने उसका छुरे वाला हाथ मोड़ कर सामने कर दिया।

रक्त की धार बह निकली। काली का छुरा उसी के दूसरे हाथ के आर पार हो गया। ठाकुर ने ज़ोर से गरज कर कहा, "जय महाकाल !" और दूसरे क्षण छुरा छिटक कर दूर जा गिरा। सोमदेव ने आगे बढ़ कर छुरा उठा लिया। गिरधर बोला, "दादा, कहो तो तलवार निकाल दूँ !"

वह हँस कर बोले, "इस मुर्दे के लिए" उसके साथ ही बूढ़े ठाकुर के मुख पर राजपूती तेज चमक उठा। उसकी आँखें लाल हो उठीं। उन्होंने काली के बालों को नोचते हुए लगातार कई घूँसे उसके मुंह पर मारे। वह लड़खड़ा कर गिर गया। उठकर खड़ा रहने का सामर्थ्य भी उसमें नहीं था। एक बार सिर उठाने का यत्न करके अचेत हो गया।

कोई दो घन्टे बाद पुलिस की देख रेख में वह अस्पताल पहुंचा दिया गया। छुरे पर उसका नाम खुदा था।

धार पर तीखा विष लगा रहने के कारण प्रातः-काल होने से पूर्व ही वह बिना कुछ कहे सुने मर गया।

सोमदेव और ठाकुर जगन्नाथ की प्रार्थना पर इस घटना को सरकार ने गुप्त रखा। और अगले दिन से ही गोविन्द के दल का डट कर मुकाबला करने के लिये ये लोग तैयार हो गये।

ठाकुर जगन्नाथ (कोम) ने दोपहर को खाने के समय रणजीत ठाकुर के चरण छूकर कहा, "काका, मैं ने एक दिन उपेक्षा से तुम्हारी ओर से आंखें फेरी थीं। उसके बाद तुम्हारी कोई खोज खबर न ली। पैन्शन के रुपए भी तुमने स्वीकार नहीं किए। मैं ने तब भी परवाह न की। रमेश की मां ने मुझे ज़रूर तुम्हारे बारे में कई बार कहा। मैं ने कान नहीं धरे। जिस नशे मे चूर होकर विदेश मे लौटा था, उसी में बरसों मदहोश पड़ा रहा। आखिर एक दिन जब मेरे ही बच्चों ने मेरी आंखों में अंगुलियां देकर मुझे जगाया तो मैं ने अपने आप को पहचाना परखा; उस दिन तुम्हारी याद ज़रूर आई थी। लेकिन सोचा, जिस रखवाले को अपने हाथों धक्का दे दिया, अब उसे किस मुँह से अपनी रक्षा के लिए पुकारू।

इतने दिन बाद आज तुम्हारे दर्शन होगये काका, यही मेरा सौभाग्य है।"

फिर कुछ देर रुक कर बोले, "याद है, मैं ने मां साहिब की फोटो के फरेम को उखाड़ने के लिये कहा था। तुम उसी से ज्यादा नाराज़ हो गये। मैं ने भी दोबारा उस बात को सोचने का साहस न किया, जैसे परोक्ष में रह कर भी तुम्हारी आत्मा की आवाज़ मेरे कानों से आ टकराती थी। वह फोटो अब भी उसी हालत में हैं। मुझ से आंख बचाकर शीला रोज़ उसे धूप देती रही। शायद आरती भी उतारती रही हो।"

शीला ने बीच में टोका, "तो क्या मैं ने कोई अपराध किया, स्वामी!"

"अपराध; अपराधी तो इस घर में केवल मैं हूं। मैं ने बीते दिनों में बहुत कुछ ऐसा भी किया है कि अब जिसकी स्मृतिमात्र से भयभीत हो

उठता हूं। मेरे पापों का लेखा जोखा, या तो भगवान के पास है या बहुत कुछ स्मिथ जानता था।"

रणजीत ठाकुर बोले, "भूल जाओ बेटा, उस भयावह अतीत को। तुम्हारे घर में रमेश, चार्ली, बागल और डेज़ी के रूप में चार पवित्र नदियां फूट पड़ी हैं जिनमे समूचे देश का मल धुल जाएगा।"

ठाकुर जगन्नाथ बोले, "काका चार्ली का नाम लक्ष्मण, बागल का वन्दना और डेज़ी का नाम जानकी हो गया है। अब यह घर फिर से तुम जैसे देवपुरुषों की हुंकार से गुंजित होगा।"

"ज़रूर होगा बेटा, ज़रूर होगा! आओ, भोजन के पहले मां साहिब के आगे प्रार्थना करें कि वह हम सब को कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दें!"

नौकर भोजन परसने की तैयारी कर रहे थे। और वे सब ठकुरायन मां की तस्वीर के आगे हाथ जोड़ कर बैठ गए।

१४

उसी दिन रणजीत ठाकुर की अध्यक्षता में सब सदस्यों में बहुत देर तक विचार विमर्श होता रहा। शीला और वन्दना को नगर की प्रतिष्ठित महिला-समितियों से मेल जोड़ बढ़ाने का कार्य सौंपा गया। गुण्डों की सब गुप्त कार्यवाहियों का पता लगाने का भार जानकी ने अपने ऊपर ले लिया। रमेश और चार्ली सोमदेव के साथ खुले मैदान में कूद गए। गिरधर रणजीत ठाकुर के साथ जुट गया। और इन सब की रक्षा का भार ठाकुर जगन्नाथ ने अपने ऊपर ले लिया। बाक़ायदा सैनिक तैयारी के साथ इन लोगों ने काम चालू किया। रणजीत ठाकुर और गिरधर गन्दे और बदनाम लोगों में जाकर बस गए। कुछ ही दिन में ठाकुर और काका और गोविन्द में खूब छनने लगी।

गोविन्द उसे पहुंचा हुआ सिद्ध फ़क़ीर समझने लगा। धीरे धीरे सारा भेद ठाकुर काका के कानों में से होता हुआ उनके दिल की तह में छिप गया।

जमीला के भजनों ने दूर दूर तक हवा बांध दी। बड़े बड़े घरानों की स्त्रियाँ उसके निकट आगईं। उसने अवसर ताक कर अपने विषाक्त पंजे बढ़ाने चाहे पर, शीला और वन्दना के आगे उसकी पेश न गई। उन दोनों की निगाह से बच कर रहना उसके लिए असम्भव हो गया। और उन दोनों का सूत्र उसे चारों ओर से लपेटने के लिए ढीला होने लगा। सूत्र बढ़ता गया। जमीला पीछे हटती गई; हटती गई, पर कहाँ तक पीछे हटती। आखिर एक दिन बुरी तरह उलझ कर चारों खाने चित्त गिर गई।

बात यूँ हुई कि हौज़ काज़ी के पास कूचा पातीराम में खुले आङ्गन में कीर्तन आरम्भ हुआ। जमीला अपने दल-बल के साथ भजन गाने में लीन थी। जनता उन लोगों के सुरीले भजनों से मुग्ध होकर भूम रही थी कि एकाएक जमीला के अर्धनिमीलित नेत्र स्त्रियों में बैठी जानकी (डेज़ी) पर जम गए। वह बहुत देर तक उसे घूर कर देखती रही। शील और वन्दना भी इस बात को ताड़ गईं। जमीला ने एक दूर खड़े आदमी को संकेत किया। वह तुरन्त भूमता हुआ जोर २ से सिर हिलाते हुए बजरंग बली के तैल चित्र के आगे जम कर उच्च स्वर में जय-जयकार करने लगा। फिर खड़ा होकर नाचने लगा। तभी जमीला ने अपनी साथिनों के साथ खड़ी होकर उसे नमस्कार करके चिल्लाना शुरू किया, 'भगत जी आगए। पीछे हट जाओ। बहनो, इनके शरीर में हनुमान जी का प्रवेश हुआ करता है। बहुत सिद्ध पुरुष हैं। मन की बात जानते हैं। कोई भी स्त्री यदि अशुद्ध या पतित हो वह तुरन्त चली जाए। नहीं तो बिगड़ उठेंगे फिर किसी की नहीं सुनेंगे।"

वन्दना ने निकट होकर पूछा, "क्यों जी आप तो इन भगत जी को बहुत दिनों से जानती होंगी !"

वह बात उड़ा कर बोली, "अरे, इनकी महिम कौन नहीं जानता ! घट घट के वासी हैं। इन के दर्शन ही बड़े भाग से होते हैं।"

तभी भगत जी सिर हिलाते हुए उछल कूद मचा कर बोले, "मुझे यहां पतित स्त्री दिखाई दे रही है। मैं सर्वनाश कर दूंगा।'

जमीला ने पूछा, "कहां है भगत जी, क्या नाम है उसका ?"

वह फिर कुछ देर सिर घुमा कर बोला, "डेज़ी नाम की ईसाई लड़की है। वह देखो उधर बैठी है। उसे फ़ौरन निकाल दो। वह भ्रष्ट है।'

जमीला बोली, "क्षमा कीजिए बजरंग बली ! आप तो देव हैं। उसका भी उद्धार कीजिए।"

"हूँ......ऊँ......हूँ; चली जा लड़की, नहीं तो सबको नष्ट कर दूँगा !"

जमीला ने जानकी के निकट आकर कड़े स्वर में कहा, "जाती क्यों नहीं, सुन नहीं रही, वह क्या कर रहे हैं। तुम्हें बजरंग बली की नाश ीला से डर नहीं लगता क्या ?"

जानकी मुस्करा कर बोली, "डरूँ तो तब जो वह सचमुच बजरंग बली हों। यह तो अभिनय कर रहा है।"

जमीला दोनों कान छूकर आँखें झपकती हुई बोली, "राम, राम राम ! क्या कह रही है लड़की, बजरंग बली अभिनय करने तुम्हारे पास आएंगे।"

"मैं तो नहीं कहती। मेरे तो विचार में वह बार २ ऐसे धरती पर नहीं आते। यह सब ढोंग है।"

भगत डेजी की बात पर उछल कूद मचाने लगा तो वन्दना ने उसके सामने खड़े होकर कड़कदार आवाज़ में कहा, "क्यों औरतों को बेकार डराने की कोशिश करते हो। यह हंटर देखते हो !"

जमीला बोली, "तुम क्यों बीच में पड़ती हो बीबी ! जिसे कहा वह सुलझे।" वन्दना बोली, "वह मेरी जेठानी है, जिस पर यह ढोंगी कीचड़ उछालता है। और तुम भी ढकी रहो बेगम; हम सब जानते हैं। भला चाहो तो चुपचाप इसे चले जाने को कह दो। बात बढ़ेगी तो व्यर्थ में तुम्हारा फजीता होगा। यह ठाकुर जगन्नाथ कोशल की पुत्र-वधू है। इसे छेड़ने की कोशिश न करो। आग से खेलोगी तो जल जाओगी।"

वह बुरा सा मुँह बना कर बोली, "मुझे क्या पड़ी है। आप भुगत लेगी।" भगत छलांग मारकर दूसरी ओर चला गया। बात कीर्तन के स्वरों में खो गई। जब तक अन्य लोगों का ध्यान उस ओर होता, वह चुपचाप भजन गाती हुई अपने स्थान पर जा बैठी। जानकी उठकर शीला और बन्दना के पास आ बैठी। कुछ देर तीनों में कानाफूसी हुई। फिर सब उठकर चौरासी घण्टा की तरफ चल दीं।

चौरासी घण्टा के पीछे कूचा माई दास में पहुँचकर शीला बोली, 'बन्दना तुम जानकी को लेकर घर जाओ। चलो तुम्हें तुरकमान गेट से बस में बिठा दूं। और मैं यहाँ से सोमदेव जी के वहाँ जाऊंगी।"

बन्दना बोली, "मां साहिब, अभी आप भी हमारे साथ घर चलें। पिता जी से सलाह कर के चली जाना। नहीं, तो हम तुम्हारा साथ दें।"

वह बोली, "नहीं बेटी, रमेश और लक्ष्मण घर आए होंगे। रात हो गई, तुम लोग जाकर उनके साथ भोजन करो। मैं जल्दी लौटने का यत्न करूँगी। महिला-संघ के कार्यालय में आज नहीं, कल एक साथ चलेंगी। चलो, देर न करो, तुम्हें बस स्टैण्ड तक ......।"

बात काट कर बन्दना बोली, "वहां हम दोनों चली जाएँगी। आप जल्दी लौट आइए।"

भजन कीर्तन समाप्त करके जमीला सीधी गोविन्द के पास पहुंची। वह किसी विदेशी के साथ कोई साज़ बाज़ कर रहा था। जमीला को घबराई हुई देख कर उसने निकट आकर बोला, "क्या बात है? यह क्या सूरत बना रक्खी है?"

वह उसे बाहिर बुला कर बोली, "वे लोग बहुत तेज़ हैं। हम लोग आज पिटते पिटते ही बचे। अगर मामले को मैं उड़ा न देती तो हमारा भाण्डा फूटने में कसर न थी।"

गोविन्द बोला, "रशीद ने ठीक से काम नहीं किया होगा।"

"उसने कोई कसर नहीं छोड़ी, किन्तु हमारे दुश्मन जैसे हमारी एक एक बात जानते हैं।"

गोविन्द चिन्तित होकर बोला, "काली पता नहीं कहाँ चला गया। उस दिन से ऐसा ग़ायब हुआ कि सूरत नहीं दिखाई। वह बहादुर आ जाए तो सब काम सीधा हो जाए।"

"वह बोली, "मुझे तो शक है कि उन दुष्टों ने या तो उसे कहीं ठिकाने लगा दिया या रुपए के लोभ में फांस लिया।"

"रुपए का लोभ वह नहीं जानता। इसका मुझे भरोसा है। दूसरी कोई बात हो गई हो, तो अभी तक हमें पता कैसे नहीं चला।"

वह बोली, "रुपए से क्या नहीं होता। बात दबा दी गई। खैर, उसकी खोज की जाएगी। हाँ ···यह आदमी किस लिए आया है?"

"इसका काम अगर कर दें तो पाँच लाख की थैली देगा। तीन लाख पहले और बाकी बाद में ···।"

"क्या काम है, हम कर नहीं सकते क्या?"

"उसमें काली जैसे बहादुर आदमी की ज़रूरत है।"

"रशीद या यूसफ़ वह काम कर सकेंगे?"

गोविन्द सिर हिलाकर बोला, "उस काम में बहादुरी और अक्लमन्दी, दोनों ज़रूरी हैं। तीसरे चुस्ती भी कमाल की चाहिए।"

जमीला ने बात कहने को मुँह खोला तो बूढ़ा भंगड़ झूमता हुआ आता दीख पड़ा। गोबिन्द बोला, "अरी, इस गधे से क्या डरती हो। नशा कम हो गया होगा। एक दो आने के पैसे दे दो। चला जाएगा।"

जमीला ने हँसने की कोशिश करते हुए कहा, "अब तो हवा से भी डर लगता है। गोविन्द चाचा, ज़रूर कोई हमारा भेद दुश्मन को देता है।"

वह बोला, "उसकी छान बीन तो करेंगे, पहले यह बताओ। इस भीतर वाले आदमी का काम कैसे हो?"

"काम तो बताओ चाचा?" बूढ़ा भंगड़ उसके सामने खड़ा हो गया। उसने बिना देखे एक दवन्नी उसकी ओर बढ़ा दी। वह पैसे लेकर वहीं द्वार के पास बैठ कर चिलम भरने लगा। जमीला बोली, "अरे बाबा, अब क्या यहीं डेरा लगाओगे!" बूढ़े ने बात अनसुनी कर दी, बोला, "छोड़ो इस भंगड़ को, इसे तो अपनी होश नहीं। हां······एक बड़े आदमी की हत्या करनी है। यह विदेशी अपनी सरकार की तरफ़ से हमें रक़म देने को तैयार है।"

"तो क्या कोई नेता······?"

"हुश···ऐसी बात ज़रा धीरे · ।" हां तो बोलो कौन करेगा यह काम। ज़ोर दें तो रक़म और भी बढ़ सकती है।"

जमीला बोली, "अगर यूसफ़ को साथ लेकर मैं कर दूँ यह काम तो···· ।"

"बहुत जोखिम है जमीला, जबरदस्त पहरे को तोड़ कर यह काम करना होगा ।"

"तुम मुझे क्या समझते हो चाचा; लेकिन तीन चौथाई हम दोनों लेंगे ।"

"रक़म चाहे सारी ले लेना ।"

"तो बस चाचा, किसे मारना है, यह बताओ ।"

"आओ मेरे साथ ······भीतर चली आओ। अरी झिझक क्यों रही हो, मेरी गुड़िया !"

"झिझक नहीं रही चाचा, सोच रही थी कुछ; अब चलो ।"

दोनों ने भीतर जा कर द्वार बन्द कर लिये । और बूढ़ा भंगड़ जो वास्तव में अपने रणजीत ठाकुर थे, द्वार पर कान लगा कर बैठ गए ।

रणजीत ठाकुर से गोविन्द और विदेशी के बीच हुई सब बातचीत सुन कर रमेश बोला, "ये दुष्ट लोग तो यहाँ तक उतर आये पिता जी !" जानकी बोली, "वे इस से भी ज़्यादा भयानक काम कर सकते हैं। भरी भराई रेल उलट सकते हैं। उनका बस चले तो रुपये के लिए एक लाख खून एक साथ कर सकते हैं।"

बन्दना बोली, "तब, इन लोगों को बहुत जल्द क़ाबू में लाना चाहिए।"

ठाकुर जगन्नाथ बोले, "रमेश, तुम इसके लिए सोमदेव जी से सलाह करके कल ही सवेरे मेरे साथ कमिश्नर साहिब के पास चलो ।"

रणजीत ठाकुर बोले, "कल नहीं बेटा, मैं सोमदेव के पास अभी जाता हूँ। और तुम लोग इसी वक्त कमिश्नर के पास चले जाओ ।"

शीला बोली, "काका साहिब ठीक कहते हैं स्वामी, ऐसे काम कल पर नहीं डाले जाते। उन दुष्टों का कार्यक्रम कब का है ?"

"परसों रात के दो बजे, पहरा बदलने पर।"

बड़े ठाकुर बोले, "ठीक है,चलो रमेश। लक्ष्मरण तुम यहीं रहो। काका, अगर जरूरत पड़ी तो हम लोग वहीं सोमदेव जी के आ जाएंगे।"

रणजीत ठाकुर छलांग मार कर भाग लिया। शीला बोली, उन्होंने पानी भी नहीं पिया।"

रमेश बोला, "ऐसे समय पर उनकी भूख प्यास उड़ जाती है।"

जगन्नाथ ठाकुर बोले, "ऐसे बड़े बूढ़े ही तो देश के रक्षक होते हैं। आने वाली पीढ़ियाँ अपने इन्हीं पुरखों का नाम लेकर सिर ऊंचा करती हैं।'

१५

रात के दो बजे साउथ एविन्यु के एक आलीशान सरकारी बन्गले में पूर्ण शान्ति विराज रही थी। पहरेदार जैसे थक कर कहीं किसी कोने में दुबक गए थे। दक्षिणी प्राचीर पर दो मानव आकृतियाँ दिखाई दीं। एक ने दूसरे के कान में कुछ धीरे धीरे कहा। फिर दोनों घिसट कर नीचे आ गए। दोनों ने काले वस्त्र पहन रखे थे। उनमें से जो ठिगने क़द का था उसने अपने साथी का हाथ पकड़ कर दबाया। उसने उसकी ओर देखा और एक ओर को सरक गया। तब ठिगने व्यक्ति ने मुँह पर से कपड़ा उतार कर रुमाल से अपने मुँह पर का पसीना पोंछा, सिर के लम्बे और घने केशों का जूड़ा बनाया। और अपनी कटीली व तेज़ आंखें चारों तरफ़ घुमाई फिर जैसे मनोमन कहा, 'जमीला, यह बहुत बड़ा इम्तहान है तुम्हारा। सफल रही तो लाखों रुपए की दौलत हाथ आएगी। और अगर……।"

आगे सोचना उसे व्यर्थ जान पड़ा। वह बिल्ली की सी तेज़ी से एक ओर सरक गई। सामने बङ्गले के भीतर जाने वाला द्वार था, जिसके आगे आठ दस पहरेदार बड़ी होशियारी से जैसे दम साधे बैठे थे। जमीला को लगा कि वे उन्हीं लोगों की प्रतीक्षा में चुप चाप दम साधे बैठे हैं।

वह चौंक कर पीछे हटी तो किसी चीज से टकरा गई। उसने भयभीत होकर जो पीछे मुड़ कर देखा तो उसी का साथी यूसफ़ था। वह उस का हाथ पकड़ कर दबे पांव दीवार की तरफ़ भागी। बाईं ओर से चौकीदार चुपचाप जैसे किसी को तलाश करता हुआ गुज़रा तो यूसफ़ उस पर कूदने को तैयार हो गया। पर जमीला ने उसे रोक कर पीछे की ओर सरकना शुरू कर दिया।

समय तेज़ी से गुज़र रहा था। जमीला ने अपनी रिस्ट वॉच पर निगाह दौड़ाई और धीमे स्वर में बोली, "तीन बज गए। जल्दी से ऊपर के दायें कमरे में पहुंचना चाहिए। तुम नीचे छिप कर खड़े हो जाओ। मैं ऊपर जाती हूँ।"

"नहीं जमीला बी, मुझे……।"

"ज़िद करने का समय नहीं। जो कहती हूँ करो। में ऊपर जाकर संकेत करूंगी। तुम दूसरी तरफ जाकर खड़े हो जाना। मैं काम निबटा कर अभी लौटती हूँ।" और उसने लोमड़ी की तरह चञ्चल हो कर ऊपर चढ़ना आरम्भ कर दिया। यूसफ़ तमञ्चा हाथ में लेकर सतर्क खड़ा हो गया। अभी वह बीस फुट ऊपर गई होगी कि सारे बङ्गले में जैसे एकाएक तूफ़ान आ गया।

पहरेदार, सैनिक और नौकर चाकर इधर उधर छान बीन कर रहे थे। सर्च लाईट चारों तरफ़ चमक उठी। पुलिस और रक्षा दल सीटी पर सीटी बजा रहे थे। यूसफ को वहां खड़ा रहना कठिन था। इस लिए जमीला को उसकी तक़दीर के हवाले करके जी छोड़ कर भागा। किन्तु दीवार तक न पहुँच सका। किसी के बलिष्ठ हाथों में जकड़ लिया। उस ने आक्रमणकारी की ओर मुड़ कर देखा तो चौंक कर बोला, "अरे तू, बूढ़े भंगड़ ‥ ।"

आक्रमण-कारी ने उसके मुँह पर एक ज़ोरदार मुक्का जड़ते हुए गरज कर कहा, "बूढ़ा भंगड़ तो गोविन्द की बैठक में दफ़न हो चुका, में हूँ रणजीत ठाकुर, समझे मूर्ख।" बङ्गले के भीतर खतरे का विसल बज रहा था। जमीला ऊपर की गैलरी में कूद गई। सामने से सिपाहियों का दल आ रहा था। वह बाहिर के रेलिंग पर कूद गई। नीचे रणजीत ठाकुर और यूसफ गुथम गुत्था हो रहे थे। यूसफ अचानक के हमले से विवश था। उसने तमञ्चे वाला हाथ कई बार घुमाना चाहा किन्तु ठाकुर की लौहिक पकड़ से छुटकारा पाना कोई सरल न था।

जमीला ने चारों ओर से अपने आप को घिरे पाया तो मरने मारने पर उतर आई। उसने अपने साथी को मुक्त कराने के लिए ऊपर से ठाकुर पर निशाना ताक कर रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया।

गोली ठाकुर की दाईं भुजा के आर पार हो गई। उसकी पकड़ कमज़ोर होते ही यूसफ ने हाथ छुड़ा कर एक वार और ठाकुर पर करने के लिए हाथ ऊपर उठाया कि किसी ने एक लाठी उसके हाथ पर दे मारी। तमञ्चा दूर गिरते ही वह जान बचा कर भागा तो एक पुलिस सार्जण्ट ने उसका मार्ग रोक लिया। वह एक पेड़ की डाल पकड़ कर ऊपर झूल गया। दीवार के परली तरफ़ लुढ़कने को था कि रमेश और सोमदेव ने चीते की तरह उस पर छलांग लगा दी। और उसे घसीट कर नीचे ले आए।

अब तक जमीला वहीं रेलिंग पर छिपी खड़ी थी। रणजीत ठाकुर ने निकट खड़े पुलिस अफ़सर को उस पर निशाना लगाने को कहा। अफ़सर बन्दूक सीधी न कर पाया था कि पिछली दीवार पर से दो तीन फ़ायर लगातार आए। पुलिस अफ़सर वहीं ढेर हो गया। एक गोली रणजीत ठाकुर के कान के पास आ लगी। पहली गोली का विष भी शरीर में बढ़ रहा था। वह वहीं लुढ़क गए। सोमदेव और रमेश उन्हें सहारा देकर बैठ गए। पुलिस ने चप्पा चप्पा छान मारा। दीवार के निकट और कोई अपराधी न मिला। जमीला अब भी ताक ताक कर गोली चला रही थी।

रणजीत ठाकुर ने बुझी बुझी आँखों से ऊपर देखा फिर निकट मरे पड़े सारजेण्ट की बन्दूक उठाकर अपनी सारी शक्ति एकत्र करके जमीला को ताक कर घोड़ा दबा दिया।

गोली जमीला की दायीं आँख में जा घुसी। वह उलट कर नीचे धरती पर आ गिरी। रेलिंग पर से जमीला के मर कर गिरते ही सब लोग वहीं एकत्र हो गए। रणजीत ठाकुर ने सब की ओर देखा। फिर रमेश पर दृष्टि गाड़ कर कुछ क्षण अपलक देखते रहे। सभी उपस्थित लोग उन की प्रशंसा कर रहे थे। सोमदेव ने आगे बढ़कर उनके चरण छू कर रुद्ध स्वर में कहा, 'अरे वीर पुरुष तुम्हें कोटि कोटि प्रणाम, !!"

दिन के एक बजे रणजीत ठाकुर का दाह संस्कार कर दिया गया। ठाकुर जगन्नाथ और चार्ली ने इस बीच गोविन्द और उसके दल के कई आदमियों को पुलिस की सहायता से धर दबाया।

गोविन्द पर पुलिस ने बहुत सख्ती की। पर उसने कोई भेद नहीं दिया। किन्तु उसके दूसरे एक साथी ने अपने सभी गुप्त अड्डों का पता बता दिया। उन दुष्टों का जाल समूचे देश के कोने कोने में फैला हुआ था। अनेकों भयानक काण्ड उन लोगों ने रच रखे थे। जो कई एक भेद स्मिथ के अचानक मर जाने से भेद ही बने रहे, वह प्रकट हो गए। इस रहस्योद्घाटन में भी रणजीत ठाकुर की बताई हुई बातों ने बहुत सहायता दी।

स्मिथ के हौज़ काज़ी वाले पुराने अड्डे में एक तहख़ाने से सुरंग निकल कर शाहदरा तक गई थी। वास्तव में वह सुरंग सुल्तान अलाउद्दीन खिल्जी ने खुदवाई थी। उसका एक छोर लाल महल और दूसरा शाहदरा के आगे साहिबाबाद के निकट जा निकलता था।

समय पलटने पर लोग उस सुरंग को भूल से गए। वह कुख्यात लोगों के भयानक काण्डों के काम आती थी। इसकी खोज भी रणजीत ठाकुर ने एक बार स्वयं की थी।

सरकार ने उस सुरंग की पड़ताल करवाई तो आश्चर्य के मारे लोगों के मुंह फटे के फटे रह गए। करोड़ों रुपये का क़ीमती सामान और तीन सौ के ऊपर नौजवान औरतों की लाशें निकलीं जो सूख कर अकड़ गई थीं। मनों अवैध सामान की पेटियां भरी थीं।

पुलिस ने एक एक चीज़ पर अधिकार कर लिया। गुण्डों के अड्डे ढूण्ढ २ कर समाप्त किए जाने लगे। गोविन्द पर मुक़दमा चला। उसे आजीवन कारावास का दण्ड मिला। इस काण्ड में कुछ विदेशी रंगे हाथों धर लिए गए थे।

कई दिन की धर पकड़ और हो हल्ले के बाद दिल्ली का वातावरण कुछ शान्त हुआ। सभी अपने अपने काम में लग गए। ठाकुर जगन्नाथ शीला के साथ कुछ दिन के लिए जबलपुर चले गए। उन्हों ने पहले अपनी सारी ज़मीन काश्तकारों को दे दी थी। केवल पुरखों की बड़ी हवेली अपने रहने के लिए रख ली थी।

उनके श्वसुर मि० सैक्सेना कई दिन से बीमार थे। उन लोगों के वहां पहुंचने के चौथे दिन चल बसे। होशियार आदमी थे, ठाकुर की जायदाद के

प्रबन्धक रह कर लाखों रुपया काट कर रख गए थे, जो बाद में ठाकुर साहिब ने उनके एक-मात्र पुत्र को दिलवा दिया।

ठाकुर जगन्नाथ कोशल अपने जीवन के आरम्भ से अधेड़ावस्था तक पाश्चात्य संस्कृति में गोते खाते रहे। उनके हृदय का संयम और मस्तिष्क का विवेक सो चुका था किन्तु समय के कठोराघात ने उन्हें सजग कर दिया। शीला की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा उसके धर्मप्राण नाना के घर पर हुई थी। कालेज में भरती हुई तो शहर मे पिता के पास आकर रहना पड़ा।

मिस्टर मैक्सेना की पत्नी बहुत वर्ष पहले प्लेग से मर चुकी थी। उन्हों ने दूसरी शादी तो न की किन्तु स्वभाव के बहुत ही रसिक और आनन्दी जीव थे। पाप, पुण्य या धर्म कर्म के पचड़े में पड़ना उनके बस का न था।

जैसे पेट की भूख शांत करने के लिए बढ़िया भोजन करते थे वैसे ही काम की भूख को भी ठीक ढंग से शांत करने में उन्हें कोई आपत्ति न थी। प्राय: अच्छे रैस्टोरैण्ट में रोज़ाना शाम को किसी सोसाइटी गर्ल के साथ बैठ कर शराब पीते, मुर्ग़ उड़ाते खाते और घण्टों बन्द कमरे में उसके साथ रंग रलियाँ मनाते। शीला को उन्हों ने बोर्डिंग में रखा था। क्रिस्मस के दिनों में बेटी को साथ लेकर चर्च या कहीं और घूमने भी जाते किन्तु ऐसे अवसर कभी कभी आ पाते।

वस्तुत: वह अकेले घूमने में सुख का अनुभव करते थे। वकालत से ज़्यादा आमदनी उन्हें ठाकुर जसवन्त राय कोशल की जागीर से थी। वह हर वक्त अपने हाल में मस्त थे। बेटी की ओर कभी ध्यान तक न देते। सदा कहते हिन्दुस्तान की तहज़ीब बूढ़ी हो चुकी है। अगर सुख चाहती हो शीला, तो इंग्लैंड के ऐटमसफीयर (वातावरण) में रहो। वह जीना जानते हैं और हिन्दुस्तान के लोग स्वर्ग की कामना में घुल घुल कर मरना जानते हैं, आल फ़ूलिश!

किन्तु शीला पर अपने नाना नानी का बहुत प्रभाव था। पिता से छिप कर पूजा पाठ करती। भाग्य या दुर्भाग्य से जब ठाकुर जगन्नाथ कोशल उर्फ़ मिस्टर कोस से उनका विवाह हो गया तो आरम्भ में तो उसे बड़ा कष्ट हुआ। कोस का खान पान और रहन सहन बहुत भद्दा था।

और तो और वह उसे शराब तक ज़बरदस्ती पिलाने की जिद करता

था किन्तु ऐसे मौक़ों पर शीला ने जिस धैर्य और नीति से अपने आप को बचाए रक्खा वह विचित्र था। वह पति के सामने आती तो बढ़िया से बढ़िया शृङ्गार करके ; ऐम. ए. तक पढ़ी थी। अंग्रेज़ी चाल की अच्छी कापी करना जानती थी। उसका यह अद्‌भुत अभिनय तीस वर्ष तक चला। समय पाकर अपनी धार्मिक प्रवृत्ति का पोषण भी करती रहती थी।

सच तो यह था कि उसी के पुण्य ने ठाकुर वंश के यश में बट्टा नहीं लगने दिया। आगे उसके बच्चों ने ऐसी काया पलटी कि मिस्टर कोस फिर से ठाकुर जगन्नाथ कोशल बन गए। स्मिथ के अकस्मात मर जाने से उनके कुकृत्यों का भन्डा-फोड़ नहीं हो सका। नहीं तो पता नहीं गेहूं के साथ घुन की तरह यह भी पिस जाते। खैर, जान छूटी !

अब ठाकुर जगन्नाथ जीवन के चतुर्थांश में विशुद्ध धार्मिक हो गए। उनकी अर्धाङ्गिनी ने सुख का श्वास लिया। जीवन भर की विडम्बना से मुक्ति मिल गई उसे। एक दिन तुर्कमान द्वार से घोड़ा गाड़ी में दोनों पति पत्नी जा रहे थे कि बहुत से भिखारियों ने आर्त्त स्वर करते हुए उनके मन की थाह लेने के लिए कहा, "इन्हें दूर हटाइए, आज घर में ठाकुर काका की अर्धवर्षी की तैयारी करनी है ! डांट क्यों नहीं देते इन्हें......।"

जगन्नाथ पत्नी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, "जीवन के इन अन्तिम प्रहरों यदि जगा पाई हो तो फिर से भुलावे में क्यों डाल रही हो। आखिर ये भी तो मनुष्य हैं।"

"हाथ पाँव से अच्छे भले हैं! कोई काम क्यों नहीं करते ?"

वह बोले, "यही तो मैं इन्हें पूछना चाहता हूं। शायद हम इनकी कोई मदद कर सकें।"

शीला शांत हो गई। ठाकुर ने उन लोगों से कुछ देर बात चीत की और उन्हें परचा दे कर नए मैनेजर के पास भेज दिया। शीला ने पूछा, "क्या लिख दिया ?"

"एक कारखाना नया चालू हो रहा है। इन लोगों को लगा लेगा। तब तक ये सब रहने खाने की सुविधा पाए रहेंगे।"

"भिखारी तो देश में बहुत है......।"

"जितने लोगों को मैं आश्रय दे सकता हूं दूंगा। शक्ति भर मोड़ूंगा।"

पति के इस उत्तर पर शीला के मुख पर विशेष प्रकार का तेज झलक उठा।

रणजीत ठाकुर की अर्ध-बरसी की तैयारी ठाकुर घराने में धूम धाम से हो रही थी। सोमदेव जी और रमेश ने उसके लिए बहुत दौड़ धूप की। वन्दना और लक्ष्मण के ऊपर प्रचार का पूरा भार था। जानकी कुछ महिलाओं के साथ अलग दौड़ धूप कर रही थी। कसर थी तो ठाकुर जगन्नाथ और उन की पत्नी शीला के जबलपुर से लौटने की। और वे वहीं पर अनेकों कार्यों में उलझ गए थे। बहुत सी परती पड़ी भूमि को जोतने लायक बनवा कर कई एक परिवारों की जीविका का साधन जुटाने का यत्न कर रहे थे।

और भी सामाजिक कार्य उन्होंने अपने हाथ में ले लिये थे। कुछ ही दिनों में समूचे मध्य-प्रदेश में उनके नाम का सिक्का चलने लगा। छोटे फ़व्वारे के पास जबलपुर में रणजीत ठाकुर की एक भव्य प्रतिमा बन कर तैयार हुई। घण्टों उस वीर पुरुष के बलिदान की कहानी कहते ठाकुर जगन्नाथ अघाते न थे। एक दिन रणजीत ठाकुर की प्रतिमा के सामने खड़े होकर पत्नी से बोले, "यही वह महाप्राण है शीला, जिसकी प्रेरणा से हम पथभ्रष्ट लोग ठीक रास्ते पर आ गए। रमेश और सोमदेव को कार्य क्षेत्र में डट कर काम करने की शक्ति इन्होंने दी। सच पूछो तो स्मिथ और गोविन्द जैसे कुटिल दुष्टों को मात देना भी ऐसे लौह पुरुष का काम था। मुझ से नाराज़ होकर चले गए। मैं मनुष्य से प्रेत हो गया था। घोर अन्धकार में बराबर बढ़ता जा रहा था। अन्त में इन्हीं ने मेरी आंखें खोलीं, मुझे जीवन के प्रशस्त मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया।"

शीला बोली, "कुछ दिन और हमारे बीच रहते तो सचमुच हमारे जीवन में निखार आ जाता।"

"इन्हें इस देश की सन्तानों से बड़ा मोह था।" दोनो नमस्कार करके वहां से हवेली चले आये।

नई दिल्ली सफ़दरगंज वाले बंगले पर ठाकुर दम्पति लौटे तो सब ने

उनका स्वागत किया। सोमदेव जी बोले, "वाह ठाकुर साहिब, ग्राप तो जबलपुर ऐसे गए कि हम लोगों को भूल ही गए।"

शीला बोली, "जन्म-भूमि का मोह भी कोई चीज़ है न भाई।"

ठाकुर बोले, "ग्रब हमें तो सब ग्रोर से छुट्टी ही दो सोमदेव जी! रमेश ग्रौर लक्ष्मरण तुम लोगों के साथ हैं। मैं तो ठाकुर काका की ग्रर्धबरसी के वाद फिर जबलपुर लौट जाऊँगा । वहां भी कुछ काम शुरू कर दिया है।"

"चले जाइएगा। कार्य-क्षेत्र जितना भी बढ़े उतना ही ग्रच्छा!"

तीन दिन बाद रविवार के दिन रामलीला मैदान में रगाजीत ठाकुर का ग्रर्धवरसी महोत्सव चल रहा था। नेताग्रों ने भाषरग दिए। सरकार की ग्रोर से उस वीर पुरुष को तोपों से सलामी दी गई। सहस्रों की संख्या में जनता एकत्रित थी। तीसरे दिन शाम को यह उत्सव समाप्त हो गया। ठाकुर जगन्नाथ विगत ग्रात्मा को श्रद्धाञ्जलि ग्रर्पित करके ग्रपनी पत्नी के साथ जबलपुर चले गए। सोमदेव जी ने वेश्योद्धार के लिए देश भर का दौरा शुरू किया ग्रौर रमेश देहली में रहकर सोमदेव की योजना को फलीभूत करने लगा।

एक दिन प्रात:काल जानकी ग्रौर वह डाक देख रहे थे कि वन्दना ने ग्राकर एक पैकेट उनके हाथ में दिया। बोली, "यह ठाकुर काका की पेटी से निकला है। देखिए तो क्या है इस में ?"

रमेश बोला, "खोलो तो......।"

जानकी ने देवरानी के हाथ से पैकिट लेकर खोला तो दंग रह गई। वह ठाकुर काका के हाथ की लिखी एक पुस्तक की पाण्डु-लिपि थी जिसका नाम था "जलते दीप—ढलती रात !"

रमेश ने पाण्डु-लिपि लेकर जो टाइटल पलटा तो लिखा था, "समाज के उन जलते दीप-जगमगाते दीपों को—

जो प्रगाढ़ ग्रन्धकार से निरन्तर जूझ रहे हैं ग्रौर—

सूर्योदय तक जूझते ही रहेंगे।"

रमेश बोला, "वन्दना ठकुर काका कुशल कार्यकर्त्ता ग्रौर वीर पुरुष दोनों के साथ साथ बड़े विचारक भी थे। उन की यह प्रारम्भिक

पंक्तियाँ कितनी आशावादी हैं। उनकी आशाओं को परवान चढ़ाना अब हमारे ज़िम्मे है ।"

जानकी बोली' "इस ग्रन्थ को आज ही प्रेस में दे दो। इस में लिखी वाणी उनका प्रतिनिधित्व करेगी। हां वन्दना, देवर कहां है......?"

वह कुछ पढ़ रहे हैं। "वन्दना भीतर चली गई तो रमेश ने पाण्डुलिपि के पन्ने उलटने शुरु कर दिए। जानकी उनके कन्धे पर हाथ टेके पाण्डु लिपि पर निगाह गाड़े थी। रमेश बोला, "इसका एक एक अक्षर पढ़ने वालों में स्फूर्ति भर देगा। जीवन की विकृति दूर करके मनुष्य को मनुष्य की तरह जीने का बल देगा। दूषित वातावरण पर करारा तमाचा होगा।

जानकी बोली, "मुझे ही देखो न, उनकी एक दृष्टि पड़ते ही मेरा कैसा भाग्य पलट गया। कहां थी कीचड़ में धँसी हुई और आज, कहाँ कमल के फूल पर आ बैठी!" उसके साथ ही उसने पति के गले में अपनी बाहें डाल दीं। रमेश ने पाण्डु-लिपि मेज़ पर रख दी।

तभी वन्दना और लक्ष्मण (चार्ली) का ज़ोर ज़ोर से हँसने का स्वर भीतर से सुनाई दिया। रमेश ने चौंक कर देखा तो गिरधर थोड़ी दूर पर कैमरा खोले खड़ा था। मुस्करा कर बोला, "रमेश भैया, उसी पोज़में बैठे रहो, एक फोटो और लूँगा, बस।"

जानकी भीतर भाग गई। गिरधर निकट आकर बोला, "बड़ा अपराध हुआ भैया, पर इस में मैं अकेला दोषी नहीं। वह देखिये आपके छोटे भैया और वन्दना भाभी भी शामिल हैं।"

रमेश ने देखा लक्ष्मण कमरे की आधी खिड़की खोलकर हँस रहा था। जानकी ने वन्दना को खींचते हुए कहा, "देखा, तुम्हीं क्यों छिपे हो, चले आओ तो तस्वीर पूरी होजाएगी।"

रमेश भाग कर लक्ष्मण को बाहिर से खींच लाया और उसके गले में हाथ डालकर हँसता हुआ बोला," जानकी, तुम वन्दना के साथ हमारे साथ आजाओ! लो गिरधर, अधूरा चित्र तुम्हारे किस काम आता!"

अंग्रेज चले गए, राज्य छोड़ कर, किन्तु उनकी संस्कृति, भाषा, रहन-सहन और खान-पान का ढंग अभी तक प्रायः भारतवासियों के जन-जीवन में घुल-मिल रहा है।

संस्कृति कोई भी बुरी नहीं होती; सभ्यता प्रत्येक देश के अलग अलग मनोनीत सिद्धान्तों के आधार पर टिकती है। इसी के बल पर राष्ट्र और जातियाँ आगे बढ़ती हैं या पीछे हटती हैं। जिन तरीकों से अंग्रेजी सत्ता ने हमारे दिल और दिमाग पर साम, दाम, दण्ड या भेद नीति से अधिकार प्राप्त किया, वह निःसंदेह हमें इस योग्य बना गए, कि सहस्त्रों वर्षों तक हम अपने अस्तित्त्व को भूल कर दूसरों की बोली बोलें, दूसरों की तरह खाएँ, पहनें और रहें, सहें।

आचार्य चाणक्य के इस देश को इन्हीं तरीक्रों से अंग्रेज ने अपनी बुद्धिबल से पराजित किया, लताड़ा, और गुलाम बनाया। हमारे जीवन में निम्न कोटि की रसिकता घुसेड़ दी। हम प्रमादी और आराम तलब हो गए। हमारी बहू-बेटियों को घरों से खींच कर सोसाइटी गर्ल्स का रूप ग्रहण करने के लिए मजबूर कर दिया। सत्रहवीं शताब्दी में सम्राट अकबर ने भी संगठित आर्य-शक्ति को तितर-बितर करने के लिए कुछ ऐसे ही टेढ़े-मेढ़े रास्तों को अपनाया था, किन्तु उसकी इस कूटनीति को समझने वाले महाराणा जैसे मनस्वी उस समय मौजूद थे। नव रोज़ के मेले में राणा शक्तिसिंह की पुत्री और कवि पृथ्वीराज की पत्नी रानी किरणवती ने अकबर की छाती पर पाँव रख कर अपनी राजस्थानी कटार के बल पर उसकी आँखों में अंगुलियाँ दे कर दिखाया था कि देख, आर्य-हिन्दू-जाति मूर्ख नहीं, जो तेरी जूठी पत्तल चाट लें और अपने देश व धर्म को जलांजलि दे कर छोड़ दे।'

किन्तु ऐसी जागृत आत्माएँ या तो अंग्रेजों के दमन चक्र में आकर कुचली गईं या उनकी बाहरी चमक से भरमा गईं। आज भी इस समय उसका प्रभाव-स्थल दिख रहा है।

भारतीय आकाश पर छाया हुआ निविड़ अन्धकार एक न एक दिन हमारे अपने ही प्रयत्नों से निश्चित छटेगा। काली रात ढल चुकी है और उस से संघर्ष करने वाले दीप हमारी आशाओं को परवान चढ़ाने के लिए अब भी जल रहे हैं, जगमगा रहे हैं।

————